॥ श्रीः ॥

"छत्र सागर"

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

कुशालपुर एवं रावटी महाराज श्री श्री १०८
श्री अमरसिंहजी साहब

॥ श्रीश. शरणम् ॥

स्वयं लिखित जीवन चरित्त

मेरा जन्म संवत् १९६२ के वैसाख शुक्ल छटको नागा पहाड़ की पर्वत मालाओं से गिरे हुए रावटी नामक स्थान मे हुआ। मै मेरे पिता महाराज श्री सिमरथसिंहजी की दूसरी सन्तान हूं। मेरे पिता श्री के हम छ भाई एवं एक वहन, सात सन्तान हुई। वाई साहिवा हम सब भाईयों से वडी हैं। आपका विवाह मालवे प्रान्त के अन्तर्गत वडवास के राणा डूंगरसिंहजी साहिवों के साथ हुआ है। महाराज अमरसिंहजी साहिव हम सवमें वड़े हैं जो कि रावटी ठिकाने के स्वामी हैं। उनसे छोटा मैं महाराज नारायणसिंहजी, महाराज रूपसिंहजी, महाराज जैसिंहजी एवं महाराज आनन्दसिंहजी हैं।

मेरा वाल्य काल मेरे पिता श्री की गोद में व्यतीत हुआ। मेरे पिताजी का मुझपर अधिक प्रेम था यही कारण था कि छ वर्ष की छोटी सी आयु में भी मैं आपके साथ इलाह वाद की प्रदर्शनी देखने गया था।

इसके कुछ दिन वाद मैं आपके साथ राजगढ़ गया। आपके राजगढ़ जाने का उद्देश्य यह था कि राजगढ़ को हिन्दू रियासतों से अलग रखा गया था। पिताजी की इच्छा थी कि वह रियासत भी हिन्दूओं में शामिल करली जाय और इसके लिये उन्हों ने वहुत परिश्रम किया परन्तु सफलता नहीं मिली। अवतो राजगढ़ हिन्दू रियासत है।

मेरे पिताजी को अभिमान छूतक नहीं गया था। उनके विचार अपने पड़ोसियों के साथ सदा उदार रहते थे। एक समय की वात है मैं मेरे पिताजी के साथ हमारे पट्टे के गांव कुमालपुर

जो कि जैतारण तहसील में है गया। वहां हमारे एक काश्तकार की स्त्री बहुत बिमार होगई। उसकी बिमारी का हाल सुनकर मेरे पिताजी स्वयं वहां पधारे और उसे देखकर समुचित दवा दारु का प्रबन्ध कर दिया। कुछ दिन बाद वह पूर्ण रूपसे ठीक होगई।

मेरे पिताजी को शिकार का शौक नहीं था परन्तु कुसालपुर जाते समय आपने २२ नवम्बर की टीप बन्दूक मंगवाकर मुझे दीथी। कुसालपुर में जितने दिन हमारा केम्प रहा उतने दिनो में मैंने बन्दूक चलाने का अच्छा अभ्यास करलिया।

आप प्रातः काल सूर्योदय के बहुत पहले उठकर नित्य कर्म से निवृत्त हो नित्य प्रति सूर्य की उपासना एवं रामचरित मानस का पाठ किया करते थे। वे भगवान् राम एवं कृष्ण के अनन्य भक्त थे। आपकी ही कृपा का फल है कि मैं आपके बताय हुए रास्ते पर चलरहा हूं।

वहां से आतेही मुझे राजपूत स्कूल में भरती करवादिया गया। एक दिन मुझे रावटी आने का आदेश मिला। इसका कारण यह था कि उस दिन मेरे पितामह का जन्म दिवस था। सवार हुसेनखां तांगा लेकर चौपासनी आया और मैं उसके साथ रवाने हुआ। मार्ग में आते हुए मैंने एक दौड़ते हरिण को अपनी बन्दूक की गोली का शिकार बनाया।

हम लोगों में जन्मोत्सव के दिन शिकार का स्वयं मारकर लाना एक शुभ शुकुन माना जाता है। इस लिये मेरे शिकार को देख कर पितामह पिताजी एवं अन्य उपस्थित सरदार बहुत ही प्रशन्न हुए। पहले तो उन्हें यह विश्वास ही नहीं हुआ कि यह

हरिण मैने स्वयं मारा है । इसका कारण यह था कि सात वर्ष की आयु में दौड़ते हरिण पर गोली चलाना कुछ आसान नहीं समझा जाता था । अन्त में हुसेन खां की गवाई से सबको विश्वास होगया ।

इसी उम्र मे मैं मेरे पिताजी के साथ रहने से उदयपुर, प्रतापगढ़, धांग्रधा, बून्दी एवं जैससमेर के रईसों से मिल चुका था । आपको देशटन का बहुत शौक था । यही कारण था कि आपके साथ रहने से मुझे भी कई रईसों के दर्शन करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ था ।

आप क्षमा शील एवं आय व्यय के कार्य में बहुत दक्ष थे । एजीजी साहब ने आपकी कार्य दक्षता को देख कर सरकारी विभाग में उच्चपद देने की अभिलाषा प्रगट की थी परन्तु कई अन्य कारणों वश आप सरकारी नौकरी न कर सके ।

एक बार एक नौकर ने ताम्बे के पात्र में आपको कुल्फी पिलादी जिससे आपको कै होने की तासीर होगई थी । दूध मारफत नहीं होता था । दूध देखते ही आपको ऊबके होजाते थे तब यहां के डाक्टरों ने आपको कुछ २ मदिरा सेवन की सलाह दी । उस दिन से आप कुछ २ मदिरा सेवन किया करते थे ।

अकस्तात् आपको निमुनिया हो गया । डाक्टर निरंजननाथ जी आदि ने बहुत प्रयत्न किया पर रोग दिन २ बढ़ता ही गया । इतनी भयंकर बिमारी के होते हुए भी आप हाथ मुंह स्वयं उठकर धोया करते थे । "खूंटी की बूंटी नहीं होती" परमात्मा की इच्छा को कोई नहीं बदल सकता, दवा आदि तो केवल उपचार मात्र है । अन्तमें स. १९७५ के भाद्रपद कृष्ण ६ को मेरे पिताजी का अकस्मात् ४२ वर्ष की आयु में देहान्त होगया ।

मेरे पिताजी के देहान्त के कारण केवल हमारे परिवार को ही दुःख न हुआ, अपितु जिन २ महानुभावों से आपका केवल एक वार साक्षत्कार हुआ था उन्हों ने आपकी असामयिक मृत्यु को सुन कर खूब आँसू बहाये। महाराजाधिराज सर प्रतापसिंहजी इडर नरेश जब युरोपीय युद्ध से जोधपुर पधारे तब रावटी पधार कर मेरे पितामह को सान्त्वना देते हुए कहा कि फतेसिंहजी, विधी के विधान को कोई बदल नहीं सकता लेकिन जो रावटी का कोहनूर था वह तो चला गया।

मैं पहले लिख चुकाहूं कि मेरे पिताजी का मेरे ऊपर असीम प्रेम था इसलिये दस वर्ष की आयु होते हुए भी आपके द्वादशादि क्रियाओं को मैंने अपने ही हाथ से किया।

द्वादशादि क्रियाओं से निवृन्त हो मैं पुनः राजपूत स्कूल चला गया। मेरे स्कूल में भर्ती होने के एक साल बाद मेरे छाटे चाचा महाराज देवीसिंहजी साहब भी राजपूत स्कूल में भर्ती करा दिये गये। इस समय की एक घटना बहुत विचित्र हुई जो उल्लेखनीय है। जोधपुर नगर में एक नाटक कम्पनी आईथी। भाई साहब ने खेल देखने की इच्छा प्रगट की और हमें भी फौन द्वारा सूचना दी। धर्म सम्बन्धी नाटक सुनकर एवं गानों की प्रसंशा सुनकर हमें भी नाटक देखने की प्रबल इच्छा हुई। उस समय प्रिन्सिपल बेन बर्ट साहब भ्रमणार्थ बाहर गये हुए थे अतः हमें विवश हो फरगुशन साहब से अनुमती लेनी पड़ी। आपने कहा कि प्रधानाध्यापक जी से पूछ कर जा सकते हो। हमें प्रधाना-ध्यापक जी से आज्ञा मिल गई। फिर क्या था हमने भी जाने की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

ठीक समय मोटर ड्राईवर मोटर लेकर आगया। मोटर को आई देख कर रूडमलजी नामक अध्यापक ने मोटर में चलने

की इच्छा प्रगट की। उन्हें जयपुर जाना था हमने भी उन्हें स्टेशन पर छोड़ देने का वायदा कर लिया।

हम सब तैयार होकर मोटर पर सवार हुए। मोटर चली परन्तु कुछ दूर चल कर वह खराब हो गई। बहुत कोशिश की पर मोटर टस से मस न हुई। अध्यापक जी बहुत हैरान हुए और साथ ही साथ हमें भी दुःख हुआ। अन्त में अध्यापक जी की सलाह के अनुसार प्रिन्सिपल साहब से मोटर मांगी गई। हमारी आशा के अनुसार ही हमें सफलता मिली। हमने उस धार्मिक नाटक को देखा।

नाटक देख कर हम रातको वापिस अपने निवास स्थान पर पहुँच गये। प्रातः काल नित्य नियमानुसार जब हम अपनी क्लास में पहुँचे तो हमे ज्ञात हुआ कि हमें प्रिन्सिपल महोदय द्वारा Extra Dhril का आदेश दिया गया है। हम दोनो चचा भतीजे ने पूर्ण विचार कर निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो हम इस अनुचित आज्ञा का पूर्ण रूपसे विरोध करेंगे। हमने हमारे निश्चय की सूचना फौन द्वारा रावटी भेजदी वहां से भाई साहब ने हमे साहस रखने का आदेश दिया।

दादा साहब को जब यह हाल भाई साहब द्वारा ज्ञात हुआ तो उन्होंने दोनों दलों में समझौता कराने के लिये हमारे चाचा रतनसिंहजी साहब को चौपासनी भेजा। काका साहिब ने पहले हमें आज्ञा मानने के लिये कहा परन्तु हमने हमारे विचारों से न हटने की दृढ़ प्रतिज्ञा की। युरोपियन साहब बहुत बिगड़े। अन्त में हैड मास्टर साहब आये। हमने उन्हे कहा कि जब हम आज्ञा लेकर खेल देखने गये तो यह Extra Dhril कैसी। हमारे पलडे को मजबूत देखकर साहब ने अपनी आज्ञा वापिस लेली।

हमारा स्कूली जीवन खेल कूद में व्यतीत हुआ। एक एक कर हम ग्यारह लड़के वहाँ रावटी परिवार के भरती होगये। सारा समय खेल कूद में व्यतीत होता था। दादा साहिबने तो यह विचार किया होगा कि एक साथ रह कर ये सब पढ़ लिख जायेगें परन्तु फल आपकी आशा के विपरीत रहा। दादा साहब ने सबको एक ही स्कूल में भेजकर मेरे ध्यान में अच्छा नहीं किया। दादा साहब हमेशा से कुछ कम खर्चीले अवश्य थे परन्तु समय पर तो वे धन को पानी की तरह बहाते थे। माननीय मदन मोहन मालवीय जी के बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय के चन्दा लेने आने पर आपने रु० ४०००) रुपये विद्यालय के लिये दिये। ट्यूटर आदि का समुचित प्रबन्ध होते हुए भी हम विद्या प्राप्त नहीं कर सके। मैं टेनिस का खिलाड़ी बना और चचा साहब फुटबोल के अच्छे खिलाड़ी बने। स्कूली जीवन में हमें सर प्रताप सिंहजी से साक्षात्कार करने का कई बार अवसर प्राप्त हुआ। आप भी हमारे खेल आदि देख कर बहुत प्रशन्न हुए।

इन्हीं दिनों हमारे बड़े भाई साहब का विवाह सेखावाटी प्रान्त के मंडावा ठिकाणे में बड़ी धूम धाम से सम्पन्न हुआ। दौनो ओर से खूब तैयारियां की गई थी। विवाहादि कृत्यों से निवृत्त हो हम फिर स्कूल चले गये।

इन्हीं दिनों मेरा हाथ खेल २ में टूट गया। हमारे पास लादू व सादूल नामके दो आदमी रहा करते थे। लादू कार्य कुशल एवं होशियार था परन्तु सादूल कार्य्य होते हुए भी उदण्ड प्रकृति का था। इसने मेरा हाथ मसलना प्रारम्भ किया। दर्द के मारे मेरा बहुत बुरा हाल था। अन्त में जब न रहा गया तो

वैराई महाराज श्री उम्मेदसिंहजी साहब रावटी

मिस्ठर ग्रान्ड जो कि उस समय सरजन थे बुलाये गये और उन्होंने आकर पट्टा बाँध दिया।

पट्टा बंध जाने के कारण एक दुविधा होगई। मुझे शिकार का बहुत शौक था पट्टा बन्धा होने के कारण स्कूल से छुट्टी मिल ही चुकी थी परन्तु शिकार में साथ होते हुए भी गोली चलाने की अनुमती नही थी दादा साहब व भाई साहब के साथ ऊंटों पर शिकार जाते समय मैने गुटनों का सहारा लेकर बन्दूक चलाना प्रारम्भ किया जिससे यह दुविधा भी मिट गई।

छुट्टियों में रावटी में फुटबाल के मैचों की धूम रहती। कई बाहर की टीमें मैच खेलने आया करती थी। चाचा साहब को इन्ही रावटी टूर्नामेन्ट में पन्द्रह मेडल दिये गये। आप फुट बॉल के अच्छे खिलाड़ी बने।

सं. १९७६ के मार्गशीर्ष मास में हमारे नाना साहिब राजर्षि उदय प्रतापसिंह की पौत्री का विवाह मेरी मामी साहिबा ने डूंगरपुर नरेश से करना निश्चय किया। इस शुभ अवसर पर हमें सकुटम्ब आने का निमन्त्रण दिया गया मेरी माताजी एवं भाई साहिबों के साथ हमारे दादा साहब काशी पधारे। ठीक समय पर हम सब लोग विवाह में सम्मिलित होगये। विवाह बड़ी धूम धाम से सम्पन्न हुआ। महलों में नाच मुजरे के लिये हमारे पूज्य नाना साहिब का आदेश नहीं था अतः धार्मिक नाटकों आदका प्रबन्ध किय गया था। मेरी बहिन व डूंगरपुर नरेश के साथ भोजन आदि अन्य कार्यों में सम्मिलित होने का मुझे कई बार अवसर मिला।

विवाहिक कृत्यों के समाप्त होते ही हम सपरिवार कलकत्ते चले आये। विजयपुर की कोठी में हमारे रहने का समुचित प्रबन्ध

कर दिया गया था। दादा साहिब ने बहुत से घोड़े खरीदे। यहां भ्रमण आदि का अच्छा आनन्द रहता था।

वहां से लौट आनेके कुछ दिन बाद हमारे काका इन्द्रसिंहजी साहब मेरी माताजी एवं अन्य जनाने सरदारों के साथ तीर्थ यात्रा को पधारे। परमात्मा की लीला विचित्र होती है। तीर्थ यात्रा से लौट कर आते ही हमारे काका साहब का असामयिक स्वर्ग वास होगया। दादा साहिब को एक फिर तरूण पुत्र का वियोग सहन करना पड़ा। काका साहब भी योग्य एवं कर्मवीर पुरुष थे। महाराज दानसिंहजी के युवा न होने के कारण उनका क्रिया कर्म आदि मैने ही किया।

इन घटनाओं के कुछ दिन बाद मुझे व मेरे चाचा साहिब को मेयो कोलेज भेज दिया गया। वहां रहकर भी हमने फुट-बांल व टेनिस के खेल ही खेले। अन्तमें हमें वहां से बुलवा लिया गया।

इन्ही दिनों भारत सरकार ने सी. एस. आई. के मेडल द्वारा मेरे पितामह का सन्मान किया। उन दिनों वे जोधपुर राज्य के गृह सचिव थे। अतः राज्य का जवाहर खाना उनके अधीन था उसको पुनः नवीन रूप से सुसज्जित करने के लिये एक अपना निजी आदमी रखने की आवश्यक्ता प्रतीत हुई और मुझे वह कार्य सौंपा गया। जितने दिन मैं जवाहर खाने गया उतने ही दिन तक ५०) मासिक दादा साहब स्वयं देते रहे। माणकजी पारसी, मुता चान्दमलजी, नारायणदासजी कल्ला, श्यामजी काश्मेरी, चण्डावल ठाकुर साहब एवं मैं ये सब लोग वहाँ कार्य करते थे।

प्रिन्स ओफ वेल्स, प्रिन्स आरथर आदि २ जो जो महानुभाव जोधपुर पधारे उन्हे जवाहर खाना दिखाने का सौभाग्य मुझे मिला। एक बार बड़े जाम साहब पधारे। उनके पधारने की सूचना मुझे फौन द्वारा रावटी दीगई। मैं उसी समय मदरासी तांगे में बैठ कर वहां पहुँचा। रईसों के पधारते समय व जाते समय तोपों द्वारा सलामी ली जाती है। ज्यों ही मारवाड़ नरेश व जाम साहब नीचे पधारे त्योंही तोपों द्वारा सलामी ली गई। तोपों की गड़गडाहट से घोड़ा भिड़क उठा और तांगे सहित खड्डे में गिर पड़ा। परमात्मा की दया से किसी मनुष्य एवं घोड़े के चोट नहीं लगी परन्तु ताँगा चूर २ होगया। अन्त में माणकजी के ताँगे से मैं रावटी पहुँचा।

एक दिन श्री महाराणीजी भटियाणीजी साहिबाँ के लिये किसी जेवर की आवश्यकता हुई। रावराजा नरपतसिंहजी साहब ने मुझे फौन द्वारा बुलाया। मैं घोड़े पर सवार हो वहाँ पहुँचा जेवर निकाल कर रावराजाजी के सुपरद कर मैं रावटी आगया। ज्यों ही मैं रावटी पहुँचा फौन द्वारा वापिस आने की सूचना दी। मै वहाँ से फिर जवाहर खाना पहुँचा और जेवर निकाल कर दे दिया। परन्तु रावटी पहुँचते ही ज्ञात हुआ कि जिस जेवर की आवश्यकता थी वह नहीं पहुँचा है अतः मुझे फिर किले पहुँचना पड़ा। इस बार रावराजाजी साहिब ने मुझ से पूछा कि आप किस सवारी पर आये व गये हैं, तो मैंने कहा कि मैं घोड़े पर आया व गया हूं। तब आपने कहा कि इसबार आप मेरे साथ राइका बाग चलना ऐसा न हो कि फिर आना पड़े। इस बार जेवर वही निकला जिसकी आवश्यकता थी। भोजन आदि वहीं कर मैं रावटी आगया।

मनुष्य कितना ही बुद्धिमान क्यों न हो परन्तु समय की गती के अनुसार खड्डे में गिर ही जाया करता है। यह दुनियाँ दुनियाँ दारों के लिये है सिद्धान्त वादियों के लिये नहीं। मैंने अपने आपको कितना ही बचाये रखने की कोशिश की परन्तु जीवन में केवल एक भयंकर भूलके कारण खड्डे में गिर ही पड़ा। बाहर आते ही मुझे होश आया, मुझे इतनी ग्लानी हुई कि यदि पृथ्वी फट जाय तो मैं उसमें समा जाऊँ पर जो होना था वह होगया। उस दिन के बाद मैंने अपने आप को आजीवन बुरे रास्ते से बचाये रखा। इसके बाद "मातृ वत् पर दारे षु" की शिक्षा पर दृढ़ रहा और अपने आपको दाग लगने से बचाये रखते हुए चरित्र व आचरण को उज्जवल रखने का प्रयत्न करता रहा।

बड़े भाई साहब को खरगोश के पीछे कुत्ते दौड़ाने का बचपन से ही शौक था। घोड़ों पर सवार हो हम लोग कुत्तों को खरगोश के पीछे छोड़ देते थे। इस शिकार से घुड सवारी का मुझे अच्छा अभ्यास हो गया था। सूअर का शिकार भी हम लोग भाले से किया करते थे। एक दिन एक बड़े भारी सूअर के पीछे भाई साहब ने अपना घोड़ा डाल दिया। आपके पीछे हमने भी अपने २ घोड़े डाल दिये। कुछ दूर दौड़ाने के बाद अकस्मात् भाई साहब का फेवरेट नामी घोड़ा भाला लगने से घायल होकर गिर पड़ा। तब आप दूसरे घोड़े पर सवार हो सूअर के पीछे हो गये। घोड़ा कुछ साधारण चाल का था और वहाँ घास की अधिकता थी अतः भाई साहब घोड़े के साथ ही साथ एक खड्डे में गिर पड़े। कम्पाउन्ड फेक्चर होगया था, हाथ की हड्डी चूर चूर होगई थी। अन्त में मोटर द्वारा आपको मंडोवर के बाग में लाये। सरजन आदि वहाँ बुलाये गये। चोट इतनी गहरी थी कि आपके हाथ को जुड़ता देख कर मिस्त्री डी. सो. जा. को

भाले द्वारा सूअर की शिकार में:—
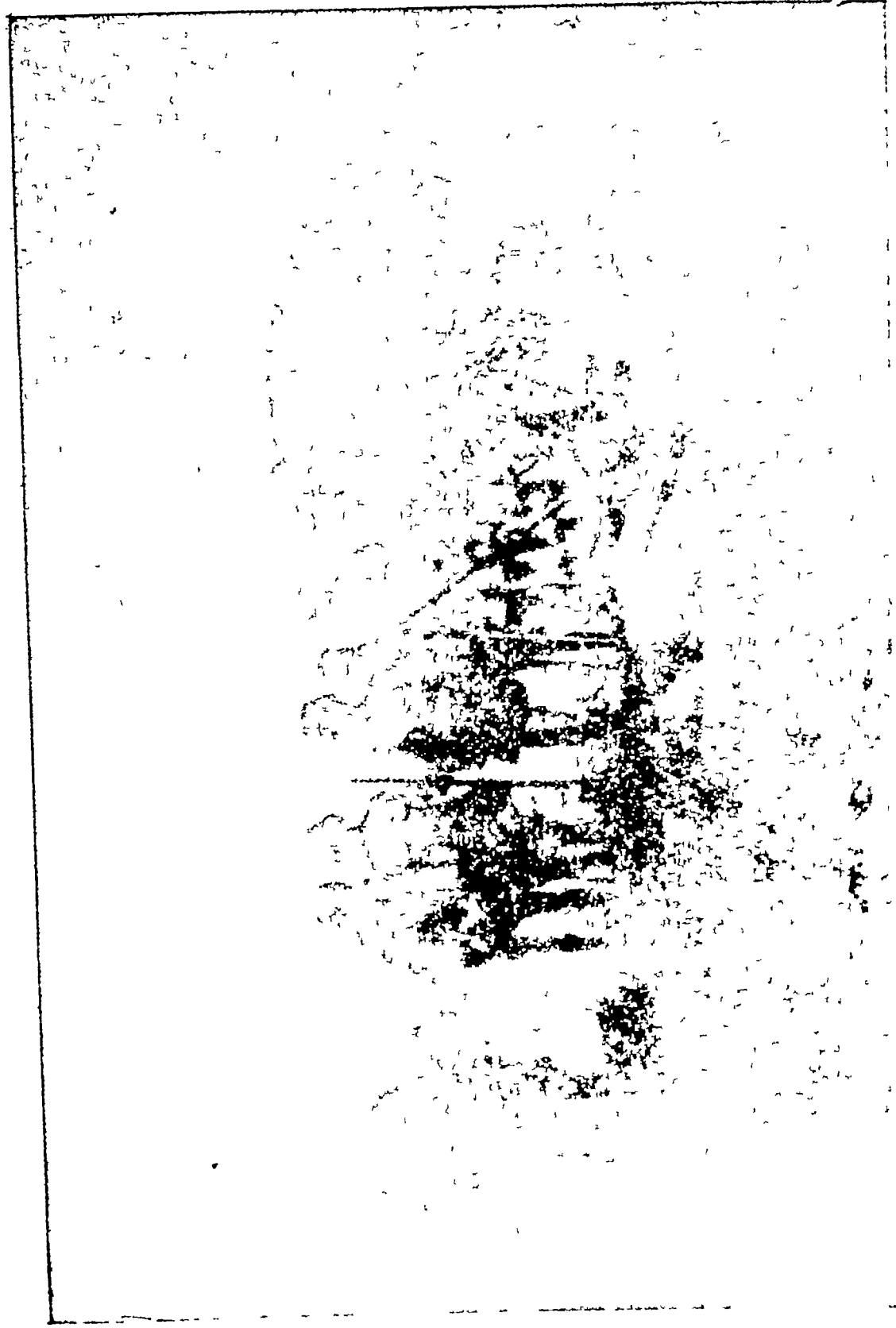
महाराज श्री उम्मेदसिंहजी सहाब बडे भाई महाराज श्री अमर सिंहजी सहाब के साथ

जो कि हमारे यहाँ रहता है गश आगई। भाई साहब ने उस समय बहुत साहस का परिचय दिया। उचित चिकित्सा के कारण कुछ ही दिनों में आपका हाथ ठीक होगया। भाई साहब का यही हाथ फुटबॉल के खेलों में तीन बार टूट चूका था परन्तु परमेश्वर की दया से प्रत्येक बार ठीक होगया था।

एक दिन भाई साहब ने अपने पास से बनाये हुए बिलेट के महल में इङ्गलिश डिनर दिया। गर्मी के दिन थे खाना खाते खाते रातके बारह बज गये। हम लोग उठने वाले थे कि भाई साहब ने फरमाया कि इस समय घोड़ा घाटी के हनुमानजी की साल के पास जो बड़ है वहां खंगजी के अलावा कोई नहीं जा सक्ता। मेरे से रहा नहीं गया, मैंने अर्ज की कि ऐसी तो कोई बात नहीं यदि आज्ञा होतो मैं अभी जाकर यह रूमाल वहाँ रख आऊँ।

मुझे भय की किंचित मात्र भी शंका नहीं थी। केवल एक घटना का अवश्य ध्यान आया। एक बार इसी रास्ते में मुझे सर्प ने डस लिया था फिर जलाने एवं डोडी दारों के मंत्रादि के उपचार से कुछ ही दिनों बाद ठीक होगया था। उपरोक्त शंका तो मेरे मन में बनी रही कि कहीं फिर सर्प से मुटभेड़ न होजाय परन्तु परमात्मा की दया से मैं निर्भय होकर वहाँ गया और रूमाल रख कर आगया।

इन्ही दिनों दादा साहिब ने राबराजा सूरतसिंहजी का विवाह जयपुर नरेश माधोसिंहजी की पडदायत (उपपत्नी) लिछमण-रायजी की पुत्री के साथ किया। हम सब लोग जयपुर गये। रामबाग में हम लोगों को ठहराया गया। विवाह कृत्य के समाप्त होने पर दरबार साहब को नजरें आदि की गई। यहाँ

टेनिस के खेलों का अच्छा खासा जमघट रहा हमने कई खेल जीते।

वहाँ से लौट कर आते ही मैंने प्रताप हाई स्कूल के हिन्दी प्रधानाध्यापक पं. मूलचन्द्रजी श्रीमाली को जो कि हमारी दादी साहिबा जैसलमेरी जी साहिबा के साथ जैसलमेर से जोधपुर आये थे और जो हमारे वेदिया थे उनको अपना गुरु बनाया। उसके बाद आपके अमूल्य उपदेशों को गृहण कर उनपर चलने की दृढ़ प्रतिज्ञा की। इन्ही दिनों रामसीता पर मेरी श्रद्धा हुई और रणछोड़दासजा पुष्करणा के कहने से रामायण का अध्ययन प्रारम्भ किया। इसके बाद रामायण को साक्षी मान कर मैंने पाँच वर्ष के लिये मदिरा पीने की सौगन्ध खाई।

दादा साहिब ने आबू में रु० ८००००) अस्सी हजार की लागत से एक भवन बनवाया था। आप गर्मी में वहाँ जाया करते थे। मैं भी दादा साहिब के साथ आबू गया। बड़े अलवर दरबार साहब भी आबू पधारे थे। उनका कलब में बहुत प्रभाव शाली भाषण हुआ था। भाई साहब व दादा साहिब ने उन दिनों मेरी सगाई सिरोही प्रान्त के सेलवाडे ठिकाणे में कर दी।

यहाँ प्रत्येक रईस व सरदारों की और से एक २ एट होम दिया जाता था। उन दिनों भरतपुर का एट होम अच्छा रहा। अलवर भरतपुर में पोलो भी हुआ जिसमें भरतपुर की जीत हुई। मुझे भी टेनिस के खेलका अच्छा अवसर मिला।

बड़े भाई साहब आबू कई बार आ जा चुके थे इसलिये आपकी जान पहचान कई रईसों से हो चुकी थी। एक दिन आपने अलवर दरबार से कल्ब में मिलने की इच्छा की और

मुझे भी साथ चलने को कहा मैंने पहले तो चलने से इन्कार किया इसका कारण यह था कि, मैंने अलवर नरेश के बारे में यह सुन रखा था कि आप का स्वभाव कुछ तेज है अतः मैंने साथ चलने से इन्कार कर दिया। जब भाई साहब ने अपने साथ चलने के लिये अत्यन्त आग्रह किया तो मैंने हामी भरली।

हम लौग जाकर बैठेही थे कि आप रेकिट खेल कर पधारे। जयपुर वाले अमरसिंहजी भी साथ थे। सब के यथा स्थान बैंठ जाने पर आपने बैरे को विसकी देने का संकेत किया। यह देख कर तो मेरे हृदय में शंका उत्पन्न होगई। मैं ऊपर लिख चुका हूं कि मैंने रामायण की सौगन्ध खाकर पांच वर्ष के लिये मदिरा न पीने की प्रतिज्ञा कर ली थी। बैरे के मेरे पास आने पर मैंने पेग लेने से इन्कार कर दिया। आपसे यह बात छिपी न रह सकी। आपने बैरे को एक पेग फिर बनाने के लिये कहा। मैंने धीरे से भाई साहब को अपनी मनोव्यथा बताई जो कि मेरे पास बैठे थे। आपने यह कह कर कि लेलेना बात टाल दी। बेरे के पेग बना कर लाते ही आपने मुझे अपने पास बुलाया। मैं संकोच वस आपके पैरों के पास जा कर बैठ गया। उसी समय आपने हाथ पकड़ कर मुझे अपने पास बिठाया और पीने का अग्रह किया। मैंने विनय के साथ इसके लिये क्षमा माँगी। आपके कारण पूछने पर मैंने रामायण वाली बात कह दी। इसपर आपने फरमाया कि मैं भी तो रामायण का उपापक हूं, इस सम्बन्ध से तो तुम हमारे भाई हुए। जब मै पीता हूं तो तुम क्यों नहीं पीते। इस बार मेरे मुँह से निकल गया कि यह खराब चीज है और महर्षियों ने इसका सेवन करने का निषेध किया है। तब आपने क्रोध में आकर कहा, तो क्या मैं

खराब काम कर रहा हूं। मैं घबराया नहीं अपितु तुरन्त प्रत्युत्तर दिया कि "समरथ को नहीं दोष गुँसाई"। इतना सुनते ही आप खिल खिला कर हँस पड़े और मुझे गले से लगा लिया। उसके बाद आपने फिर मुझे पीने के लिये कहा। इस बार मैंने पीने के लिये ज्योंही हाथ बढ़ाया आपने हाथ खींच लिया। उस दिन के बाद आपने कई बार मुझे भोजन आदि के लिये निमन्त्रण दिया। मुझे तो अलवर नरेश का स्वभाव व गुण ग्राहकता पसन्द आई और आपके बारे में जो शंका थी वह दूर होगई।

आबू से लौट कर आते ही भाई साहब सरदार कलब के मेम्बर बन गये। मैं भी आपके साथ टेनिस खेलने जाता था। यहाँ अकसर डी. एल. ड्रेक ब्रुकमेन साहब मेरे पॉटनर रहते। इस सिल सिले में हमने रेल्वे कलब के साथ खेलते हुए कई खेल जीते।

एक दिन मैं और महाराज नारायणसिंहजी घूमने निकले। संध्या का धुंधला पन तो रावटी में ही होगया था। घूमते २ हम कुछ दूर निकल गये। अकस्मात हमें कुछ दूर गाय के डकराने की आवाज सुनाई दी। जिस ओर से शब्द आया था हम उसी ओर बढ़ गये। कुछ दूर जाने पर हमने देखा कि एक वृक्ष के नीचे एक मनुष्य खड़ा है और पास ही में एक नव जात गायका बच्चा पड़ा है। वह मनुष्य उस गाय को अपने घर लेजाना चहता था परन्तु गाय टस से मस नहीं होती थी। हमें पास आया देख कर उस ब्राह्मण ने हमसे सहायता चाही। हमने उसे सहायता पहुँचाना अपना कर्तव्य समझ उस गाय के बच्चे को अपने हाथों पर ले लिया और उस ब्राह्मण को कहा कि आप अब इस गाय को लेकर पीछे २ आजाओ। गाय भी बच्चे के

पीछे २ बिना किसी हिचकिचाहट के हमारे पीछे चलने लगी। अन्त में हम लोग उसे लेकर रावटी पहुँच गये और वहां अपने आदमी भेजकर उस ब्राह्मण को घर पहुँचाने का प्रबन्ध कर दिया।

दादा साहब को बटेर पत्ती के शिकार का बहुत शौक था। इस पर बन्दूक चलाने की अच्छी परीक्षा होती थी। मुझे भी बन्दूक से बटेर का शिकार करने का अच्छा अभ्यास होगया था। अतः दादा साहब ने १२ नम्बर की बन्दूक मंगवा कर मुझे दी।

संवत् १९८२ के कार्तिक मास में जोधपुर नरेश अपनी विश्व विख्यात पोलो टीम के साथ विजयी होकर इङ्गलेन्ड से पधारे तो हम आपकी अगवानी के लिए दादा साहिब के साथ बोम्बे गये। वहां मारवाड़ी जनता ने दिल खोलकर प्रजा प्रिय नरेश का स्वागत किया।

संवत् १९८२ के पौष मास में मेरे विवाह की तैयारियाँ प्रारम्भ हुई। श्री महाराणी जी साहिबा ने अपना बन्दोला भिजवाया। भाई साहब ने भी अपनी ओर से एक अच्छा भोज दिया। वारात आदि का सब प्रबन्ध भाई साहब के नेत्रत्व में हुआ। दादा साहब राज्य कीय कार्य वश सम्मिलित न हो सके। रावटी परिवार के सब मरदाने सरदार साथ थे। सेलवाड़े में भी अच्छा प्रबन्ध किया गया था बड़े नीम्बाच साहिबा मोहब्बतसिंहजी ने विवाह की सब रस्में पूरी की।

"पूर्व दत्तेषु या भार्या" के अनुसार स्त्री मनुष्य को पूर्व संस्कारों से मिला करती है। परमात्मा की कृपा कहिये या मेरा सौभाग्य की मुझे पत्नी मेरे मनोकूल मिली। मेरी गृहस्थी जो आज इतनी सुखी दिखाई देती है उसमें मेरी पत्नी के ही हाथ का

श्रेय है। गृहस्थी रूपी गाड़ी तभी ठीक तरह से चल सकेगी जब कि उस गाड़ी के जुतने वाले बैल बराबर हों।

इन्ही दिनों किशन गढ़ महाराज यग्य नारायणसिंहजी का राज्य तिलकोत्सव हुआ। जोधपुर राज्य की ओर से मेरे दादा साहब को जाने के लिये कहा। मै भी दादा साहब के साथ गया (मैं मेरी जीवनी में संवत आदि ठीक २ नहीं दे सका हूं इसका कारण यह है कि ठिकाने में वहियां आदि समुचित रूप से रख्खी हुई नहीं है) राज्य तिलक के उपरान्त नजरें आदि हुई। दरबार साहब से हमारा पहले का परिचय था अतः नजर आदि के बाद हम वहीं बैठ गये। उसके बाद अन्य सरदारों एवं प्रजा-जनों की नजरें हुई। एक गाँधी ने अत्तर की शीशी नजर की तो दरबार साहब ने वह मुझे इनायत करदी। एकने माजम नजर की तो हँस कर मुझे बगसादी। उसी समय मेरी दृष्टि एक ओर गई और तत्काल मुझे हँसी आगई। दादा साहब ने अलवर दरबार की ओर संकेत कर कहा कि आप विराजे हैं हँसो मत। मुझ से रहा नहीं गया और मैने एक मनुष्य की ओर संकेत किया। मेरे हँसने का कारण यह था कि वह आदमी ज्यों ही नजर के लिये उठा उसका पाजामा खुल गया और वह उसी समय अपने स्थान पर बैठ गया। यह देख कर दादा साहब भी अपनी हँसी को न रोक सके।

उन्ही दिनों माताजी मेरी पत्नी को लेकर काशी पधार गये थे। क्युंकि मेरे मामी साहिबाँ वहीं विराजा करते थे। मेरी माताजी एवं मेरी पत्नी में असीम प्रेम था। उनके कुछ दिन वहां रहने के बाद मैं जाकर माताजी को जोधपुर ले आया।

दादा साहब एवं माताजी की मुझ पर असीम कृपा थी। इसका कारण यह था कि मैं फालतू खर्च के विरूद्ध था। मुझे कुत्ते, मुर्गे व लालो आदि पालने का दुर्व्यसन न था। नाच मुजरे आदि से भी मुझे अत्यन्त गृणा थी। फाल्गुन के महीनों मे गाये जाने वाले गन्दे गीत मुझे कतई पसन्द न थे। मेरे उपरोक्त विचारों के कारण रावटी में मेरे कई शत्रू बनगये थे। परन्तु "जाको राखे साइयाँ मारन सके न कोय" के कहे अनुसार वे मेरा कुछ भी बुरा न कर सके।

सं. १९८४ के वैसाख शुक्ल १३ को मेरी पुत्री दौलत कँवर का जन्म हुआ। मेरे सासुजी के कोई अन्य सन्तान न होने के कारण चवदह वर्ष तक दौलत कँवर अपने ननिहाल में ही रह कर बड़ी हुई।

भाभी साहिबा एवं मेरी पत्नी में असीम प्रेम था। बाहर के लोग जब कभी आते तो उन्हे यही भान होता था कि ये दोनों सगी बहिने हैं। दादा साहिब ने बड़े भाई साहब की जात ओसियां बोली थी। अतः आप सब सरदारों को लेकर पधारे तब रावटी का चार्ज मुझे देकर पधारे। ओसियाँ जाते समय भाभी साहिबा ने मेरी पत्नी को भी साथ चलने के लिये कहा और अन्त में आप लेकर ही गई।

इसके थोड़े दिन बाद ही भाभी साहिबा को निमुनिया हो-गया। आपकी बिमारी का हाल सुनकर मंडावे ठाकुर साहब आपसे मिलने पधारे। आप भाई बहिनों में अत्यन्त स्नेह था। इलाज आदि बहुत कराने पर भी कुछ फल न हुआ। अन्त में संवत १९८४ की चैत्र बदि अमावस्या को आप का देहान्त होगया। आपके एक पुत्री व एक पुत्र दोही सन्ताने हुई। राज

कुमार गुमानसिंहजी की अवस्था बहुत छोटी होने के कारण द्वादशादि क्रियाओं का कार्य मैंने ही किया।

भाभी साहिबा के देहान्त के कुछ समय बाद ही सं. १९८५ के वैसाख मास की ३ को मेरी माताजी का भी निमुनिये के कारण देहान्त होगया। ये दोनों जैसे बड़े घर के थे वैसे ही इन्होंने दया, धर्म आदि का पालन किया। मेरी माताजी का तो दादा साहब अत्यन्त आदर करते थे इसका कारण यह था कि आप के विवाह के बाद रावटी पधारते ही रावटी पर लक्ष्मी की अटूट कृपा होगई थी। मेरी माताजी ४००००) हजार नकद व हीरों की टोपी, सरेपच आदि कितनी ही अमूल्य वस्तुएँ लेकर पधारे थे। यही कारण था कि दादा साहब आप पर अत्यन्त स्नेह रखते थे। परन्तु खेद के साथ लिखना पड़ता है कि इतना प्रेम रखते हुए भी दादा साहब ने इन दोनों के लिये कोई स्मारक नहीं बनाया जैसा की हम लोगों में छत्री आदि बनाने का रिवाज है। माताजी की द्वादशादि क्रियाए भी मैंने ही की।

मेरी मात: जी के देहान्त होजाने के कारण मेरे सिर पर गृहस्थी का भार पड़ गया। मुझे अब सोच समझ कर कार्य करना पड़ता था। मैं ऊपर लिख आया हूं कि दादा साहब का मेरे ऊपर विश्वास था। एक बार आप पाँच ईंटे चान्दी की मेरे पास रखकर मंडोवर पधारे और मुझे कहा कि जब तक मेरा रूक्का नहीं आवे तब तक किसी को मत देना। दुपहर को करीबन चार बजे छगनमलजी कायस्थ आये और कहा कि दो ईंटे मुझे अभी देदो क्युंकि स्टेशन वाली सराय की मरम्मत के लिये रकम की जरूरत है। मैंने रुक्के के लिये पूछा तो उन्हों ने कहा कि मुझे रुक्का तुक्का तो नहीं दिया है। मैंने कुछ

समय विचार करने के बाद उन्हें दो ईंटे देदी। सायं काल को जब मैं घोड़े पर चढ़ कर गया तो आपने ईंटों के बारे में पूछा। मैने अर्ज की कि दो ईंटे तो छगनमलजी लेगये। तब आपने कहा कि तुमने ठीक किया। एसे समय रुक्का नहीं लिखा जाता।

वहां से लौटते समय कुछ देर होगई थी। मैं घोड़ा घाटी से कुछ दूर पर आया तो मुझे अन्धेरे में किसी बच्चे के रोने की आवाज आई। मैने चौकन्ने होकर उस आवाज को सुना और अन्त में जिधर से आवाज आई थी उस ओर चल पड़ा। कुछ देर इधर उधर ढूढ़ने पर मुझे एक पाँच वर्ष की लड़की दिखाई दी जो कि बरगद के वृक्ष के नीचे खड़ी २ भय के कारण रो रही थी। मैने उससे पता ठिकाना पूछा परन्तु वह बच्ची कुछ जबाब न देसकी। मैने उसे अपने साथ लिया और रावटी ले आया। रावटी लाने के बाद उस लड़की को कुछ धीरज आया और उसने अपना पता ठिकाना बताया। वह सूर सागर में रहने वाले किसी मुसलमान की लड़की थी अन्त में आदमी भेज कर उसे अपने घर पहुँचा दिया।

इन्हीं दिनों महाराज जोरावर सिंहजी साहब के रावराजा अजीत सिंहजी ने अपने बड़े लड़के रामसिंहजी का विवाह मंडावा के रावराजा की लड़की से करना निश्चय किया। इधर महाराज शेरसिंहजी साहब ने अपनी लड़की की शादी चौकड़ी ठिकाने में करनी निश्चय की। संयोग की बात यह हुई कि विवाह का शुभ लग्न एक ही दिन निश्चित हुआ। पहले तो मेरे दादा साहब आदि ने विवाह में चलने का कह दिया, इसलिये वहां सब प्रबन्ध होगया। मंडावा व नवलगढ़ ठाकुर साहब ने भी विवाह में आने के लिये वहाँ के रावराजाजी को कह दिया। यहाँ शेरसिंहजी के विवाह की

तैयारियाँ देखकर सबने मंडावे जाने से इन्कार कर दिया। तब रावराजा जी मेरे पास आये और बहुत उदास हुए। आपने कहा कि यदि आप भी नहीं चलेंगे तो बहुत बुरा लगेगा। उनके उदास चेहरे को देख कर मैंने हामी भरली। अन्त में मैं बरात के साथ मंडावे गया। वहां मंडावे ठाकुर साहब व नवलगढ़ ठाकुर साहब दोनों पधारे थे। मेरी भतीजी को भी साथ लाये थे जो कि अपनी माता के देहान्त के बाद वहीं रह रही थी। मेरी भतीजी के वहां आने की सूचना मुझे पहले ही मिल चूकी थी अतः उसके लिये खिलौने व मिठाई मैंने जोधपुर से ही लेली थी। मिलने पर मैंने उसे देदिये। वहां मैंने एक मजाक यह की कि रावराजा अजीतसिंहजी के कामदार के रुपयों की पोटली जेब से निकाल ली। जब उसे मालूम हुआ कि पोटली गायब है तब तो वह बहुत उदास हुआ दो घंटे तक बड़ा मजाक रहा। आखिर यह तय हुआ कि सब के बिस्तेरे देखे जाँय। मेरे आदमी लादू ने कहा कि रुपये आजयेंगे, तब जाकर उन्हें शान्ति मिली। रुपये मिलने पर कामदार श्रीमाली वंशीलाल बहुत खुश हुआ।

उसी साल सरदी में हम लोग रैराई गये। दादा साहब जब कभी पट्टे के गाँव में शिकार आदि के लिये पधारते तो वहाँ पूरे तीस तीस दिन के लिये विराज जाते। एक दिन मेरे मन में रावटी आने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई। खाना भी ठीक ढंग से नहीं खाया गया। रात करवटें बदलते कटी। प्रातः काल जो आंख लगी तो कुछ देर से उठा गया। दादा साहब व भाई साहब शिकार को जा चूके थे। जाते समय भाई साहब के आदमी शिवनाथ ने उठाया तो मैंने तबियत खराब का बहाना कर दिया। सब लोगों के चले जाने पर मैं उठा

और हाथ मुँह धोकर कुछ जलपान कर बाहर निकला। मुझे घोड़े पर जाते देख छगनिया बावरी जोकि मेरे साथ रहने के कारण बहुत हौशियार होगया था मेरे पीछे २ चला। मैने उसे कहा कि मैं रावटी जा रहा हूं, शिकार को नहीं। तूं जाकर शिवनाथ को कहदेना।

बैराई रावटी से चवदह कोस पर है। आज कल तो मोटर में जाते हैं तब भी थक जाया करते हैं। उस समय की तो बात ही दूसरी थी। मैं घोड़े की सवारी का शौकीन था अतः सायं काल को रावटी पहुँच गया। रावटी पहुंच कर घोड़े को गुल फिटकरी आदि देने के लिये कहकर मैं उपर चला गया। रावराजा भीमसिंहजी उस समय टहल रहे थे मैने उनसे कहा कि आओ बातें करें तो उन्होने कहा कि कल करेंगे। मैने उनसे कहा कि कलतो मैं बैराई चला जाऊँगा। वे हँसे और कहा कि कल तो जा चूके।

दूसरे रोज प्रातः काल रवाने होकर मैं बैराई पहुँच गया। दादा साहब ने मुझे आया हुआ देख कर कहा कि यदि कह कर जाते तो कुछ काम होजाता। भाई साहब आदि ने बहुत आश्चर्य किया पर मैने तो लज्जा के कारण एक शब्द भी मुँह से न निकाला।

मुझे बचपन से ही कसरत का बहुत शौक था। मैं प्रात काल नित्य प्रति ८० डण्ड व २०० मोगरी फेरा करता था। उसके बाद डम्बल करता। उसके बाद घोड़े पर घूमने जाता। घूम कर आकर बादाम व दूध पीता था। सायं काल को २ व ३ घोड़े दौड़ाता, यदि सायंकाल टेनिस का खेल होता तो घोड़ा भी सुबह दौड़ाता था।

मैं ऊपर लिख आया हूं कि बचपन से ही मेरी रामसीता के प्रति भक्ति थी। इसी कारण अब भी मैं रामनवमी की पूजन किया करता हूं। पं. मूलचन्द्रजी के देहान्त के बाद वेदिया श्यामलालजी जो कि पंडितजी के भतीजे हैं पूजन कराया करते हैं। श्रावण के सोमवार एवं उठते बैठते नवरात्री के उपवास भी करता हूं। निर्जला एकादशी का व्रत भी रखता हूं। कहनेका तात्पर्य यह है कि मेरी सब देवताओं पर श्रद्धा है। "सर्व देव नमस्कारँ, केशवं प्रति केशवं" के वचनों का मानने वाला हूं। दशहरे के दिन मैं किसी भी निमन्त्रण आदि में सम्मिलत नहीं होता हूं।

संवत् १९८७ के माघ महीने में दादा साहब ने गोठन में केम्प किया। उस समय आसोप बाई साहब की शादी थी। आसोप राजा साहब की ओर से दादा साहब को निमन्त्रण मिला। आप वहां पधारे। वहाँ आपको पेचस की शिकायत हो गई। वहां से गोठन आते आते तबियत बहुत खराब होगई। गोठन से पादरी साहब को आने के लिये तार भेजा जो कि मिशन अस्पताल में काम करते थे परन्तु उन्हों ने तार द्वारा सूचना दी कि इस समय मैं आने में असमर्थ हूं। दादा साहब को उन दिनों उसी पर विश्वास था। आपको किसी पर विश्वास नहीं होता था। भोजन करते समय भी आप किसी न किसी का साथ लेकर बैठते थे। इसलिये विश्वास पात्र डाक्टर से ही आप दवा लिया करते थे। अन्त में मुझे कहा कि जिस किसी तरह हो पादरी साहब को लेकर आओ। इसके साथ ही साथ महाराज शेरसिंहजी साहब को एवं राजकुमार रतनसिंहजी साहब को भी साथ लाने के लिये कहा। मैं स्टेशन से सीधा महाराज शेरसिंहजी साहब के बंगले पहुँचा और दादा साहब की

तबियत बाबत सूचना दी। आपने साथ चलने में असमर्थता प्रगट की। तब वहां से राज कुमार रतनसिंहजी साहब के बंगले गया और उन्हें भी बिमारी की सूचना दी। पहले तो आपने कहा कि यहां बहुत जरूरी काम है परन्तु अन्त में मेरे कहने से आप चलने के लिये राजी होगये। वहां से मैं साहब के बंगले गया। साहब बाहर गये हुए थे। मेम साहिबा ने मेरी खातरी की। मेम साहिबा से मेरी जान पहिचान थी। इसलिये बात चीत से समय कटगया। रातको नव ९ बजे साहब बाहर से आये। मैने उनसे दादा साहब की बिमारी की हालत कही साहब ने मेरी बात सुनकर कहा कि भाई, मै तो चलने में असमर्थ हूं क्योंकि यदि मैं वहाँ चलता हूं तो फिर यहाँ का काम खराब होजाता है। मैने वहां बुद्धीमानी से काम लिया। मैने कहा कि आपको यह तो ज्ञात ही है कि दादा साहब किसी दूसरे की दवा नहीं लेते हैं, इसके साथ ही साथ मैं आपसे वादा करता हूं कि कल प्रातः काल आपको जोधपुर पहुँचा दूंगा। इतने पर भी आप नहीं चलेंगे तो मेरा अपमान हो जायगा। अन्त में साहब चलने के लिये राजी होगये।

साहब को लेकर मैं गोठन पहुँचा। दादा साहब व भाई साहब बहुत प्रसन्न हुए। साहब ने एक इंजेकशन दिया, जिससे दादा साहब को आराम होगया। कुछ दिन वहाँ रहने के बाद हम लोग जोधपुर आगये।

संवत् १९८७ के कार्तिक बदि १२ को मेरी दूसरी पुत्री प्रेम कँवर का जन्म हुआ। इसी साल मैंने गरमी में सपरिवार आबू यात्रा की। वहाँ फिर टेनिस का खेल जमा। डी. एम. फील्ड जो उन दिनों उदयपुर के रेजीडेन्ट थे, उनसे टेनिस का

का खेल हुआ। खेल २ में साहब घबरागये एवं थकने का बहाना कर खेल बन्द कर दिया।

दूसरे रोज लोगों ने मुझे कमेटी में इस बाबात प्रश्न उठाने के लिये उकसाया परन्तु मैने शान्ति धारण की। उस दिन साहब जीत गये। ये भी अच्छे खिलाड़ी थे। साहब ने मेरे रिश्तेदारों से मेरे खेल की प्रसंशा की एवं कहा कि कोई वीक पोइन्ट नहीं हैं बहुत अच्छा खेलते हैं। उस दिन से साहब के व मेरे पत्र व्यवहार होने लगा और जब तक आप जोधपुर के प्रधान मंत्री रहे तब तक वैसा ही प्रेम बनाये रहे।

आबू से मेरा सुसराल ४ कौस दूर है। अतः जब मेरे सुसराल वालों को मेरी सपरिवार आबू यात्रा का समाचार मिला तो ठाकुर साहब स्वयं आकर अपनी बहिन को लेगये।

मैने दिल में एक खेल फिर खेलने का विचार किया। अतः मिक्स अमरिकिन टूर्ना मेन्ट में भरती होगया। इस बार मेरे खेल को लोग जान गये थे अतः पार्टनर मिलने में सुविधा होगई। बीकानेर का डिक्सन मेरे से हार चूका था अतः उसकी मेम मेरी पार्टनर होगई। अबतो हनारा खेल चमका। हमने फील्ड साहब को भी हराया। उस जीत के जीत के जोश में उस भली मेम ने खेलना प्रारम्भ किया तो खेलती ही गई। दूसरे रोज के लिये तीन खेल बाकी छोड़ दिये। मैने मेम साहब को पहिले ही कह दिया था कि आप ज्यादा न खेलें नहीं तो कल थक जायगी। ठीक वही हुआ। दूसरे रोज जो मैं मैदान में गया तो मेम साहब नदारद थी। इबराहीम साहब जो कि उन दिनों काठिया वाड़ के रेजीडेन्ट थे उन्हों ने कहा कि तुम अवश्य जीतते परन्तु तुम्हारा भीड़ बीमार होगया। इसलिये

इस केच होगये। जब मैंने यह सुना चुप होकर बैठ गया। इन साहब ने मेरे दादा साहब को मुझे अपने पास रखने के लिये कहा परन्तु मेरे भाग्य के कारण दादा साहब ने मना कर दिया।

मैंने एक टेनिस का खेल खेलने का फिर विचार किया। मेरे पे हेएडी कप कम था इसलिये मुझे लेडी पार्टनर मिल जाया करती थी। मेरे भरती होते ही फील्ड साहब ने बड़े साहब ए. जी जी मि. होलेन्ड के गेस्ट ग्लासको की मेम को मेरा पार्टनर बनादिया। पहले खेल में मैं मेम साहब की तबियत देख चूका था इसलिये जीत में हमें कोई शंका न रही। कई खेल जीतते २ सेमी फाइनल में आगये। सेमी फाइनल के दिन किसी का एट होम था। पहले मैदान में खेल रही था बड़े साहब को हमारा खेल जँचा और उन्हों ने उनको हटा कर हमें पहले नं० के मैदान में बुलाया मेम साहिबा जीत के जोश में रवाने हुई। मैंने मेम साहिबा को धीरे से कहा कि एक नम्बर का मैदान फिसल ने वाला है ध्यान रखना। उन्होंने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। खेल प्रारम्भ हुआ। पहले तो कुछ खेल चमका परन्तु कुछ देर बाद मेरा पैर फिसला और घुटना टिक गया। थोड़ी देर बाद इधर मैं गेन्द पर लपका उधर मेम साहिबा लपकी दोने के रेकिट लड़ गये। आप बहुत नाराज हुई। नतीजा यह हुआ कि हम हार गये। इस खेल के बाद मैं साहब व मेम लोगों से पूरा घबरागया और जितने दिन वहाँ रहा किसी भी कलब में टेनिस खेलने नहीं गया।

अलवर दरबार आपके जन्मोत्सव की खुशी धूम धाम से करते थे। आप सब को निमन्त्रण देते। इसबार हमें भी निमन्त्रण मिला, एजी जी साहब आदि कई प्रतिष्ठित आदमी आये थे।

उस भोज के समय आपने एक कविता की पुस्तक मुझे दी जिसमें की कुछ कवितायें इस पुस्तक में दी गई है।

सन् १६३१ में अलवर नरेश ने हमारे दादा साहब को अलवर आने का निमन्त्रण दिया। मैं भी आपके साथ वहाँ गया। वहाँ शिकार आदि का अच्छा प्रबन्ध रहा शिकार जाते समय पहले घोड़ों की फिर मोटरों की एवं फिर हाथियों की कतारें रहती थी। वहाँ एक सूअर के शिकार के लिये मेरे वहाँ के सरदार भावानी सिंहजी से इस बात पर कि इसके भाला पहले मैने लगाया है कुछ बोल चाल हुई। अन्त में अलवर नरेश ने फैसला मेरे हक़ में दिया। यहाँ मैने शेर भी देखा परन्तु कुछ दूर होने से बन्दूक न चला सका।

एक दिन आपने काले हरिण का शिकार कर लाने के लिये कहा। हमारे रवाना होते समय ही तार द्वारा बीकानेर के द्वितीय राजकुमार बिजैसिंहजी के देहान्त होजाने का समाचार मिला। यह महाराज कुमार टेनिस खेल में मेरे पार्टनर रह चुके थे इसलिये शोक वश मैंने जाने की अनिच्छा प्रगट की, परन्तु अन्तमें अलवर नरेश के कहने से चलागया।

इसी साल बाईजी लाल साहिबा किशोर कुँवर साहिबा का विवाह जयपुर नरेश से हुआ। किसी कारण से ठीक समय पर हमें टिकट (पास) प्राप्त न होस के अन्त में मैं स्वयं महाराज कुवाँर सिंहजी के पास से जो कि उस समय दीवान थे पास ले आया।

पास लेकर हम किले गये. बारात में कई रईस पधारे थे। किलेकी सजावट भी देखने योग्य थी। सुप्रबन्ध की सब महमा-

नों ने प्रशंसा की। मुझे भी मेरे कई परिचित मित्रों से मिलने का सुअवसर मिला। मैंने गोडविन नामक अंग्रेज से प्रबन्ध के बारे में बात चीत की तो उसने कहा कि मैंने ऐसा प्रबन्ध कहीं नहीं देखा। यह अलवर नरेश के साथ आया था। इसके कुछ दिन बाद दादा साहिब ने होम मेम्बरी से छुट्टी ली और मुझे भी जवाहर खाना जाने से छुट्टी मिली।

इसके बाद मैं और महाराज नारायण सिंहजी साहब लखनउ गये। उन दिनों वाइसराय लखनउ आने वाले थे अतः वहाँ खूब चहल पहल थी। पोलो व रेसों आदि का समुचित प्रबन्ध किया गया था जोधपुर नरेश की विश्व विख्यात पोलो टीम भी आई थी। पोलो के खेल देखते समय डी. एल ड्रेक. ब्रुक मेन से मेरा साक्षात्कार हुआ जो कि यु. पी के कमिश्नर थे। जोधपुर नरेश के दर्शन भी कालटाउ होटल में किये। वहाँ एक साहब ने रामपुर नरेश से मिलने के लिये हमें निमन्त्रण दिया और आपने अपना परिचय उनके गारजिन के रूप में दिया। मेरे मामा साहब को जब यह ज्ञात हुआ कि मेरे और कमिश्नर साहब के अच्छी जान पहिचान है तो आपने उनसे मिलने की इच्छा प्रगट की। मैंने कमिश्नर साहब से उनको एक घरेलू मामले के विषय में साक्षात्कार करवाया। पोलो के खेल में जोधपुर की जीत हुई। बलरामपुर नरेश से भी हमारी मुलाकात हुई।

उन्ही दिनो हमारे दांती गांव वाले काका साहब महाराज विजयसिंहजी सरब्रतचन्दजी भंडारी को लेकर लखनउ पधारे। आपको भिनगाँ हाउस में ठहराया गया। वहां कुछ दिन रह कर हम जोधपुर आगये।

इन्ही दिनों बड़े भाई साहब की दूसरी शादी हुई। भुज रियासत के टेरे ठिकाणे से डोला आया था। विवाह सूरसागर के महलों में हुआ। आपकी दूसरी शादी से एक पुत्र व एक पुत्री दो सन्ताने हैं। राजकुमार मोहनसिंहजी के जन्मोत्सव की खुशी में मैंने एक खाना किया जिसमें रावटी के सब सरदार निमन्त्रित किये गये थे।

इसके कुछ दिन बाद दादा साहब ने हम लोगों को सिरोही जाने के लिये कहा। सिरोही दरबार की पुत्री का विवाह नरसिंह गढ़ नरेश से होना निश्चित हुआ था। फेमिली फस्ट क्लास रिजर्व होने के कारण यात्रा में किसी प्रकार की असुविधा न रही। मारवाड़ जंक्शन पर हम बारात के शामिल होगये। प्रातः काल सजनरोड उतर कर सिरोही पहुँचे। कन्या पक्ष का प्रबन्ध कुछ ढ़ीला था। बड़े २ डेरों में साधारण आदमी अपना डेरा जमा चुके थे अतः महाराणी साहिबा ने अपना निजी डेरा हम लोगों के लिये भिजवाया।

प्रातः काल हम धांग्राधा के डेरों पर गये तो ज्ञात हुआ कि बाईजी लाल साहिबा की तबियत बहुत खराब है। बारात आ चूकी थी परन्तु परमात्मा को यह विवाह मंजूर न था अतः उसी रात को बाईजी लाल साहिबा का देहान्त होगया। हम सब को इस घटना से बहुत दुःख हुआ पर क्या करसकते थे।

इसके थोड़े दिन बाद मैं भिनगाँ गया। मार्ग में लखनउ उतरा वहाँ सेलाणे दरबार से जिनको की हमारी मासी का बेटी ब्याही थी मिलना था परन्तु आपसे मुलाकात न हो सकी और मैं भिनगाँ चला गया।

स्वर्गीय राज कुमार श्री छत्रसिंहजी साहब रावटी

मेरे बड़े पुत्र कुँवर छत्रसिंह का जन्म सेलवाड़े में सं. १९९२ के आश्विन वदि ७ को हुआ जिसकी सूचना तार द्वारा मुझे भिनगाँ मिली। मैने सेखावत नारायणसिंह को इसकी खुशी में अच्छा इनाम दिया

वहां से लौटने के बाद भाई साहब को निकाला निकला। यह बिमारी भी भयंकर थी। तब मेरे दादा साहिब ने श्रीमाली बहुरा पुनमचन्दजी को जप करवाने के लिये बैठाया। परमात्मा की कृपा से एवं उस सात्विक कर्म निष्ट ब्राह्मण के जपादिको से भाई साहब कुछ ही दिनों में भले चंगे होगये। भाई साहब की इस बिमारी में हम लोग पहरा आदि दिया करते थे।

भाई साहब के ठीक होजाने से दादा साहब को पुनमचन्दजी पर बहुत श्रद्धा हुई अतः आप यावत जीवन १०) रुपये मासिक जप जपादि के रूप में उनको देते रहे।

इसके बाद मुझे निकाला निकला। डाक्टर चटरजी के प्रयत्न से एवं बारठ शंभुदानजी मथाणिया वाले की सेवा से कुछ ही दिनों में मै ठीक होगया।

इसी साल फाल्गुन के महीने में भिनगाँ युवराज की शादी सायपुरा राजाधिराज की लड़की से होनी निश्चित हुई। बडे भाई साहब के साथ हम लोग वहाँ गये। बडे भाई साहब के भिनगाँ पधारने का यह पहला अवसर था। हमारे नाना साहिब राजर्षि उदयप्रताप सिंहजी द्वारा बनाई हुई कोठी को देखकर सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। भिनगाँ रु० ७०००००) सात लाख की स्टेट है इसके साथ ही साथ हमारे नाना साहिब का यु. पी का बच्चा २ जानता है। आप वाइसराय की कौन्सिल के मेम्बर भी रह चुके थे। आपको राजर्षि का खिताब भारत सरकार से दिया गया था।

वहां विवाह बड़ी धूम धाम से हुआ। सायपुरा से विवाह कृत्य समाप्त कर हम भिनगाँ लौट गये। भिनगाँ में टेनिस का खेल हुआ। मैं और दौलतसिंहजी जो कि अभी जोधपुर के कमिश्नर है टेनिस के खेल में जीते। कप आदि देकर हमारा सन्मान किया गया। यहाँ भाई साहब ने एक बड़े सूअर का शिकार किया। मैंने इतना बड़ा सूअर पहले कभी नहीं देखा था। वहां से हम लोग जोधपुर आगये।

मुझे मेरी माताजी का करीब ७०००) रुपये का जेवर मिला। रोकड़ कुछ नहीं मिला। मुझे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि रावटी ठिकाने की ओर से हम पांचों भाइयों को जो कि पाटवी के पुत्रों को दिया जाता है वह अभी तक नहीं मिला है।

मितव्ययता एवं दक्षाता के कारण मेरी पत्नी ने ३०००) रुपये अपने पास जोड़ रखे थे। उन्होंने वह रकम दादा साहिब को जड़ाउ हार बनवाने के लिये दी। दादा साहब उस रकम को देख कर बहुत खुश हुए और आपने फरमाया कि तुम लोग घर बना लोगे। इन्हीं दिनों मैंने अपने पास से रावटी में एक महल मय फर्नीचर के करीबन ८०००) रुपये लगाकर बनवाया।

इन्हीं दिनो दादा साहिब व भाई साहब में अन बन होगई। इसलिये दादा साहब सुरसागर के महलों में रहने लगे। एक दिन दादा साहिब ने वंशीलाल सेवग हीरा देशर के हवलदार को कहा कि तुम पं. मुलचन्दजी को जाकर कह कि वे समझा बुझा कर उम्मेदसिंहजी को मेरा कामदार बनादे। परन्तु मैंने इस समय चुप रहना ही श्रेयस्कर समझा। कारण यह था कि वृद्धा वस्था

के कारण कुछ तो काम बिगड़ गया था और इसके साथ ही साथ भाई साहिब से बैर मोल लेना था। अतः मैने उसके लिये क्षमा मांगली। इस बात को वंशीलाल का बेटा गणेशमल जानता है।

इन्हीं दिनों डी. एम. फील्ड जोधपुर के प्रधान मंत्री थे। मैं लिख चुका हूं कि आपके और मेरे अच्छी जान पहिचान थी। अतः मैने स्टेट में सरविस मिल जाने के लिये प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली।

सन् १९३७ के मार्च महीने में मेरे दादा साहब देवलोक होगये। मेरे दादा साहब कार्य कुशल एवं बहुत ही मितव्ययी पुरुष थे। आपने अपने भुजबल के द्वारा रावटी को इतना समृद्धि शाली बनाया।

आपने सबसे बड़ी बुद्धीमानी का कार्य यह किया कि कई अच्छे अच्छे गाँव इजारे पर या गिरवे के रूप में रख लिये जिस्से की आमदनी बहुत बढ़ गई। उन गांवों से आज भी कई हजार की आमदनी प्रति वर्ष हुआ करती है।

आपके समय में इतने बड़े परिवार के होते हुए भी कहीं अशान्ति नहीं नजर आती थी। मेरे बड़े भाई साहब ने जो कि दादा साहब के देव लोक होजाने के बाद पाट बैठे थे बारह दिन बहुत ही अच्छी तरह किये। आपने इस अवसर पर दिल खोल कर खर्च किया। एवं मेरे पूज्य वयोवृद्ध दादा साहब की आत्मा को शान्ति पहुँचाने का प्रयत्न किया।

अब बड़े भाई साहब महाराज होकर पाट विराजे। हम सब लोगों ने नजरें आदि की। इसके बाद समयानुसार नवीन रूप से रावटी का प्रबन्ध हुआ जैसा कि आज तक चलरहा है।

इसके नव महीने बाद महाराज साहब एक पार्टी बनाकर पोलो देखने कलकत्ते पधारे। वहाँ आपको निमुंनिया होगया। वहाँ से तार द्वारा मुझे बुलाया गया। इधर मेरे घर में बिमारी थी परन्तु महाराज साहब को देखना अत्यन्त आवश्यक समझ मिसगेहलोत एवं अन्य सरदारों को रोगी के देख भाल का कह कर राज कुमार लच्मण सिंहजी के साथ कलकत्ते के लिये रवाने हुआ।

हम वहाँ पहुँचे तो हालत बहुत खराब थी। भाई साहब ने आदेश दिया कि बहुरा पुनमचन्दजी को जप करवाने के लिये वापिस बुलालो। हमने आपके कहने से तार द्वारा रावटी सूचना भेज दी। हम रात को पहरा देते व जितना हमसे होसकता था महाराज साहब की सेवा शुश्रुषा की। थोड़े दिन बाद आप स्वस्थ होगये और हम सबने कुछ दिन तक कलकत्ते की सैर की। मुझे बच्चों के लिये एवं अपने लिये कुछ खरीदना था परन्तु रावटी से एक दम रवाने होने के कारण रकम नहीं ले सका, अन्त में इधर उधर से लेकर सामान खरीदा गया।

वहाँ से हम दिल्ली को रवाना हुए। रास्ते में तूफान मेल इलाबाद से कुछ आगे एक मालगाड़ी से भंवरोली पर टकरा गई। इञ्जन और डिब्बे चूर २ होगये। कई आदमी मर गये। कई घायल हुए। महाराज साहब हाथ मुँह धोने के लिये खड़े हुए थे अतः गिर पड़े मस्तिक में बड़ी भारी चोट लगजाने के कारण आप बेहोश होगये थे। मैं ऊपर सोया हुआ था, मैने सोचा गाड़ी लाइन से नीचे उतर गई है। परन्तु देखा तो यह हालत थी। मैने पेशाब करवाने के लिये कहा और मेरे कहे अनुसार महाराज साहब को पेशाब करवाई गई। हमें कुछ

धीरज वंधा। गरदन तो नहीं टूटी थी परन्तु चोट संगीन थी। दृश्य बहुत ही भयंकर था। अन्त में इल्हाबाद से डाक्टर बुलाया गया। उसने हालत देख कर कहा कि मामला बेढ़ब है। अन्त में हमने इल्हाबाद में रहकर इलाज करवाने की सलाह की। प्राइवेट इलाज कराया गया। दो दिन के बाद आपको होश आया। वहाँ डी. एल. ड्रेक ब्रुकमेन साहब एवं हिम्मतसिंहजी साहब ने जो कि जोधपुर के रेवन्यु मेम्बर रह चुके थे बहुत सहायता की।

रावटी में इस भीषण दुर्घटना का समाचार तार द्वारा दिया गया। उन्हें वहाँ लिखा गया कि जब तक हम नहीं आवें तब तक जप आदि करवाते रहना। महाराज साहब के एक न एक बिमारी आती ही रहती है। जब कभी आती है बहुत भयंकर रूप धारण कर लेती है।

कुछ दिन वहाँ रहने के बाद आप पूर्ण स्वस्थ होगये। हम लोग दिल्ली को रवाना हुए। दिल्ली में कुछ दिन रहकर हम लोग रावटी आगये।

रावटी आने के बाद महाराज साहब ने पुनमचन्द्रजी को माताजी की पूजा का कार्य सौंपा जिसको की उनकी संतान आज तक करती जा रही है।

उपरोक्त एक्सीडेन्ट के कारण महाराज साहब को डाइबिटीज की बिमारी होगई जो आज तक है। वहाँ से लौट कर आते ही मैने सप्ताह मै एक बार दरबार साहब के एवं महाराणीजी श्री भटि-याणीजी साहिबा के दर्शन करने की प्रतिज्ञा की। इन दिनों आप दोनों का यश चारों ओर फैल रहा था।

संवत् १९९४ के चैत्र सुदि दूज को मेरे रीतकँवर बाई का जन्म हुआ। इसी साल मेरी मामी साहिबा ने पंच देव के मंदिर की प्रतिष्ठा का उत्सव किया। मुझे भी मेरी मामी साहिबा ने बुलाया अतः मैं काशी पहुँचा। मन्दिर के उद्घाटन के समय डूंगरपुर दरबार, बनारस महाराज कुमार, भिनगाँ युवराज, मेजा रावजी, रानाबडवास के डूंगरसिंहजी आदि कई रईस पधारे थे। उत्सव बहुए धूम धाम से समाप्त हुआ।

उत्सव समाप्त होजाने के बाद डूंगरपुर नरेश मेरी बहिन को साथ लेजाना चाहते थे और मामी साहिबा उनको कुछ दिन ठहराना चाहती थी। इस दुविधा के कारण युवराज साहब घबरा-गये। अन्त में इस कार्य को करने के लिये मुझे कहा गया। मैं उसी समय डूंगरपुर नरेश से मिला और उन्हे येन केन प्रकारेण बहिन साहिबा को वहां ठहरने की अनुमती देने के लिये राजी करही लिया।

इस कार्य को इतनी सुगमता पूर्वक नियटते देख कर युवराज साहिब ने बहुत कृतज्ञता प्रगट की। युवराज एलेक चेत्र कान्त सिंहजी की मेरे ऊपर अत्यन्त महरबानी थी। आपने मुझे आते समय कहा कि कुछ जोधपुर के बन्धेज के बढ़िया साफे भेजना आपके कहे अनुसार मैंने यहां से साफे भेजदिये। इसके उपलक्ष में आपने मुझे पत्र द्वारा सूचना दी कि एक टेनिस के खेल का कप आपके नामसे रख दिया है जो कि सालो साल दिया जाय-गा। जब तक आप जीवित रहे वह टूर्नामेन्ट चलता रहा।

काशी से आते समय रेल में माननीय मदन मोहन माल-वीयजी के सुपुत्र कृष्ण कान्त मालवीयजी से भेंट हुई। आपके साथ शिक्षा सम्बन्धी विषय पर बात चीत हुई। बात चीत के

सिल सिले में आपने कहा कि रईसों का विलायत शिक्षा पाने के लिये जाना कोई उद्देश्य नहीं रखता। आपने जोधपुर नरेश के कार्यों की बहुत प्रशंसा की एवं आपके बनाए हुए हवाई मैदान की भी बहुत प्रशंसा की आपने एक पुस्तक भी मुझे दी कि मै उसे जोधपुर नरेश के पास पहुँचा दूं। मैने आपके कहे अनुसार वह पुस्तक जोधपुर नरेश को देदी। आगरे में मैं उतर गया और आप आगे चले गये।

आगरे में कुछ दिन ठहर कर मुगल काल की कला के कीर्ति स्तम्भ ताजमहल आदि को देख कर मैं वहाँ से रवाने हुआ। हमारे डिब्बे में हम केवल तीन आदमी थे। एक फौजी अफसर थे जो कि जयपुर के रहने वाले थे, दूसरे एक खद्दर-धारी महाशय थे और तीसरा मैं स्वयं।

सायं काल को मैं कुछ मदिरा लिया करता था। मेरे आदमी ने विस्की की बोतल लाकर रख्खी। मैने व फौजी अपसर ने विस्की लेना प्रारम्भ किया, उसी समय खद्दर धारी महाशय ने हमसे कहा कि कृपया ध्यान रखना, कहीं छींटे न लग जायें हम दोनों ने दो दो पेग लिये ज्यों ही तीसरा पेग भरा गया कि उस खद्दरधारी महाशय ने अपनी सन्दूक में से जिन शाराब की बोतल निकाली। हम दोनों देख कर चित्र लिखित से रह गये। जो महाशय शाराब की गंध एवं छींटे न लगने का हमें कहते थे वे स्वयं पेग पर पेग चढ़ाने लगे। उन्होंने हमें भी जिन के पेग लेने को कहा परन्तु हमने अनिच्छा प्रगट की। अन्त में बात चीत के सिल सिले में आपने कहा कि आपको दो दो पेग लेते देख कर मैं अपने आपको नहीं रोक सका और विवश हो कर मुझे बोतल निकाल नी ही पड़ी। इस पर हम सब खिल खिला कर हँस पड़े। जयपुर आने पर दोनों वे महाशय उतर गये।

वहाँ से लौट आने के कुछ दिन बाद मुझे विवश होकर सरदार पुरा जाना पड़ा। महाराज साहब एवं मुझमें कुछ स्वर्थी लोगोने मन मुटाव करवा दिया था। कुछ महीनों बाद डी. एम. फील्ड साहब ने मध्यस्थ बन कर सन्धी करवादी।

महारज साहब बहुत ही दयालु एवं मधुर भाषी हैं। आपका दिल बहुत ही उदार है। आपने रावटी में मकानों की अच्छी मरम्मत करवाई है। आपके महलों में सजावट रईसों की सी है। मोटरें भी एक से एक बढ़कर हैं। कामदार, वकील, नौकर चाकरों का अच्छा खासा अमला है। कई रईसों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आप पार्टियाँ दिया करते हैं। आप जन्माष्टमी का उत्सव बहुत धूम धाम एवं ठाठ पाट से करते हैं। उस दिन सब रावटी को खाना खिलाया जाता है। कभी २ सिनामा व गाने का भी प्रबन्ध हो जाया करता है। जन्माष्टमी की पूजा भी पं. मूलचन्दजी कराया करते थे।

संवत् १९९७ तदनुसार ११-४-४० को मेरे छोटे पुत्र तेजसिंह का जन्म हुआ। मैं उन दिनों महाराज साहब के साथ मथाणियाँ गया हुआ था वहाँ मुझे इसकी सूचना मिली।

इसी वर्ष दौलतकँवर भी ननिहाल से आगई। इसके कुछ मास बाद छत्रसिंह का झडूला उतरवाने के लिये मै सकुटम्ब अपनी सासूजी के साथ मुंडोता जो कि फालना स्टेशन से कुछ दूर है रवाने हुआ। हमारे साथ मोहनजी भी थे जो कि हमारे दादा हाहब के उप पुत्र हैं। आपकी माताजी मेरे दादा साहब की उपपत्नि थी केवल सोना नहीं दिया गया था और इसी अरसे में आपका देहान्त होगया। चौपावत बिडदसिंह एवं भवरू दरोगा जो कि बूडसू का रहने वाला था इस समय हमारे साथ

राजकुमार श्री तेजसिंहजी रावटी

थे । यह यात्रा भी निर्विघ्न पुरी हुई और सकुशल हम रावटी आगये ।

संवत् १९९७ के आषाढ़ सुदि ७ को मैने अपनी बड़ी लड़की का विवाह चाम्पू ठाकुर अमरसिंहजी साहब के साथ करना निश्चय किया । इस विवाह में रावटी महाराज साहब कुछ द्वेषी लोगों के भड़काने से नहीं पधारे । और न अन्य रावटी के सरदार । इन सब लोगों का कहना था कि भाटियों के साथ बेटी व्यवहार न करो । परन्तु मैने इन लोगों की बातों पर ध्यान नहीं दिया । मैं मेरे मन में यह जानता था कि थोड़े दिनों बाद इन सब लोगों की आंखे खुल जायगी । परमपिता परमात्मा ने मेरी प्रार्थना सुनली । आज वे ही लोग अपने मुँह से कहते हैं कि आपने अच्छा किया जो कि अपनी लड़कियों की शादी करदी ।

इस विवाह में महाराज नारायणसिंहजी एवं जयसिंहजी पधारे और अच्छी मदद दी । सोडावास कुवर विसनसिंहजी साहब ने जो कि मेरे सहपाठी थे इस विवाह में अच्छी सहायता की । आपका प्रेम आज भी वैसा ही है । भगवान की कृपा से एवं इष्ट मित्रों की शुभ कामना से यह विवाह भी सुख शान्ति पूर्वक समाप्त होगया । इस विवाह के अवसर पर महाराज साहब ने २०००) रुपये दिये सो कि पाटवियों केलड़कों को शादि विवाह के अवसर पर दिये जाते हैं । विवाह के बाद आपने एक खाना भी दिया ।

मैने विवाह के बाद एक भोज भी दिया । श्री दरबार साहिब के उस दिन कोई महमान आये हुए थे अतः पधार न सके । महारानीजी साहिबा श्री भटियाणीजी साहिबा कृपा कर पधारे । दायजा देख कर आपने प्रशंसा की । मैने आपको एवं मरुधर

कुंवर भुआसा को नजर आदि की। सोडावास कुंवर बिसन सिंहजी आपकी डयूटी में आये थे। राज कुमार मोतीसिंहजी जो कि महाराज शेरसिंहजी साहब के बड़े पुत्र थे भोजन में सामिल हुए। तासली आदि अरोगने के बाद श्री महाराणीजी साहिब ने महरबानी कर सोने का एक जोडदौलत कुँवर को बकसाया।

ईश्वर की कृपा कहिये या मेरे संस्कार मेरे बच्चे सब एक एक से बढ़ कर निकले। इस लड़की के आचरणों से उसके सुसराल के सब लोग प्रशन्न हैं। छत्रसिंह भी ज्यों २ बड़ा होने लगा मेरा प्रेम भी त्यों २ उसमें बढ़ने लगा। उसका रंग गौरा एवं शरीर सुडोल एवं मुख सुन्दर था। यह बचपन से ही बुद्धिमान एवं मधुर भाषी था।

युरोप के द्वितीय महा युद्धमें जोधपुर नरेश की सेवाओं को देख कर भारत सरकार ने आपको पदवी देकर आपका सन्मान किया। जब इसकी सूचना मुझे मिली मैने तार द्वारा शुभ कामना भेजी। इसपर नीचे लिखे तार द्वारा मुझे श्री दरबार साहब द्वारा प्रत्युत्तर दिया गया। जिसकी कोपी नीचे देरहा हुँ।

To—

Maharaj Umaid Singhji
Roati Jodhpur.

Thnaks appreciate your good wishes.

Maharajab.
Jodhpur.

ठाकुर श्री अमरसिंहजी साहब चाम्
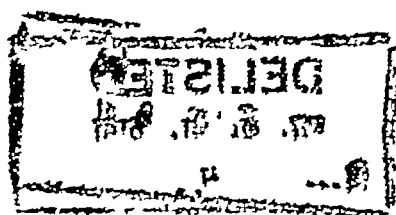
सन् १६४१ के फरवरी मास में जोधपुर शहर में युद्ध की सहायतार्थ चन्दा किया गया। तब मैने ५०) रुपये युद्ध में दिये जिसकी रसीद की कोपी नीचे दे रहा हूं।

A. F. No 169.

Government of Jodhpur
गर्वन मेन्ट ओफ जोधपुर

CASH RECEIPT

M. Kha-. Jodhpur. Department.
नाम महकमा

No 98. Dated 15/2/41
नं० तारीख

Received From Maharaj Umaid Singhji Sahib
Raoti, Jodhpur.

वसूल पाये मुसम्मी

The Sum of Rs. (in words) Rupees Fifty only.
से रकम तादाद (लफजों में)

on account of War Cantinution.
बाबत

Sd/ Asa Ram

Rs. 50-0-0 Signature of officer
Cashier दस्तखत अफसर

Superintendent
General Section Mehkma Khas
खजान्ची Jodhpur.

मैने सरविस मिलने के लिये बहुत प्रयत्न किया परन्तु सफलता नहीं मिली। फील्ड साहब ने एक दो स्थानों के लिये लिखा परन्तु मैने मेरे योग्य स्थान न देख कर मना कर दिया। फील्ड साहब की एक चिट्ठी की नकल मैं यहाँ दे रहा हूं।
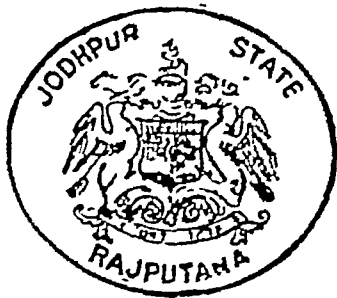
इस सिल सिले में मैं रावराजा हणवंतसिंहजी से जो कि उस समय हाउस होल्ड में काम करते थे मिला। आपने बात चीत संतोष जनक की। परन्तु सरविस का सिल सिला न जम सका। आप योग्य पिता की योग्य संतान है। आप पोलो के खेल में विश्व विख्यात खिलाड़ी हैं। एवं मिलन सार व्यक्ति है।

सन् १९४४ में चाम्बू ठाकुर साहब अमरसिंहजी के पुत्र होनेका समाचार मिला। मैने जडाऊँ हाँसली, सोने के कड़े व सलमें सतारा के सूट व तमाम वहां के जनाने सरदारों के वेश आदि बनाये। कुंवर का नाम नरेन्द्रसिंह रखा गया। महाराज साहबने भी शुभ समाचार देने वाले को अच्छा इनाम दिया।

इस के बाद मुझे मलेरिया बुखार हो गया। ज्वर बनाही रहता था। अन्तमें चटरजी की सलाह से विन्डम होस्पीटल में जिसको की आज कल महात्मा गांधी होस्पीटल कहते हैं कमरा किराये लेकर भरती होगया। एक दिन तबियत बहुत खराब होगई। खून के दस्त होने लगे। बुखार १०६ डिग्री होगया था मेरे परिवार में खलबली मचगई। ठीक उसी समय चाम्बू ठाकुर आगये उन्होने डाक्टर आदि बुलाया। बुखार इतने जोर का था कि मैं बोल ही नहीं सकता था। मैने राम की तस्वीर मेरे सामने लाने का संकेत किया। तस्वीर लाई गई। चाम्बू ठाकुर साहब ने रावटी सूचना देने को कहा परन्तु मैने संकेत द्वारा मना कर दिया। अन्त में इंजेक्शन आदि के प्रयोग से दो घण्टे के बाद मेरी तबियत कुछ सुधर गई। श्री महारानीजी साहिबा ने और श्री दरबार साहाब ने कई बार फोन द्वारा मेरी तबियत बाबत पूछा। बड़े भाई साहब भी शिकार जाते समय एक रोज पधारे। कुँवर बिशनसिंहजी भी कई बार आये। थोड़े दिन बाद मे ठीक

होगया। इस बिमारी में चाम्पू ठाकुर साहब ने मेरी अच्छी सेवा की। मैं परमात्मा से कहता हूं कि दामाद दें तो ऐसा ही दे। भँवरू दरोगा एवं सूरज मोडी वाले रामचन्द्र ने अच्छी चाकरी की। कुछ दिन वहां रहने के बाद मैं रावटी आगया।

मेरे ठीक होने के कुछ ही दिन बाद चाम्पू ठाकुर साहब के अपेन्डिक्स साइड का ओपरेशन हुआ। आपरेशन के साथ ही निकाला निकल गया, निकाले में फिर रिलेप्स होगया। वह भी विन्डम होस्पीटल में थे। मै नित्य प्रति उनकी देख भाल के लिये जाया करता था। कुछ दिन बाद आप ठीक होगये।

इन्ही दिनों लोकप्रिय जन सेवक जयनारायणजी व्यास से खडबूजा बेरी पर मैं मिला। आपने बात चीत एवं मुलाकात के लिये यही स्थान चुना था। पत्र के द्वारा मिलने का समय पूर्व ही निश्चित हो चुका था। ठीक समय भेंट हुई। हमारी बात चीत का विषय छोटे भाईयों के जागिरी बाबत था। आप बहुत ही मिलन सार एवं कार्य कुशल नेता हैं। यदि त्याग का निशान हमें मिलता है तो इसी नेता में।

सन् १९४५ में मुझे राज्य की ओर से श्री माजी साहिबा चवाणजी साहिबा के साथ पुष्कर जाने की आज्ञा मिली। जिसकी कोपी नीचे दे रहा हूं।

Office Order.

No Dated Jodhpur the 15th March, 1945

Her Highness Maji Shri Chohanji Sahiba will be proceeding by car to Pushkar on the 18th in stat and the following arrangements need to be made in this connection.

1.. The Superintendent, Motor Garage, will please arrange to depute one car for the Journey and use at Pushkar snd arrange ments for supply of monthly petrol coupons be made. He will also supply one gas plant lorry for transportation of luggage etc, which will also serve as a follow car. This lorry will return back soon after dropping the luggage at Pushkar.

2. Both Shri Maji & Shri Bada Bhuji Shahibas will stay af the Man Mohal.

3. The Superintendent, Farrashkhana will please arrange to supply the following farrashkhana saman to the farrash al ready deputed with Shri Bhuaji Sahiba. He will also arrange for supply of necessary lanterns and kerosine oil. (1) Curtains 2 (2) Chandaniyas 2. (3) Galichas 2. (4) Big durriees 2.

4. Maharaj M. Umed Singhji may be detailed on duty. He will proceed with Shri Maji Sahiba and remain there during Maji Sahibais Stay at Pushkar.

5. The expenses for the stay at Pushkar will be borne by the state as in the past.

6. The Camp clerk with the rest of the luggage and staff will proceed by train on the evening of 17th in stant. He will make all necessary arrange ments for Shri Maji Sahiba.

A sum of Rs 20,00/-/- should be advanced to the camp clerk for meeting expenses in connecotin with Shri Maji Sahib tasli and other inci dental charges as well as bhatta to the private staff of Shri Maji

Sahiba,. He will render fortnightly account and Submit requisition for recoupment of the amount.

In from all concerned.
Comptroller of Household.

No 2241 Dated 15-3-45.

Copy for warded with compliments to the Chief Ministere, Government of Jodhpur, Jodhpur for favour of information. Copy forwarded with compliments to the Minister-in-waiting. Government of Jodhpur, Jodhpur for favour of in formation.

Copy forwarded to'-

1. Mah araj Umed Singhji of Raoti
2. Superintendent, Motor Garage.
3. Superintendeht, Farrashkhana.
4. Daroga, Zenani Deodhi.
5. Camp clerk B. Shyam Krishna.
6. Kamdar to Her Highness Maji Shri Chohanji Sahiba with reformotion to Kisarrdast dated 14-3-45. for information and necessary action.

Sd—/—/—

Comptroller of House hold.

पुष्कर में रहते हुए आपने एक दिन बूढे पुष्कर जाने का विचार किया। मैने रात्री में ही वहां जाने का कार्य क्रम बना लिया था। हम सब प्रातः काल मोटर से रवाने हुए। मोटर बूढे पुष्कर के घाट तक नहीं जाती थी अतः वहाँ कोई दूसरा

प्रबन्ध न होते देख मैने आपसे अर्ज की कि सवारी ताँगे में होजाय तो आपको कोई कष्ट न होगा। आपने मेरी प्रार्थना मानली और बूढे पुष्कर का स्नान आदि कर हम अपने निवास स्थान को लौट आये।

इन्ही दिनों मुझे मेरे बाल्यावस्था के परिचित स्थान मेयो कोलेज को भी देखने जाने का सौभाग्य मिला। हमारे महाराज साहब के बड़े पुत्र राजकुमार गुमान सिंहजी उन्हीं दिनों वहीं शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। राजकुमार के विचार बचपन से ही बहुत ही उदार एवं शुद्ध हैं आपको पुस्तकों के संग्रह करने का अच्छा सद् व्यसन है। आपने रावटी में अपने मनोरंजन के लिये एक छोटा सा पुस्तकालय भी बना लिया है। अस्तु मैं मेयो कोलेज आपसे मिलने गया। वहाँ की व्यवस्था एवं सुचारु प्रबन्ध देख कर मुझे बहुत प्रशन्नता हुई।

एक मास वहाँ रहकर माजी साहिबा की सवारी के साथ में मैं जोधपुर आगया। आप मेरी सेवाओं से बहुत खुश हुए। आप बहुत ही धर्मात्मा, एवं दयालु प्राणी थे। आपने अपने जीवन के दिन धर्म, ध्यान, परोपकार में ही व्यतीत किये थे। सरदारपुरे का कृष्ण मन्दिर आपकी अमर कीर्ति है आपका देहान्त भी पावन पुण्य गङ्गा के किनारे हुआ।

कुछ साल पूर्व हमारे दादा शेरसिंहजी साहब का देहान्त होगया था। आप ग्रोस फार्म पर अध्यक्ष का काम किया करते थे। महमानों का आदर स्वागत करने वाले आप उदार व्यक्ति थे साथ ही साथ आप मिलन सार एवं बहुत ही मधुर भाषी व्यक्ति थे। आपके पाटवी राजकुँवार मोतीसिंहजी थे।

एक दिन रावटी महाराज साहब ने सरदार समन्द पर खाना किया। मुझे भी वहाँ बुलाया गया। मैंने श्री दरबार साहब से अर्ज किया कि सरदार समन्द को आपने बहुत मनोहर एवं दर्शनीय बना दिया है। तब आपने मुझे कहा कि कल मेरी मोटर लेकर इसे खूब अच्छी तरह देख कर जाना, बिना देखे नहीं। दूसरे दिन आपके आदेशानुसार हम सबने घूम फिर कर सरदार समन्द की अच्छी सैर की।

आपके विचार बहुत ही उदार थे। आपको अभिमान तो छूतक नहीं गया था। आपकी मेरे ऊपर असीम कृपा थी। आपके द्वारा भेजे गये कई तार मुझे समय समय पर मिले जिसमें से एक की कोपी पीछे दी गई है। इसलिये आपके देहावसन के बाद छः माह तक मैं किसी महफिल आदि में सम्मिलित न हुआ मेरी पत्नी को राजमाता के दर्शन के लिये यदाकदा भेजता रहा।

इन्हीं दिनों वर्तमान नरेश ने किले में खाना किया। मुझे भी निमन्त्रण मिला किले की सजावट बहुत सुन्दर थी। खाने पीने का भी अच्छा प्रबन्ध था। शराब पीने के समय कुँवर बिसनसिंहजी ने हँस्सी के तौर पर मुझे कहा कि आप भी चपा करो। मैंने हँस कर बात टाल दी। इतने में बड़े दरबार साहिब ने सुन लिया और कहा कि नहीं, जितना तुम्हें रूचिकर प्रतीत हो उतना ही लेना। आपको कई मैफलों एवं भोज आदि में सम्मिलित होने के कारण यह ध्यान होगया था कि मैं ज़्यादा नहीं पीता हूं।

द्वितीय महाराज कुमार हरीसिंहजी के विवाह के कुछ मास पूर्व रावटी पाटवी राजकुमार गुमानसिंहजी का शुभ विवाह उदय-

पुर के बेदले ठिकाणे में हुआ। राजकुमार गुमानसिंहजी के विवाह के समय भीतर की सारी रसमें मेरी पत्नी ने की। इसके साथ ही साथ कंवराणी जी साहिबा को महाराणीजी श्री भटियाणीजी साहिबा के पैर चम्पी करवाने के लिये भी मेरी पत्नी साथ गई। महाराज साहब ने विवाह बहुत ही धूम धाम से किया। बारात में साथ चलने वाले प्रत्येक रावटी के सरदार को ५०००) पांच हजार रुपये के करीब की चीजें इनायत की।

इन्ही दिनों महाराज कुमार हरीसिंहजी साहब का विवाह जैसलमेर नरेश की कन्या से होना निश्चित हुआ। मुझे माजी साहिबा को लिवा लाने के लिये बून्दी जाने की आज्ञा हुई। मैं ठीक समय बून्दी पहुँचा। बून्दी माजी साहिबा महाराजाधीराज तखतसिंहजी साहिबा की पुत्री है। आप वैष्णव धर्म को मानने वाली है इसलिये आप रेल गाड़ी में भोजन आदि नहीं किया करती है। अतः मैंने जयपुर नरेश को तार द्वारा सूचना दी कि आप अपना सेलून रूम ठीक समय खुलवादें जिससे की भोजन की सुविधा होजाय। वहां से तार तार द्वारा इसकी सूचना दी गई जिसकी नकल यह है।

From, Jaipur. Dated 29-12-46.

Jours.	Minuts.	Words.
19.	5.	31.

To --

Maharrj Ummed Singh Ji

Care guest House Bundi Your Telegram have instreucted station Master Savai-madhopure to Keep Saloon house open for Maji Sahiba Bundi Transhipment to miter garage.

Milty Secy.

वहां से रवाने होने पर हमें महारानी साहिबा जोधपुर का तार किला की माजी साहिबा की सवारी राइका बाग के जनाना स्टेशन पर रोकना जब तक की आप उनके स्वागत के लिये न आजावें। जिसकी कोपी नीचे देरहा हूं।

From - Dated 31-1-47

Complroller of House Hold Jodhpur.

To

Maharaj Ummaid Singh Ji with

H H. Maji Sahiba Bundi.

Please request Her Highness Maji Sahiba & party to detain at 8 A. M. so that Her Highness Shri Maharaniji Sahiba may be able to receive them at Raika Bagh Zanana Station.

इस विवाह में भी खूब धूम धाम रही। भोज के समय जयपुर दरबार से मुलाकात हुई आपने सेंदिन से भरे पिचरके मेरे ऊपर छोड़े। इस समय भी जोधपुर शहर की चहल पहल एवं सजावट दर्शनीय थी

इसके कुछ मास बाद महाराज साहब ने अपनी बड़ी राजकुमारी का विवाह शेखावटी प्रान्त के बालोर ठिकाने में बड़ी धूम धाम से किया।

मारवाड़ के पुण्य चीण हुए और अकस्मात् ६-६-१९४७ तदनुसार आषाढ़ वदि ६ को हमारे प्रजा प्रिय, दयालु, मिलन सार नरेश का आयु में सवर्गवास होगया। महाराजा जसवन्त

सिहजी ने जिन जिन बातों का श्री गणेश किया था उन्हें आपने राज्य शासन के कालमें परिपूर्ण किया। आपके वर्तमान रहते मारवाड़ में प्रजा को कभी जल का कष्ट नहीं हुआ। आपने अपनी प्रजा के सुख सुविधा के लिये सड़कें, नहरें, बाँध, स्कूल अस्पताल, औषधालय, पार्क आदि कितने ही स्थान बानये। उम्मेद भवन आपकी स्थायी कीर्ति है। आपके कार्यों को मारवाड़ की जनता कभी नहीं भूल सकती। ऐसे प्रजा प्रिय नरेश का असमय में ही स्वर्गवास होजाने के कारण मारवाड़ की प्रजा को महान क्षती पहुँची। आप ऐक अच्छे शिकारी थे। हाथी के शिकार में जो आपने वहादुरी एवं चतुरता दिखाई उससे यही ज्ञात होता है कि आप इस कार्य में भी दक्ष थे। आप संसार के द्वितीय महायुद्ध के समय इटली के मोर्चे पर पधारे थे। आपने आजन्म एक पत्नी वृत्त का पालन किया। केवल आपही नहीं अपितु श्री महाराणीजी भटियाणीजी साहिबा ने भी आदर्श पत्नी के कर्तव्यों का पालन किया। आपने भी प्रजा के दुःख को येन केन प्रकोरण दूर करने का सतत प्रयत्न किया। आपके राज्य शासन कालको प्रजा रामराज्य कहा करती थी। परमात्मा ऐसे प्रजा प्रिय नरेश की आत्मा को शांति प्रदान करे यही मेरी प्रार्थना है।

सन् ४२ के अक्टूम्बर मास में जोधपुर में मारवाड़ का व्यापारी सम्मेलन हुआ। स्वागताध्यक्ष गोवर्द्धनलालजी काबरा द्वारा मुझे आने के लिये निमन्त्रण दिया गया। यह व्योपारी सम्मेलन भी देखने योग्य था। जोधपुर नरेश महाराजा धिराज हनुमतसिंहजी साहब ने इसका उद्घाटन किया था। इस शुभ अवसर पर कई प्रतिष्ठित व्यक्ति जोधपुर आयेथे। सभा मंडप की

लजावट भी देखने योग्य थी। जिस निमन्त्रण कोपी मीचे दे रहा हूं।

मारवार का व्यापारी सम्मेलन

कुचामण की हवेली

नं. १५ जोधपुर २२-१०-४७

श्रीमान् माहाराज श्री उम्मेद सिंहजी सहिब
रावटी, जोधपुर।

मान्यवर महोदय,

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि व्यापारी समाज का वृहत् सम्मेलन कुचामण की हवेली जोधपुर में ता० २७, २८, २९ अक्टूम्बर १९४७. तद्नुसार आश्विन शुक्ल १३, १४, १५, सोम, मंगल और बुधवार को श्रीमान् माननीय राजा बहादुर सेठ गोविन्द लालजी पित्ती जे. पी. मेम्बर कौंसिल ऑफ स्टेट के सभापतित्व में हो रहा है सम्मेलन का उद्घाटन हिज हाईनेस राजराजेश्वर सरमद राजाऐ हिन्द महाराजाधिराज महाराज श्री हनुवंत सिंहजी साहब बहादुर के कर कमलों द्वारा होगा। इस अवसर पर अनेक व्यापारी समाज के प्रसिद्ध नेता भी बाहर से पधारेंगे। अतः आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप इस अवसर पर तीन दिन तक सम्मेलन में पधार कर हमें अनुगृहीत करें।

विनीत

मोतीलाल अग्रावाल
स्वागत मंत्री

गोवर्द्धनलाल काबरा
स्वागताध्यक्ष

इसके कुछ समय बाद जयपुर नरेश ने अपनी जुबली मनाई मुझे राज्य की ओर से महाराजाधिराज श्री अजीतसिंहजी साहब की रानी साहिबा के साथ जयपुर जाने का आदेश मिला। जयपुर नगर की शोभा एव वहाँ के दृश्य बहुत ही मनोहर थे। आपकी सवारी के जलूस ने तो मेरे हृदय पटल पर अमिट छाप लगादी थी। सोलह गजराजों के साथ चौकड़ी में सवारी करते समय प्रजा का प्रेम में मग्न होकर फूल माला आदि से स्वागत करने का दृश्य बहुत ही अनुपम था इस जुबली के अवसर पर जोधपुर नरेश भी पधारे थे। जयपुर की प्रजा ने जोधपुर नरेश का अच्छा सवागत किया। जोधपुर नरेश ने मंडावे कँवर भीन सिंहजी साहब को २०००) रुपये बच्चों की शिक्षा के लिये दिये। मैंने राम बाग में जाकर जयपुर नरेश को नजर की। जुबली के समाप्त होते ही हम लोग जोधपुर आगये।

सन् १६४८ में जोधपुर महाराज कुमार साहब का जन्म हुआ। तब जयपुर महारानी साहिबा यहां पधारे तो मुझे उनकी ड्यूटी में रहने का ादेश दिया गया जिसकी कोपी नीचे दे रहा हूं।

Office Order.

Her Highness Shri Maharaniji Sahiba of Jaipur and party will arrive From Jaipur by the moroing train on Sunday the 1st February 1948 at 6-25 P. M. (evening)

The party accompanying Her Highness Shri Maharaniji Sahib would be -

1 Thakur Sahib of Naila.

2 An A. D. C.

3 Kamdar.

4 One cherk

and about 23 Fellowers,

The party will detrain at the Raikabagh main Station and the arrival will be private.

Her Highness Shri Maharaniji Sahiba would be staying at Umaid Bhawan.

Thakur Sahib of Naila and the A. D. C. will be put up at the State Hotel and the rest of the party (except some maid servants) at the Indian Guest House.

Maharaj Ugam Singhji will be on duty with Her Highness Shri Maharaniji Sahiba of Jaipur.

Sd/- Suganlal Rai Major

Comptroller of Household.

No E/ 5008 D. 31-1-48

Copy Submitted to -

1 Lt Col. Maharaj Shri Himmat Singhji Sahib.

2 Mejor Maharaj Shri Hari Singhji Sahib for in fromation

Copy for warded with Compliments to:-

3 The private Secretary to His Highness the Maharaja Sahib Bahadur.

4 The personal Miltitary Secretary to His Highness the Maharaja Sahib Bahadur.

5. The Hazur Secretary to His Highness the Maharaja Sahib Bahadur. For information.

6 The Home Secretary Government of Jodhpur.

7 The Inspector General of Police.

8 The Chief Traffice Manager Jodhpur Railway.

9 Toe Superintendent, Palace Kitchens.

10 The Superintendent, Palace Farashkhana who will please arrange accommodation for Her Highness Shri Maharaniji Sahiba of Jaipur in the Zenana Court.

11 The A. D. C. On duty.

12 The Superintendent, State Hotel who will please reserve two rooms for the Jaipur Sardar and the A. D. C.

13 The Officer Incharge State Garage who will please arrange to detail a purdah care for Her, Highness, a car For the Sardar and A. D. C. a Follow car, a bus and a lorry to be at the Raikabagh zanana Station by 6-25 P. M. only. The cars will be detailed For their duty till their Stay here.

14 The Superintendent. Farrashkhana will plea-e make necessary bichayat at the Raikabagh Zenana Station.

15 The Officcre Incharge, Zenana Deorhi and Mardani Deorhi will please make necessary Zabta arrangements.

16 Maharaj Ugam Singhji

17 Rajmata ji Sahiba.

19 The Kamdar to Her Highness Dadiji Shri Jarechiji Sahiba.

20 The Kamdar to General Maharajadhiaaj Shi Sir Ajit Singhji Sahib.

21 The Executive clerk House hold office for information & necessary actian.

Murli.

इस शुभ अवसर पर वर्तमान जोधपुर नरेश ने दिल खोल खर्च किया। सारे शहर भर में पुत्र जन्मोत्सव की खुशियां मनाई गई। वर्तमान नरेश भी उदार एवं सहृदय व्यक्ति हैं। आपको प्रजा से अत्यन्त प्रेम है। आपको अभिमान तो आपको छू तक नहीं गया है। आप भी अपने पिता की योग्य सन्तान है। परमात्मा ऐसे प्रजा प्रिय नरेश व श्री महारानी जी की कीर्ति को दश दिगन्त व्यापी बनाये एवं उन्हे शतायु करे यही मेरी हार्दिक इच्छा है।

इन्हीं दिनों मेरी पत्नी ने गवर की पूजा करने का विचार किया। मैं उपर लिख आया हूं कि मुझे सब देवताओं पर श्रद्धा है अतः मैंने इस शुभ कार्य के लिये हामी भरली। पूजन व भोजन आदि का कार्य सुरज मोडिवाले रामचन्द्र के निरिक्षण में सम्पन्न हुआ। इसने सब बातों का प्रबन्ध बहुत ही अच्छी तरह से किया।

सन् ४८ की गृष्म ऋतु में मेरे तीनों बच्चों को एक साथ निकाला निकला। इस भयंकर बीमारी के कारण मैं बहुत घबरा गया। मुझे घबराया देख कर छत्रसिंह ने इतना साहस दिखाया कि मुझे कुछ धीरज होगया। डाक्टर चटरजी की चिकित्सा से कुछ ही दिनों में वे सब ठीक होगये। उनके ठीक होने के कुछ समय बाद मैंने सपरिवार मेरे सुसराल की यात्रा की इस यात्रा में यात्रा सम्बन्धी सारा कार्य छत्रसिंह ने किया। वहाँ छत्रसिंह को शिकार का अच्छा अवसर मिला। उसने बन्दूक द्वारा दौड़ते हरिण पर अचूक निशान लगायेथे था। वह इतना मिलन

सार था कि प्रत्येक व्यक्ति उसकी विदा के समय आँसू बहाये बिना ना रह सका। यह यात्रा भी बिना किसी विघ्न बाधा के समाप्त होगई।

इसी साल बड़े दिनों में बड़े भाई साहब ने गोठन में केम्प किया। आसोप राजा साहब को जब इसकी सूचना मिली तो आपने हम सब लोगों को भोजन के लिये बुलाया। वहां खाना आदि खाकर के लोटते ही हमें तार द्वारा एक दुसंवाद मिला। बड़े भाई साहब की सब से छोटी पुत्री का अकसमात् उसके ननिहाल में देहान्त होगया था जिसकी सूचना रावटी से दी गई थी। महाराज साहब इस दुसंवाद का सुन कर बहुत दुःखी हुए। आपसे उस दिन खाना भी नहीं खाया गया। अन्तमें मैंने साहस कर आपको धीरज बंधाया। बहुत से उदाहरण आदि देकर आप के दुःख को दूर करने का प्रयत्न किया गया। कुछ कहने सुनने के बाद महाराज साहब ने भोजन किया। आपको खरगोश के पीछे कुत्ते दौड़ाने का शौक है। शिकार के समय भागते खरगोश के पीछे कुत्ते दौड़ाये जाते हैं। खरगोश के रेत के दड़े में घुस जाने पर उसको बाहर निकाला जाता था और तदुपरान्त उसकी एक टाँग तोड़ दी जाती थी और फिर उसके पीछे कुत्ते छोड़ दिये जाते थे। बेबी की मृत्यु के बाद मैंने उसकी याद में आपसे प्रार्थना की कि आप कृपया इस बात को छोड़ दें। महाराज साहब ने भी मेरी बात को मान कर प्रतिज्ञा की कि अब भविष्य में इस प्रकार का शिकार कभी नहीं करूँगा। मैं समय समय पर महाराज साहब को उचित बातें कह दिया करता हूं आप भी मेरी बातों को शत प्रतिशत मान लिया करते हैं।

महाराज साहब बहुत ही उदार एवं मिलन सार व्यक्ति हैं। आप कई रईसों को अपना महमान बना चुके हैं। आपने समय

समय पर दिल खोल कर खर्च किया है। राजपूत सत्याग्रह के समय आपने ६०००) रुपये का दान दिया था यही नहीं अपितु जब कभी किसी संस्था को रुपयों की आवश्कता हुई है तब वह आशा से आपके पास आई है और आपने उनकी इच्छाओं की पूर्ति की है। आपने रावटी में महलों आदि की अच्छी सजावट करवाई है। आपका रहन सहन रईसों सा है। वकील कामदार आदि का अच्छा अमला है। आप में सबसे बड़ी विशेषता यह कि आप जिस किसी को चाहते हैं अपने मधुर वार्तालाप आदि से अपना बना लेते हैं। परमात्मा एसे उदार व्यक्ति को शतायु करे यही मेरी शुभ कामना है।

इन्ही दिनों छत्रसिंह ने एक सूअर व काले हरिण का शिकार किया। उसने सब मनुष्यों में उस शिकार के माँस को बाँट दिया। इसे दौड़ते हरिण पर गोली लगाने का अच्छा अभ्यास होगया था।

मुझे कई महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ने का शौक है। मैं कभी कभी लेख आदि भी लिखा करता हूं जिसका एक नमूना आगे दिया जायगा। महात्मा गाँधी, नेहरू सर प्रताप आदि के जीवन चरित्र मैंने पढे हैं। इसके साथ ही साथ मुझे इतिहास की पुस्तकें पढ़ने का भी शौक है। मैने टाड़ का राजस्थान व रेऊ द्वारा रचित मारवाड़ का इतिहास भी पढ़ा है।

मेरी जीवनी के अलावा एक बात यहाँ मैं लिख रहा हूं। वह बत है मेरे वृद्ध पितामह श्री जोरावरसिंहजी साहब के नागौर की घटना बाबत है। महाराज जोरावर सिंहजी महाराजाधिराज तख्तसिंहजी साहब की दूसरी सन्तान थे। आपकी माता बड़ी भटियाणीजी साहिबा पर जोधपुर नरेश का अत्यन्त स्नेह था।
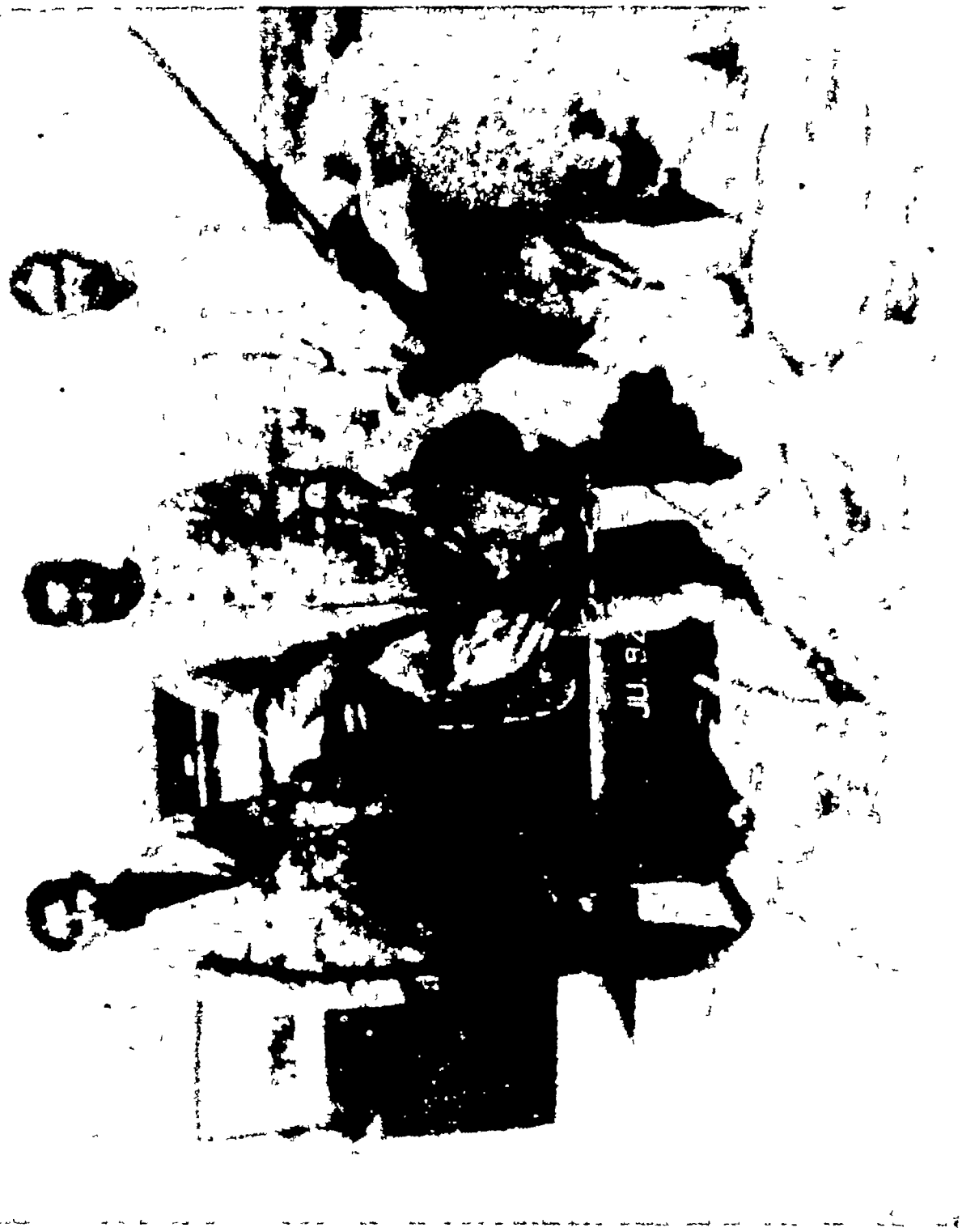
महाराज श्री उम्मेदसिंहजी महाराज श्री नारायणसिंहजी एवं राजकुमार श्री नाहरसिंहजी काले हरिणों की शिकार में।

इसका कारण यह था कि आप मरदाने कपड़े पहन शिकार आदि को जाया करती थी। आप निशाना आदि लगाने में प्रवीण थी। आपकी इच्छा थी कि महाराज जोरावरसिंहजी साहब को नागौर दिया जाय परन्तु एक दिन शेर की शिकार में मचान के अकस-मात टूटजाने से आप का देहान्त होगया, इस कारण आपकी इच्छा पूरी न होसकी। महाराज जोरावर सिंहजी नागौर गये परन्तु जिस समय मुसाहिबों ने नरेश को यह सुझाया की आपके नव पुत्र हैं यदि प्रत्येक को इतना २ बड़ा परगना देदिया जायगा तो मारवाड़ के टुकड़े हो जायेंगे। अतः अन्तमें आप स्वयं नागौर पधारे और जोरावर सिंहजी साहब को अपने पास बुलाया तो विना किसी खून खच्चर किले के बाहर आगये। महाराजा सर प्रतापने स्वयं अपने जीवन चरित्र में लिखा है कि मुझे मेरे पिता श्री जालौर देना चाहते थे परन्तु मैने नहीं लिया। लोग उपरोक्त घटना को बलवा लिखते हैं यह सरासर अन्याय है। जहाँ एक भी मनुष्य का खून खच्चर न हुआ हो उसे हम रासा नहीं कहसकते।

सन् १६४६ के मार्च मास में जोधपुर शहर में राजपूत स्कूल को बन्द कर देने के कारण सत्याग्रह हुआ। इस सत्या-ग्रह के समय राजपूत सभा के कार्य कर्ता की हैसियत से एवं इस स्कूल के विधार्थी होने के कारण चाम्पू ठाकुर अमरसिंजी ने बहुत ही प्रसंशनीय कार्य किया। आपने तन मन धन से इस आन्दोलन में सहायता दी। हमारे परिवार के कई लोगों ने इसमें भाग लिया। जिसकी प्रसंशा में नवभारत में एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसका कुछ अंश नीचे लिख रहा हूं।

बुधवार २३ मार्च १९४९.

जोधपुर में ८० छात्रों द्वारा हड़ताल

अनशन कारियों की संख्या १०० तक पहुँची।

गिरफ्तार व्यक्तियों में राजा व ठाकुर भी।

"निज सम्वाद दाता द्वारा"

जोधपुर (डाक से) राजपूत हाई स्कूल के ८०० छात्रों की हडताल ने सत्याग्रह का पूर्ण रूप धारण कर लिया है। सेक्रेटरियेट के सामने प्रदर्शन प्रारम्भ हो गये हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि पहले दिन १७ मार्च को ४०८ गिरफ्तारियाँ पिकेटिंग करने पर हुई थी पर यह भी पता चला है कि कुछ रिहा कर दिये गये हैं। १८ मार्च को भी सेक्रेटरेयिट के सामने और गिरफ़्तारियां हुई। इनमें भाद्राजून के राजा, महाराजा विजयसिंह तथा कई इलाकों के ठाकुर थे। छात्रों के अनशन की संख्या लगभग १०० तक पहुँच चुकी है। १९ मार्च से गिरफ़्तारियां वन्द सी होगई हैं। भीडों को तितर वितर करने के लिये अश्रु गैस का प्रयोग किया गया है। मिल्ट्री तैनात है, राज माताजी ने लगभग ५ बार सारे दृश्य को घूम घूम कर देखा। कुछ जत्थे बाजारों में "महात्मा गाँधी की जय हो" न्याय के लिये हड़-ताल हो" के नारे लगाते निकले। जत्थों में रियासत के भूतपूर्व आई. जी. पी. ठाकुर बखतावरसिंह तथा महाराजा जोधपुर के निकट सम्बन्धी महाराज अमरसिंहजी रावटी तथा उनके दो भाई महाराज उम्मेदसिंहजी व राजकुमार लच्मणसिंहजी भी थे। मौजुदा हालत के लिये श्रीसंपतमलजी भंडारी को जोधपुर एरिया का मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। मिलट्री को कुछ अधिकार भी दिये गये हैं। व्यास तथा पी. एस. राऊ दिल्ली से आज लौट आये हैं।

श्री मदनसिंहजी साहब चामू

मैने छत्रसिंह के पढ़ाने का प्रबन्ध घर पर ही कर लिया था। इसका कारण यह था कि मुझे मेरे बच्चों से अत्यन्त प्रेम है। मेरे बच्चों की शिक्षा इस कारण घर पर ही हुआ करती थी। वह पढ़ने के बाद दुकान का काम करता था। एक कमरे में दो अलमारियां इसके लिये रख ली थी। वह बाजार से चौकलेट, मिठाई, क्लिप आदि मंगाता और यहां बेचा करता था। भंडारी हनवतचन्दजी जो कि उन दिनों मेरे कामदार थे इसके लिये सामान आदि लाया करते थे।

संवत् २००५ के आषाढ़ सुदि प्रतिपदा को मैने अपनी दूसरी लड़की प्रेम कुँवर का विवाह चाम्पू ठाकुर साहब के छोटे भाई मदनसिंहजी के साथ कर दिया। इस विवाह में किसी प्रकार की धूम धाम न हो सकी। इसका कारण यह था कि महाराज भीमसिंहजी साहब बावड़ी वाले का देहान्त होगाया था। इस विवाह में मैने मेरी स्थिती के अनुसार दहेज आदि दिया। दहेज को देख कर बिठु ठाकुर छोटुसिंहजी ने बहुत प्रसंशा की।

इस विवाह में छत्रसिंह ने बहुत मदद दी। स्टूल व अलमारी पर किये गये रंगो को देखकर तो एक खाती भी दंग रह गया। इसने बड़ी कोशिश कर एक टूटे झाड को भी जोड दिया। विवाह में सारे आय व्यय के हिसाब को यही देखा करता था। इस विवाह के शुभ अवसर पर महाराज साहब ने प्रसन्न होकर मुझे एक अचकन के बटनों का सेट इनायत किया व एक रकम हथलेवे में भी दी। विवाह के बाद मैने दामाद साहब को राजमाता एवं श्री माहारानीजी साहिबा के पैरों पर गिराने व नजर कराने का विचार किया इस कार्य के लिये मैने महाराज नारायणसिंहजी को साथ जाने के लिये

कहा परन्तु आपने जाने से मना कर दिया। तब छत्रसिंह ने कहा कि यदि आपकी आज्ञा होतो मैं नजर करा लाऊँ। मैंने उसे जाने की अनुमती देदी। नजर आदि करवाकर वह बंगले चला गया और वहीं रहने लग गया।

दो तीन दिन बाद चाम्पू ठाकुर साहब आये और कहा कि यदि आपकी आज्ञा होतो दोनो बच्चों को स्कूल में भरती करवा दिया जाय। मैंने उन्हें कहा कि नहीं अभी तो यहीं पढ़ते हैं फिर करवा देंगे।

जब दो चार दिन के बाद भी बच्चे नहीं आये तो मैंने आदमी लाने के लिये भेजा। वह तेजसिंह को लेकर आया। इस पर मैं भीके पर जो कि मेरे सुसराल का आदमी है बहुत बिगड़ा और उसे लाने के लिये भेजा। तब छोटे जवांई साहब उसे लेकर आये। छत्रसिंह का मन वहाँ रहनें का देख कर अन्त में मैंने अनुमति देदी। उसी दिन उसे परताप हाई स्कूल में भरती करवा दिया गया।

इसके स्कूल में भरती होजाने के कारण शिवचन्द्रजी बहुरा को जो कि उसे घर पर पढ़ाया करते थे बहुत दुःख हुआ। मैंने भी इन बच्चों को कभी अपनी आंखों से ओझल नहीं किया था, यही कारण था कि मैं उसे दूर रखना नहीं चाहता था। परन्तु अन्तमें उसका मन देख कर मैंने हामी भरही ली।

इन्हीं दिनों हमारे बड़े भाई साहब ने बैराई गाँव हम छुट भाईयों को देदिया। मैं दोनों बच्चों के व बड़े जँवाई साहब के साथ बैराई गया। हमारे दादा साहब अखे सिंहजी साहब जो कि भूत पूर्व नरेश के मेयो कोलेज में पढ़ने के समय सरदार इन अटेच रह चुके हैं और जिनकी की सेवाओं से प्रसन्न होकर

भूत पूर्व नरेश ने ५००) रु० माहवार आजीवन पेंशन के रूप में देने की आज्ञा प्रदान की थी, उनके ज्येष्ठ पुत्र राजकुमार अमरसिंहजी भी हमारे साथ थे। वहां हम लोगों ने अम्मल आदि का दस्तूर किया। इन दिनों शिकार आदि का अच्छा अवसर मिला। दुपहर को शतरंज का खेल होता था। मेरे दोनों बच्चे शतरंज बहुत अच्छी खेलते थे। छत्रसिंह मांस आदि भी बहुत अच्छा पकाता था। इसके हाथ के पके हुए मांस की मेरे अन्य भाईयों ने बहुत प्रशंसा की।

हमें कई मुद्दत के बाद यह छोटी सी जागीरी मिली है। परन्तु अब नित्य प्रधान मंत्री आदि बडे २ नेता यही नारे लग या करते हैं कि जागीरी प्रथा को समाप्त कर दिया जाय। उन्हें यह ध्यान होना चाहिये कि हमारा इतिहास इस बातका साक्षि है कि राजपूतों ने देश की रक्षा के लिये अपने अमूल्य प्राणों की समय समय पर आहुती देकर देश की रक्षा की है। केवल राजपूतों ने ही नहीं अपितु वीर क्षत्राणियों ने भी यदा कदा देश की व धर्म की रक्षा के लिये अपने कर्तव्य का पालन किया है। उन्हे करना तो यह चाहिये कि जागीरी प्रथा में कुछ सुधार कर राजपूतों को अपना बनाये रखें जिससे कि समय पर वे अपने जौहर दिखा कर देश की असमय में रक्षा कर सकें।

अस्तु स्कूली जीवन व्यतीत करते हुए इसने मोटर आदि चलाने का भी अच्छा अभ्यास करलिया था। शिकार का शोक होते हुए भी इसने मेरी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया। मैंने इसे कह रखा था कि गरमी के दिनों में तीतर मत मारना। इसने इस बात को जीवन पर्यन्त निभाया। एक बार यह भीका के साथ शिकार को गया भीके ने इसे तीतर पर बन्दूक चलाने

का कहा परन्तु इसने यह कह कर कि पापा ने गरमी में तीतर मारने की आज्ञा नहीं दी है अतः मै इन्हे नहीं मारूँगा।

यह बचपन से ही निर्भीक था। एक बार बड़े दरबार साहब की वर्ष गांठ पर मुझे बुखार आगया तो यह अकेला जाकर नजर कर आया और एक एलबम जो कि मैंने बनाया था नजर गुजरा कर ले आया।

इसको अभिमान छूतक नहीं गया था। एक बार मंडोर मेले जाने के लिये यात्री इधर से निकले। पानी की प्याऊ आदि का इस तरफ कोई प्रबन्ध न था। इसे कमरे में बैठा देख कर उन्होंने पानी पीने की इच्छा प्रगट की। इसने अन्दर से बरफ डालकर जल मंगवाया और सब को अपने हाथ से पिलाया शाम को जब हम घूमने निकले तो उन्हीं यात्रियों ने इस बात की चर्चा मुझसे की।

इन्हीं दिनों राज माता साहब ने बच्चों को एट होम दिया। मैंने भी बच्चों को ताँगे में भेजा। पुलिसमेन ने उम्मेद भवन के बाहर तांगे को रोक लिया। अन्तमें इसने महाराज अनोप सिंहजी साहब की मोटर को जाती हुई देख कर उसे रुकवाया और उन्हें सब बात बताई। तब आपने मोटर में बिठाकर उन्हें अन्दर पहुँचा दिया। उसी दिन सांयकाल को जब महाराज अनोपसिंहजी साहब वर्तमान नरेश के साथ रावटी पधारे तो आपने उपरोक्त घटना का उल्लेख किया। इसके साथ ही साथ आपने यह भी कहा कि आपका बच्चा होनहार है। परन्तु मुझे उसके गुणों के कारण शंका हो गई थी कि यह आत्मा रहने की नहीं। ठीक यही हुआ जैसा कि मेरा अनुमान था।

अकस्मात् छत्रसिंह को माताजी की बीमारी होगई। उन दिनों वह चाम्बू हाउस में ही रहता था। मुझे इसकी बिमारी की सूचना मिली। मैं बंगले पहुँचा। डाक्टर चटरजी को बुलाया गया। मुझे डाक्टर साहब के आने पर कुछ धीरज आया उन्हों ने दवा आदि का समुचित प्रबन्ध कर दिया।

इन्हीं दिनों बाईजीलाल साहिबा राजेन्द्र कुँवर साहिबा का विवाह हुआ परन्तु इस बिमारी के कारण मैं उसमें सम्मिलित न हो सका। चाम्बू ठाकुर साहब करोली नरेश की डयूटी में थे।

माताजी धीरे २ ठीक होने लगे। हमें आशा हुई कि अब कुछ भय नहीं है परन्तु फल हमारी आशा के विपरीत हुआ। अकस्मात् ३-५-५० को तदनुसार ज्येष्ठ वदि २ को इसकी तबियत ने पलटा खाया। मैं रावटी से वहां पहुँचा, देखते ही मेरी आत्मा में खल बली मच गई। मैने कई डाक्टरों को बुलाया, भरसक दौड़ धूप की कई देवी देवता मनाये, परन्तु दशा बिगड़ती ही गई। मैने रामायण की पुस्तक लाकर इसके सिरहाने रख्खी। रामकी तस्वीर लाकर ज्यों ही इसके सामने रख्खी वह स्वयं मेरे हाथ से गिर गई। राम की तसवीर को गिरती देख कर इसने कहा, "पापा गई राम नवमी को भी तस्वीर गिर गई थी, आज भी गिर पड़ी है"। यह भी मेरे साथ रामनवमी का व्रत रखता था एवं पूजा करता था। गई रामनवमी को उपरोक्त घटना घटित हो गई थी। मेरे देह में काटो तो खून नहीं वाली दशा होगई। मैने ठंडी सांसली। इसकी सांस दबती जा रही थी। धीरे २ जबान मन्द पड़ती गई और अन्तमें रात्री के तीन बजे राम राम कहते हुए छत्रसिंह का देहान्त होगया।

मेरे होश सम्भालने के बाद यह प्रथम घटना घटित हुई थी। घरमें कोहराम मचगया। छोटे से लेकर बड़े तक दहाड़ें मार मार कर रो रहे थे। पर मेरी आत्मा स्थिर रही। मैंने अपने हाथ से उसे स्नान कराया। सब जगह फौन द्वारा सूचना दी गई। नारायणदासजी दरजी ने जो कि हमारे कपड़े बनाया करते हैं जिस समय कपड़े बनाये मेरी आत्मा भी डौल उठी परन्तु मैंने धैर्य रखा। पौशाक आदि पहना कर मैंने अपने हाथ से उसके साफा बाँधा अन्तमें अपने ही हाथों उसे सजा कर हम लोग ग्यारह बजे रावटी आगये।

दाह संस्कार के बारे में यहाँ कई वृद्ध व प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने कहा कि माताजी की बिमारी वाले का दाह संस्कार नहीं होना चाहिये। अतः उसे दाग नहीं दिया गया।

दाग आदि से निवृत्त होकर हम भीतर आये। छोटे से लेकर बड़ा तक फूट फूट कर रो रहा था। परन्तु क्या कारण था कि मेरी आँखों में आँसू नहीं आये। महाराज साहब ने भोजन के लिये बहुत आग्रह किया परन्तु मुझ से खाना नहीं खाया गया। मेरी रामायण पर से श्रद्धा उठ गई और उसी समय मैंने रामायण श्यामलालजी को देदी। मनुष्य की आत्मा बहुत चंचल होती है जिस रामायण पर मेरी इतनी श्रद्धा थी उसे मैंने बिना सोचे विचारे क्रोध के आवेश में देदिया।

सायंकाल को शिवचन्द्रजी बहुरा मुझसे मिलने आये। कमरे में पैर रखते ही वे फूट फूट कर रोने लगे। मैंने उन्हें धीरज बंधाया और कहा कि देखो मैं तुम्हारे सामने बैठा बातें कर रहा हूं और तुम इस प्रकार रो रहे हो। अन्त में बहुत कुछ समझाने पर वे शान्त हुए।

तीन दिन बाद पं. विष्णुलालजी बहुरा मुझ से मिलने आये उन्होंने आकर मुझे बहुत सान्त्वना दी। उन्होने गीता आदि के उपदेशों द्वारा मुझे बहुत धीरज बंधाया। यही नहीं उन्होंने रामायण के पाठ करने का भी मुझे आदेश दिया। अन्तमें उन्होंने उसकी और्ध्व देहिक क्रिया करने को कहा। उन्होंने मुझे यह भी कहा कि आप एकान्त में बैठ कर कुछ रुदन करलें जिससे की आपका दिल शान्त होजाय। उनके कहे अनुसार मैने कार्य किया जिससे मेरे हृदय का भार बहुत कुछ कम होगया।

महाराज हणुवतसिंहजी साहब ने जोकि भूत पूर्व नरेश के ए. डी. सी. व वर्तमान नरेश के सरदार इन अटेच रह चुके हैं और जोकि मारवाड़ के ही नहीं अपितु राजस्थान के एक प्रतिष्ठितव्यक्ति है उन्होने भी मुझे आप बीती बात कहकर बहुत कुछ धीरज बंधाया। परताप हाई स्कूल के विधार्थियों ने शोक सभा की और समवेदनात्मक पत्र भेजा जिसकी कोपी आगे देरहा हूं। उसकी पुण्य स्मृति में जिन २ महानुभावों ने पद आदि बनाये हैं वे भी मैं आगे देरहा हूं।

मेरे छोटे पुत्र के पैर में पीड़ा होने के कारण सब क्रियायें मैने ही की। वर्तमान नरेश ने पाटवी महाराज कुमार होते हुए भी अपने पिता श्री की द्वादशादिक क्रियाओं को अपने ही हाथ से किया था इस बात को ध्यान में रखते हुए मैने सारी क्रियाएं आप ही की। मैने गरुड पुराण आदि की कथा भी इस समय सुनी। इन उपरोक्त कार्यों के कारण मेरी आत्मा को पूरी शान्ति मिली। सोने के सींग आदि लगाकर व चान्दी के खुर आदि बना कर मैने गाय आदि पुण्य में दी। इसके साथ ही साथ

एक बच्चे को जो कि उसके समवयस्क था वस्त्रादि दिये। इसके बाद पं. विष्णुलालजी से मैने गीता का प्रवचन सुना। आप बहुत ही अच्छे विद्वान है। आपनें गीता का इस प्रकार प्रवचन किया कि मुझे व मेरे घरमें बहुत शान्ति मिली। आपके सदुपदेश से हम दुखित जनों को बहुत ही सान्त्वना प्राप्त हुई। आपके उपदेश के अनुसार मैंने रामायण की पुस्तक नई मंगवाई और उसका पाठ करना फिर नियमानुसार प्रारम्भ किया।

मैं शुक्रवार के शुक्रवार उसकी छत्री पर फूल चढ़ाया करता हूं जिसको कि मैने बाग में बनवाया है। उस दिन माँस मदिरा का भी सेवन नहीं करता हूं। प्रातः काल उठ कर कबूतरों को धान आदि डालने के बाद नित्य क्रिया से निवृत्त हो रामायण का पाठ करता हूं। इस प्रकार अपने जीवन को व्यतीत करता हुआ परम पिता से प्रार्थना करता रहता हूं कि उस प्राणी को सद्गति प्रदान करे।

मेरी जीवनी लिखना समाप्त करूँ कि इसके पहले यह घटना घटित होगई अतः मुझे यह लिखना पड़ा। मेरे बड़े भाई साहब दयालू एवं दातार हैं इसके साथ ही साथ आपको गोटें देना व गाना सुनने का अत्यन्त शोक है। खाने पीने वालों का ताँता नित प्रांत लगारहता था। ठीक यही हाल छ मास तक चलता रहा। मैं पहले ही लिख आया हूं कि मुझे फालतु खर्च आदि से घ्रणा है अतः कई बार निमन्त्रण पाने पर भी मैंने गोठ आदि में भाग नहीं लिया। यह बात मैं अच्छी तरह जानता था कि 'सब दिन होत न एक समान"। भाईसाहब पहले से ही कमजोर थे और इस नित प्रति के जागरण से आपकी तबियत खराब होती गई। अन्तमें ११ दिसम्बर को अचानक आपकी

राजकुमार श्री तेजसिंहजी
अध्यापक श्री शिवचन्द्जी के साथ

तबियत में गड़ बड़ी होगई। फौन द्वारा हमारे फेमीली डाक्टर चटरजी को बुलाया गया आपने आकर समुचित दवा आदि का प्रबन्ध कर दिया। बुखार मामुली बना रहता था एक दिन गेस हुआ परन्तु दूसरे दिन तबियत ठीक होगई। परन्तु खिचड़ी और आडू के एक साथ लेने से तबियत ने एक दम पल्टा खाया।

तबियत बिगड़ी तो एक दम बिगड़ी। खून की उल्टी एवं हिचकी का चलना प्रारम्भ होगया। अब खाना तो क्या पानी भी पेट में नहीं रहता था। मैं रात को पहरा देता, दिनको भी जब उल्टी होती आपके पास रहता। महाराज साहब को गोद में लिये मैं उन्हें एवं मेरे चाचा महाराज देवीसिंहजी आदि को धीरज बंधाता था। जिस समय हिचकी का दौरा होता सब लोग बाहर चले जाते परन्तु कालू एवं भीका जोकि आपकी सेवा में तैनात थे तन मन से आपकी सेवा करते। इन की सेवा चाकरी सराहनीय थी। मैं उन की ओर देखता और वे मेरी ओर। उस समय महाराज साहब हम तीनों के सिवाय किसी को पास रखना नहीं चहते थे।

इन्हीं दिनों जोधपुर में उम्मेद फुटबॉल टूर्नामेन्ट हुआ। मेनेजिङ्गकमेटी के जोइन्ट सेकेटरी एवं उम्मेद नगर फुटबाल टीम के सृष्टा ठाकुर अमरसिंहजी ने मुझे मेच देखने के लिये आने को कई बार कहा परन्तु भाई साहब की बिमारी के कारण न जासका। अन्त में उनके आग्रह पर तेजसिंह को सेमी फाइनल व फाइनल का मेच दिखाने के लिये शिवचन्दजी के साथ भेज दिया।

चाम्ब्रू ठाकुर साहब की कार्य कुशलता एवं दक्षता के बारे में ज्वाला सप्ताहिक ने लिखा है कि "अप जिस कार्य को हाथ में लेते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। उम्मेद नगर टीम को सेमी फाइनल में लाने का श्रेय आपको ही हैं"। करनल ठाकुर मोहन सिंहजी साहब के साथ रहने से आपको यह श्रेष्ठता मिली है। महाराज साहब की बिमारी में भी आपने अपनी सेवा पेश की।

डाक्टर चटरजी के अनवरत परिश्रम के बाद बड़े भाई साहब की बिमारी समझ में आई। रातको अधिक जागरण से एवं मदिरा के अत्यन्त ग्रहण करने से आपकी आँतें बिगड़ गई थी। आपको खाना हाथ की नाड़ द्वारा पहुँचाया जाता था। तारीख २३-१२-५० को हाथ की नाड़ी से खाना देते ही आपकी तबियत बिगड़ गई। डाक्टर साहब ने अस्पताल चलने का आग्रह किया। इस रोज दुपहर को राज जोशी दुर्गाशंकरजी ने एक उल्टी देखी तो वह भी घबरा गये। मै बड़े भाई साहब को गोद में लिये बैठा था। आपकी नाड़ी २ धीरे मन्द पड़ रही थी। भाई साहब ने कहा कि मुझे नीचे लेलो। उस समय मैंने आपको धीरज बंधाया। उसी समय राज माता साहब रावटी पधारे। आपने भाई साहब को बहुत कुछ धीरज बंधाया एवं डाक्टर चटरजी को अपनी मोटर भेजकर बुलवाया। डाक्टर साहब के आने पर आपने सब बातें पूछी। आपने हम लोगों को भी धीरज बंधाया एवं जप आदि करवाने का फरमाया। मालक पन इसे कहते हैं।

तारीख २४-१२-५० की रात को बहुत भयंकर उल्टी हुई। गला सूकने लगा, जबान लड़खड़ाने लगी। भाई साहब

ने मेरी गोद में सोते सोते गंगाजल मांगा। हम लोगों ने उन्हें पिलाया। चाचा रतनसिंहजी साहब धीरज दे रहे थे परन्तु वह क्षण मेरा कैसा बीता यह मैं ही जानता हूं। दो चोटें मुझे लग चुकी थीं एक श्री बड़े दरबार साहब की एवं दूसरी छत्रसिंह की। बड़े दरबार साहब के बारे में लिखना मेरे बाहर की बात है। ज़्यादा तो नहीं परन्तु दो शब्द लिख रहा हूं। सब लोगों ने सरदार समन्द व नहर आदि का गुणगान तो किया है परन्तु बीकानेर वाली घटना लोग भूल गये हैं। भूत पूर्व बीकानेर नरेश महाराजा गंगासिंहजी साहब जो कि बड़े प्रभाव शाली थे बीकानेर में नहर लाये। उस समय आपने मरूधर नरेश से रुपये उधार लिये। गंगा नहर के उद्घाटन के समय आपने फरमाया कि मैं मेरे बड़े भाई साहब श्री मरूधर नरेश से प्रार्थना करता हूं कि वे मेरे कर्जे को माफ करदें। यह सुनते ही हमारे नरेश ने स्वीकार कर लिया। ऐसी दयालुता दूसरे नरेशों में नहीं देखी गई।

दो घंटे की भयंकर तकलीफ के बाद आपकी तबियत कुछ ठीक हुई। प्रातः काल डाक्टर साहब चटरजी ने अस्पताल ले चलने की सलाह दी। महाराज हणवतसिंह साहब भी पधारे हुए थे उन्हों ने भी यही सलाह दी। बड़े भाई साहब को ब्यूक गाडी में लेटाया गया। महाराज हणवतसिंहजी साहब ने भी इस कार्य में सहायता दी। उस समय रावटी का कण कण बिलख रहा था।

अस्पताल में पहुँचते ही डाक्टरों ने अपनी अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया। पी. ओ. मो. साहब शरमाजी भी आये। आधुनिक यंत्रों की सहायता से इलाज चालू हुआ। डाक्टर चटरजी ने मेरे लिए कालू के सामने कहा कि यदि आप

जैसे सब धीरज बंधाने वाले हो आंय तो मैं कुछ ही दिनों में महारज साहब को भला चंगा करदूं। इन्ही दिनों दाँती गाँव वाले राजा दौलतसिंहजी जो कि मेरे चाचा महाराज विजयसिंहजी के पुत्र हैं। जोधपुर पधारे। वे भी महारज साहब की खुशी पूछने अस्पताल पधारे।

नये साल के प्रथम दिवस की खुशी में महाराज साहब ने अस्पताल मे खाना किया मैं उस दिन भी खाने में शरीक न हुआ। यहां मुझे डाक्टर ओझाजी से जो कि मेरे प्रिय मित्र हैं मिलने का अवसर मिला। आप वहुत ही मिलनसार व्यक्ति हैं।

महाराज साहब ने जयपुर से डाक्टर बुलाने को कहा परन्तु रावराजा हणवतसिंहजी ने यह कह कर कि डाक्टर चटरजी के मुकाबले में वह कुछ नहीं है। डाक्टर चटरजी के एवं उनके सलाहकार मित्र डाक्टरों की दौड़ धूप से एवं परमपिता की कृपा से आपकी तबियत पूर्ण रूप से ठीक हो गई। डाक्टरों ने आपको छ मास तक दारू आदि न लेने की सलाह दी।

मुझे वहां तेजसिंह के बुखार की सूचना मिली अतः ५ जनवरी को मैं रावटी आगया। डाक्टर चटरजी को बुलाया। बुखार नोरमाल था। उन्होंने दवा आदि का समुचित प्रबन्ध कर दिया। दूसरे रोज बुखार कुछ तेज होगया तो चाम्पू ठाकुर साहब डाक्टर साहब को लेकर आये। डाक्टर साहब न कहा कि आपको यहां आने पर भी आराम न मिला। मैने कहा कि मनुष्य वही है जो विपत्ति का सामना करे।

मेटत नित पर पीर जो भेटत ना पर पीर।
समरथ सुत उम्मेद अरु धीर वीर गम्भीर॥

(कवि किंकर वालाराम साधु)

महाराज साहब ने मुझे इस सेवा कार्य के उपलक्ष में ४००) रुपये देने के लिये कामदार साहब पचाणदासजी के साथ भेजे परन्तु मैने केवल अपना कर्तव्य समझ कर रुपये लेने में अपनी असमर्थता प्रगट की एवं इस धृष्टता के लिये क्षमा चाही।

पुस्तक को समाप्त करने के पहले मैं उन लोगों के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना अपना कर्तव्य समझता हूं जिन्होने कि इस कार्य में मेरा हाथ बँटाया है। इसके लिये मैं शिवचन्द्रजी बहुरा का अत्यन्त आभारी रहूंगा जिन्हों ने कि उस दिवंगत आत्मा के प्रति प्रेम होने के कारण इस पुस्तक की रचना में मेरा हाथ बँटाया है। मैं पं. विष्णुलालजी बहुरा एवं श्यामलाल जी ओझा का भी चिर कृतज्ञ रहूंगा कि जिन्होंने इस कार्य के लिये मुझे प्रोत्साहन दिया। इसके साथ ही साथ मैं प्रेमी पाठकों से प्रार्थना करूँगा कि वे भाषा की शैली एवं अशुद्धियाँ की ओर ध्यान न देकर मेरे परिश्रम को सफल बनाने का प्रयत्न करते हुए परम पिता से उस दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करने की शुभ कामना करेंगे। इत्यलम्।

भवदीय—

महाराज उम्मेदसिंह

रावटी जोधपुर।

" श्रीशः शरणम् "

-: ईश प्रार्थना :-

नाहं वसामि वैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद: ॥१॥

* राग विलावल श्री गणेश स्तुति *

(१)

गाइये गनपति जग वन्दन।
संकर—सुवन भवानि—नन्दन ॥ १ ॥
सिद्धि सदन, गजवदन, विनायक।
कृपा-सिंधु, सुन्दर सब लायक ॥ २ ॥
मोदक प्रिय मुद—मंगल—दाता।
विद्या-वारिधि, बुद्धि-विधाता ॥ ३ ॥
मांगत तुलसी दास कर जोरे।
वसहिं राम सिय मानस मोरे ॥ ४ ॥

॥ राग विलावल सूर्य स्तुति ॥

(२)

दीन दयालु दिवा कर देवा।
कर मुनि मनुज सुरा सुर सेवा ॥ १ ॥
हिम-तम-करि-केहरि कर माली।
दहन दोष-दुःख दुरित रूजाली ॥ २ ॥

कोक कोकनद लोक-प्रकासी।
तेज-प्रताप-रूप-रस-रासी ॥ ३ ॥
सारथि पंगु, दिव्य रथ गामी।
हरि संकर विधि-मूरति स्वामी ॥ ४ ॥
वेद पुरान प्रगट जस गावै।
तुलसी राम-भक्ति वर माँगै ॥ ५ ॥

राग धनाश्री शिव स्तुति
(३)

दानी कहु संकर सम नाहीं।
दीन दयालु दिबोई भावै, जाचक सदा सोहाहीं ॥
मारिके मार थप्यो जगमें, जाकी प्रथम रेख भट माहीं।
ता ठाकुर को रीझ निवाजिबौ, कहौ क्यों परत मोपाही ॥
जोग कोटि करि जोगति हरि सौं, मुनि मांगत सकुचाहीं।
वेद विदित तेहि पद पुरारि पुर, कीट पतंग समाहीं ॥
ईश उदार उमापति परि हरि, अनत जे जाचन जाहीं।
तुलसीदास ते मूढ माँगने, कबहुँ न पेट अघाहीं ॥४

राग गौरी श्री राम स्तुति ॥
(४)

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरन भव भव-दारुनं
नवकंज-लोचन, कंज मुख, करकंज, पद कंजारुनं
कंदर्प-अगनित-अमित-छवि, नवनील नीरद सुन्दरं

पटपीत मानहुँ तडित रुचि सुचि,नौमि जनक सुतावरं ॥
भजु दीन बन्धु दिनेस दानव, दैत्य–वंश–निकदंनं ।
रघुनंद आनंद कंद कोसल चंद, दसरथ–नन्दनं ॥
सिर मुकट,कुण्डल तिलक चारू,उदार अंग विभूषनं ।
आजानु भुज, सर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषनं ॥
इति वदति,तुलसी दास संकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास करू,कामादि-खल-दल गंजनं॥

राग तिलंग

(५)

मनरे परसि हरि के चरण ॥ टेक ॥
सुभग सीतल कँवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ॥
जिण चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी सरण ।
जिण चरण ब्रह्मांड भेट्यो, नख सिखा सिरी धरण ॥
जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम धरण ।
जिण चरण काली नाग नाथ्यो, गोप लीला करण ॥
जिण चरण गोबरधन धारयो, इन्द्र को ग्रब हरण ।
दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण तरण ॥१॥

भजन राग (बिलावल)

(१)

जसौदा तेरे भाग की कही न जाय ।
जो मूरति ब्रह्मा दिक दुर्लभ, सो प्रगटे हैं आय ।

शिव,नारद,सनकादि, महामुनि, मिलिबे करत उपाय ॥
ते नन्द लाल धूरि धूँसरि वपु, रहत गोद लिपटाय ।
रतन जड़ित पौढाय पालने, बदन देखि मुस्काय ॥
झूलो मेरे लाल बलिहारी परमानन्द जस गाई ॥१॥

राग विहागरो

(२)

वृज के विरही लोग विचारे ।
बिन गोपाल ठगे से ठाडे, अति दुरबल तन हारे ॥
मात यशोदा पंथ निहारत, निर-खत सांझ सकारे ।
जो कहि कान्ह २ कहि बोलत, अखियन वहत पनारे ॥
यह मथुरा काजर की रेखा, जे निकसे ते कारे ।
परमानन्दु स्वामि बिनु ऐसे ज्यों चन्दा बिनु तारे ॥१॥

(३)

निसि दिन बरसत नैन हमारे ।
सदा रहत पावस ऋतु हमपे, जबते स्याम सिधारे ॥
दृग अंजन लागत नहि कबहुँ, उर कपोल भये कारे ।
कचुक नहिं सूखत सुनु सजनी, उरबिच वहत पनारे ॥
सूरदास प्रभु अंबु बढ्यो है, गोकुल लेहु उबारे ।
कहलौ कहौ स्याम घन सुन्दर, विकल होत अतिभारे ॥

(४)

बहुत दिन जीवो पपीहा प्यारो !
बासर रैन नाँव ले बोलत, भयो विरह ज्वर कारो ।

आपु दुखित पर दुखित जानिजिय, चातक नाँव तिहारो ॥
जाहि लगै सोई पै जाने, प्रेम बान अनियारो ।
सूरदास, प्रभु, स्वाति बूँद लगि तज्यो सिंधु करिखारो ॥

(५)

मना हौं एसो ही मरि जैहौं !
इहि आंगन गोपाल लालको, कबहुंक कनियाँ लैहौं ?
कब वह मुख बहुरो देखौंगी, कब वैसो सचुपै हौं ?
कब मोपे माखन मांगैंगे, कब रोटी धरि दैहौं ?
मिलन आस तन प्रान रहत हैं दिन दस मारग चैहौं ?
जाने सूर कान्ह न आइहै, तो जाइ जमुन धंसिजैहौं ॥१॥

राग होली

(६)

होली पिया बिन मोहिं न भावै, घर आँगण न सुहावे ।
दीपक जोय कहा करूँ हेली, पिय परदेश रहावे ॥
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे, सुसक सुसक जिय जावे ।
नीन्द नहिं आवे ॥ १ ॥

कब की ठाढी मैं मग जोऊँ, निस दिन बिरह सतावे ।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवडो अति अकुलावे ॥
पिया कब दरस दिखावे ॥ २ ॥
ऐसा है कोई परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे ॥

वा बिरयाँ कब होसी मोकूँ हँस कर निकट बुलावे ।
मीरां मिल होळी गावे ॥ ३ ॥

राग सावन

(७)

रे पपइया प्यारे कब को वैर चितारयौ ॥ टेक ॥
मैं सूती थी अपने भवन में, पिय पिय करत पुकारयो ।
दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवडो करवत सारयो ॥
उठि बैठो वा बृच्छ की डाली, बोल बोल कंठ सरायो ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित धारयो ॥

(८)

प्रभु मेरे औगुन चित न धरो ।
सम दरसि प्रभु नाम तिहारो, अपने पनहि करो ॥
इक लोह पूजा में राखत, इक घर बधिक परो ।
यह दुविधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरो ॥
एक नदियाँ एक नार कहावत, मैलो नीर भरो ।
जब मिलिके दोउ एक वरन भए, सुरसरि नाम परो ॥
एक जीव एक ब्रह्म कहावत, सूर स्याम झगरो ।
अब की बेर मोंहिं पार उतारो, नहीं पन जात टरो ॥१॥

राग हमीर ताल तीन ताल

(९)

विदुर घर श्याम पाहुँने आये ।
नख शिख रुचिर रूप मन मोहन
कोटि मदन छबि छाये ॥ १ ॥

विदुर न हते घरहिमें तेहि छिन ।
स्याम पुकारन लागे ॥
विदुर घरनि नहाति उठि धाई ।
नैन प्रेम रस पागे ॥
भूली बसन, न्हात रहि जेहि थल ।
तनु सुधि सकल भुलाई ॥
बोलति अट पट बचन प्रेम बस ।
कदरी फल ले आई ॥

छीलत डारत गुदौ इत उत, थिलका स्याम खवावे ।
बारहि बार स्वादु कहि कहि हरि,प्रमुदित भोग लगावे ॥
तनिक बेर मँह हरि गुन गावत,विदुर घरहिं जब आये ।
देखि दरस सो कहत अहह, तै थिलका स्याम खवावे ॥
करते केरा झटकि बिदुर, घरनि घरमाँहि पठाई ।
तन सुधि पाई सलाज,ससंकित,बसन पहिरिचलिआई ॥
विदुर प्रेम ज्युत छीली छीली के, केरा हरिहि खवावे ।
कहत स्याम व सरस मनोहर, स्वादान इन मँह आवे ॥
भूखो सदा प्रेम को डोलूँ, भगत जनन गृह जाऊँ ।
पाई प्रेम जुत अमिय पदारथ,खातन कबहुँ अघाऊँ ॥

(१०)

शबरी, काहे करत हे वेर, मोको बेर-बेर दे वेर ।
कोमल, उज्ज्वल, मधुर, मनोहर, अमृत-जैसे बेर ॥

उदर भरी, इच्छा न भरी है--ऐसे मीठे बेर।
गुठली फेकत सकुच लगत है, हैं प्रेमिनि के बेर॥
राधेश्याम धन्य भई शबरी और धन्य भए बेर।

राग पूरिया (ताल तीन ताल)

(११)

प्रभु ! मैं नहिं नाव चलावौं,
तव पद रज नर करनि मूरि प्रभु !
महिमा अमित कहाँ लगि गावौं॥

पाहन छुवत, नारि भई पावनि,
काठ पुरातन की यहनावौं।
परसत रज, मुनि नारि बनै यह,
मैं पुनि असि नौकाकँह पावौं।
मै अति दीन, दरिद्र, कुटंब बहु,
यहि नौकाते सबही निभावौं।
जो यह उडै जीविका विनसै,
केहि विधि पुनि परिवार चलावौं॥१॥
अनुमति होइतो लेइ कटोता,
सुर सरिजल भरि प्रभु पँहलावौं।
पद पखारि रज धोई भली विधि,
करि चरनामृत पापन सावौं।

प्रभु चरनन की सपथ नाथ !
मैं अन्य भांति नहि नांव चढावौं ॥२॥
लखन रिसाय तीर जो मारैं,
निवल पकरि पद, प्रान गवावौं ।
प्रेम भरे अति सरल सुहावन,
अट पट बचन सुनत रघुरावौं ।
करूना निधि हँसि अनुमति दीन्ही,
केवट कह्यो पार लेजावौं ॥ ३ ॥

※ राग भीम पलासी ※

(१२)

पतित नहीं जो जगमें होते कौन पतित पावन कहातो ।
अधमों के अस्तित्व बिना "अधमोद्धारण" कैसे कहा तो ॥
होते नहीं पातकी ' पातकी तारण" तुमको कहताकौन ।
दीन हुए बिन दीन दयालो ! दीन बन्धु फिर कहताकौन ॥
पतित, अधम, पापी, दीनों को क्यों करतुम बिसारसकते ।
जिनसे नाम कमाया तुमने क्यों कर उन्हें टाल सकते ॥
चारों गुण मुझमें हैं पुरे, मैं तो विशेष अधिकारी हूँ ।
नाम बचाने का साधन हूँ, यो भी तो उपकारी हूँ ॥
इतने पर भी नाथ ! तुम्हें, यदि मेरा स्मरण नहीं होगा ।
दोष क्षमा हो, इन नामों का रक्षण फिर क्यों कर होगा ॥
सुन प्रलाप युत पुकार अबतो करिये नाथ शीघ्र उद्धार ।

नहीं छोडिये नामों को, यों कहने को होता लाचार ॥
जिसके कोई नहीं तुम्हीं, उसके रक्षक कहलाते हो।
मुझे नाथ अपनाने में फिर क्यों इतना सकुचाते हो ॥
नाम तुम्हारे चिर सार्थक है मेरा दृढ विश्वास यही।
इसी हेतु पावन कीजे प्रभु ! मुझे किसी से आश नहीं ॥
चरणों को दृढ पकड़े हूं अब नहीं हटूँगा किसी तरह।
भले फेकदो, नहीं सुहाता अगर पड़ाभी इसी तरह ॥
परयह रखना स्मरण नाथ ! जो यों दुत्कारोगे हमको।
अशरण शरण, अनाथ नाथ, प्रभुकौन कहेगा फिरतुमको ॥

* भजन *

(१३)

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना।
अबतक तो निभाया है, आगे भी निभादेना ॥

दलबल के साथ माया, घेरे जो मुझे आकर।
तो देखते न रहना, झट आके बचालेना ॥

सम्भव है झंझटों में, मैं तुम को भूलजाऊँ।
पर नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुलादेना ॥

तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है तो फिर, सच करके दिखादेना ॥

॥ हास्य रस वर्णन ॥

(१)

जग में सबसे बड़ा रूपैया, जग में सबसे बड़ा रूपैया।
जिसपे नहीं रूपैया उसका कोई न भाव पुछैया॥
जग में सबसे बड़ा रूपैया !

पत्नी भी पति से करती है, कङ्गाली में रार।
पतिव्रता बन जाती है जब आता है कलदार॥
हाँजी, हाँजी, करने लगते हैं बाबा और मैया।
जग में सबसे बड़ा रूपैया !

धनुआ धनिया भी इस धन से बनताधन पत राय।
लिखुआ लोभी भी लहमें में, होता लखपतिराय॥
चमुआ चमड़े वालाभी बन जाता चम्पत राय।
जिसके पास रूपैया वह है सारे जग का भैया॥
जगमें सबसे बड़ा रूपैया, जगमें सबसे बड़ा रूपैया।

(२)

बार बार बैल को निपट ऊँचो नाद सुनि।
हुँकरत बाघ विरझानों रस लेला में॥
भूधर भनत ताकी बास पाई शोर करि।
कुत्ता कोतवाल को बगानो बाग मेलामें॥
हुँकरत मूषक को दूषक भुजंग तासों।
जंग करिबे को भुक्यो मोर हर तेलामें॥

आपुस में पारषद कहत पुकारि कछु ।
रारिसी माची है त्रिपुरारि के तबेला में ॥

(३)

चींटी की चलावै को मसा के मुँह आय जाय,
स्वास की पवन लागे कोसन भगत है ।
ऐनक लगाए मरु मरु के निहारे जात,
अनु अरमान की समानता खगत है ॥
बेनि कवि कहै और कहा लो बखान करौ,
मेरे जान ब्रह्म को विचारि बो सुगत है ।
ऐसे आम दीने दया राम मन मोद करि,
जाके आगे सरसों सुमेर सों लगत है ॥

(४)

जामें द्व अधेली चार पावली दुअन्नी आठ,
तामे पुनि आना लखो सोरह समात हैं ।
बत्तीस अधन्नी जामें, चौसठ पईसा होत,
एक सौ अट्ठाइस अधेला गुन गात हैं ॥
युग शत छप्पन छदाम तामें देखियतु,
दमड़ी सु पाँच शत बारह लखात हैं ।
कठिन समैया कलि काल को कुटिल दैया,
सलग रूपैया भैया काये दियो जात हैं ॥

(५)

पौंर के किवार देत घर सब गार देत,
साधुन को दोष देत प्रीति ना चहत हैं।
मांगते को जवाब देत बात कहे रोय देत,
लेत देत भाँज देत ऐसे निवहत हैं॥
बागे हूके बन्द देत बारन की गाँठ देत,
पर्दन के कांछ देत काजई कटत हैं।
एते पै कहत सबै लाल कछु देत नाहिं,
लाला जू तो आठों जाम देतई रहत हैं॥

॥ चौपाई ॥

(६)

धन घमण्ड गरजत है घोरा। टका हीन कलपत मन मोरा॥
दामिनि दमकरही घन माहीं। जिमिलीडरकी मतिथिरनाहीं॥
वरषहिं जलद भूमि नियराए। लीडर जिमि चन्दा धन पाए॥
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे। लीडर वचन प्रजा सह जैसे॥
छुद्र नदी भरि चलि उतराई। जस कपटी नेता मन माहीं॥

श्लोक

(७)

आकाशे चण्डिका देवी, पाताले भुवनेश्वरी।
भूलोके विजया देवी, सर्व सिद्धि प्रदायिनी॥

(८)

तकारो तत्व रूपाय, मकारो मोक्ष दायकः ।
खकारो खेद नाशाय, त्रयगुणास्य तमालयः ॥

(९)

जपादौ च जपान्ते च, जपमध्ये पुनः पुनः ।
बिना तमाल पत्रेण, जप सिद्धिर्न जायते ॥

(१०)

भय्यां यस्य बलं तस्य, तस्य बुद्धिर्बलीयसी ।
भार्य्या यस्प गृहे नास्ति, मरणं तस्य वै ध्रुवम् ॥

(११)

राजा रावण जनमियो, दस मुख एक शरीर ।
जननी ने साँसो भयो, किण मुख घालूँ खीर ॥

॥ शृङ्गार रस वर्णन ॥

॥ कवित्त ॥

(१)

दुहुँ मुख चन्द और चितवैं चकोर दोऊ,
चितै-चितै चौगुनो चितैबो ललचात हैं ।
हाँसति हँसत, बिन हाँसी बिहँसत मिलै,
गातनि सौं गात, बात बातन में बात हैं ॥
प्यारे तन प्यारी पेखि पेखि, प्यारी पियतन,
पियत न खात नेकहूं न अनखात हैं ।
देखि ना थकत देखि देखि ना सकत "देव",
देखि बेकी धात, देखि देखि ना अघात हैं ॥

(२)

तुम कहा करो कहुँ काम ते अटकि रहे,
तुमकों न दोस सो तो आप नोइ भाग है।
आये मेरे नैन बड़े भोर उठि प्यार ही में,
अति हर वरन वनाइ बाँधी पाग है॥
मेरे ही वियोग रहे जागत सकल राति,
गात अलसात मेरो परम सुहाग है।
मनहू की जानी प्राण प्यारे "मति राम" यह,
नैनन ही माँहि पाइयतु अनुराग है॥

(३)

कोक की कलन बारी सोक की दलन निसि,
कीन्हीं सब बातें घातें सौति गरदन की।
आंनद-मगन सों 'प्रवीन बेनी' प्यारे पास,
भूलि गई विपदा मनोज करदन की॥
विलखी विकल ऐसी नभ में ललाई लखि,
आवन सुरत लागी दिन दरदन की।
सीत सौं सभीत सी समीर के बहाने गोरि,
छोरि दीन्ही डोरी वेग दौरि परदन की॥

(४)

आजु तेन जैहों दधि वेचन दोहाई खाँउ,
मैया की कन्हैया उतै ठाढोई रहत है।

कहै पद्माकर त्यों साँकरी गली है अति,
इत-उत भाजिबे को दाउँना लहत है ॥
दौरि दधि दान काज ऐसो अमनेक तहाँ,
आली बनमाली आइ बहियाँ गहत है।
भादों सुदि चौथ को लख्यौरी मृग अङ्कयाते,
जूठहु कलंक माहि लगन चहत है ॥

(५)

केलिकै राति अघाने नहीं दिनही में लला पुनि घात लगाई।
'प्यास लगी कोउ पानी दै जाइयो,' भीतर बैठिकै बात सुनाई॥
जेठी पठाई गई दुलहिन, हँसि हेरि हरैं मतिराम बुलाई।
कान्ह के बोल पै कान न दीन्ही सुगेह की देहरि पै धरि आई॥

(६)

आई रतिमंदिर ते रति ते रसीली अति,
रति ते रसीली अति उपमा अपंग है।
मंद मंद गति में मरू के मग पग परै,
उमगी 'प्रवीन बेनी' उर में उमंग है ॥
कम्पत रदन छबि बदन कढै न बैन
मदन छकाई छाई छबि की तरंग है।
सारी जर तारी मृगमद्ज अतर बड़ी
पीक बूडी पलकें प्रसेद बुडे अंग हैं ॥

* सवैया *

(७)

साजिश्रृङ्गार चढि है झरोखन, खड़ी है भानु सुता मुखदाई ।
हारन केह विभारन से कुच दो उन पाइ मनो लघुताई ॥
चूरन भार उतार मनोमन. मत्थन हत्थ किये सुधराई ।
सोहत है त्रिबली सुमनो कुच. के चलके कटि है दरकाई ॥

* कवित्त *

(८)

आई संग आलिन के ननद पठाई नीठि,
सोहत सोहाई सीस ईंडरी सुपट की ।
कहै पद्माकर गँभीर जमुना के तीर,
लागी घट भरन नवेली नेह अटकी ॥
ताही समय मोहन जो बाँसुरी बजाई, तामे
मधुर मलार गाई और बंसी बटकी ।
तान लागे लटकी, रही न सुधि घूंघट की,
घर की, न घाट की, न बाट की, न घटकी ॥

॥ दोहे व सोरठे ॥

(९)

बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाई ।
सौंह करैं, भौंहनि हँसै, देन कहै नटि जाई ॥

(१०)

ललन- चलन सुनि पलन में अंसुवा झलके आइ ।

भई लखाई न सखिन्ह हू झूठै ही जमुहाई ॥

(११)

सोवत लखि मन मान घटि, ढिग सोयो प्यो आय ।
रही सपन की मिलन मिली, तिय हिय सौं लपटाय ॥

(१२)

आज सखी हौं सुनति हो, पौ फाटत पिय गौन ।
पौ में हिय में होड है, पहिले फाटत कौन ॥

(१३)

नव रस सब संसार में, नव रस में संसार ।
नव रस सार सिंगार रस, युगल सार सिंगार ॥

(१४)

विरहा विरहा मत कहो, विरहा है सुल्तान ।
जा घट विरह न संचरै, सो घट जान मसान ॥

(१५)

आप पिया मों नयन में पलक ढांक तोय लेऊ ।
न मैं देखूँ और कूँ न तोय देखन देऊ ॥

(१६)

साजन आया हे सखी, ज्यों की जोनी बाट ।
थाँभा नाचै घर हँसै, खिनगा लागी खाट ॥

* सवैया *

(१७)

बरषा उघरे ऋतु सावन की निकस्यो बहु कुंजन कुंजन द्वार ।
फूल अनार के रंग रंगी चुनिया खिरकी न बनाय सँवार ॥

तादिन तेरंग और कहेहो, सखि सुन श्याम सुनभिभुकारे।
भुके दृगवानलखे तब लाल सुभालपे लालहिं पागनिहारे॥

(१८)

परसों परसों कहलाय गये, कब आवेगी वेरन वो परसो।
इतनेह की नावमें दाहलगी, उत मेह कहे वरसों वरसों॥
उठ वारही वार अटारी के द्वार, निहार निहार पिया तरसों।
जियचाहतहै उडजाय मिजूँ, पे उडो नहिं जात विनापरसों॥

(१६)

मेंह उठ्यो चहुँ औरनते, चहुँ औरनते वरसे घन कारे।
जाय रही नदियाँ गहरी, नहिं मलाह पार उतारन हारे॥
ऐसी जोसूरत श्याम वही और वीचमें सिंहवसे वटु मारे।
पोढोंजी सेज विछिहे पलंग, तुम आजकेरहो महमानहमारे॥

(२०)

भुकि कन्धरहे लिये गागरिया, भइलाल हथेली दोहू करकी।
उचके कुच जानि परे अजहूँ, वढि स्वास गई छतियां धरकी॥
मुख छाय पसीनन बुन्द रही, हीलेन भुले फुलवा तरकी।
कर एक लिये विछुरी अलके, खुल जूरे की गाँठ ते रे सरकी॥

(२१)

ये वृषभानु किशोरी भई इत, वहाँ वह नन्दकिशोर कहावै।
त्यों पदमाकर दो उन मैं नवरंग, तरंग अनंग की धावै॥
दौरें दुहु दुरि देखिवे कौ दुति देह दुहुंकी उहन को भावै।
ह्याँ उनके रस भीने वड़े दृग हाँ उनके मति भीजंत आवै॥

(२२)

दृगा चौकत कोये चले चहुँधा, अंग वारहि वार लगावततूँ।
लगि कानन गुंजत मंद कछु, मनो मर्म की बात वतावतूँ ॥
कर रोकतीको अधरामृत ले, रतिको सुख सार उठावततूँ।
हम खोजत जातिहीं पाति मरे, धनी रे धनीभौंर कहावततूँ ॥

* वीर रस वर्णन *

(घनाक्षरी)

(१)

डाढी के रखैयन की डाढी सी रहति छाति,
बाढी मरजाद जस हद्द हिन्दुवाने की।
कटि गई रैयत के मन की कसक सब,
मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की ॥
भुषन भनत दिल्ली पति दिल धक धक,
सुनि सुनि धाक सिवराज मरदाने की।
मोटी भई चंडी बिन चोटी के चबाय सीस,
खोटी भई संपति चकत्ता के घराने की ॥

(२)

इन्द्र जिमि जृभ पर, बाडव सु अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज हैं।
पौन वारि वाह पर, संभु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्र बाहु पर राम द्विज राज हैं ॥
दावा द्रुम दंडपर चीता मृग झुंड पर,
भूपण वितुंड पर जैसे मृग राज हैं।

तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,

त्यों म्लेच्छ-वंस पर सेर सिवराज है ॥

(३)

दारा की न धर यह, रार नहीं खजुवे की,

बांधिवो नहीं है कैधों मीर सहवाल को ।

मठ विश्वनाथ को, न वास ग्राम गोकुल को,

देवी को न देहरा, न मंदिर गोपाल को ॥

गौढ गढ लीन्हें अरू वैरी कतलाम कीन्हे,

ठौर ठौर हासिल उगाहत है सालको ।

बूढति है दिल्ली सो सँभारे क्यों न दिल्ली पति,

धक्का आनि लग्यो सिवराज महा कालको ॥

॥ दोहे व सोरठे ॥

(४)

देखे अकबर दूर, घेरौ दे दुशमण खड़ा ।

सांगा हर रण शूर, पैरन खिसै प्रतापसी ॥

(५)

अकबर गरवन आँण, हिन्दू सह चाकर हुआ ।

दीठो कोई दिवाँण, करतो लटका कटहडे ॥

(६)

पातल पाछ प्रमाण, साँची साँगाहर तणी ।

रही सदा लग राण, अकबर सूँ ऊभी अणी ॥

(७)

वाही राण प्रतापसी, बगतर में बरछीह ।

जाणक भींगर जालमें, मुँह काढ्यो मच्छीह ॥

(८)

अकबर पथर अनेक, कै भूपत भेला किया।
हाथ न लागो हेक, पारस राण प्रतापसी ॥

(९)

रण खेती राजपूत री, वीर न भूलै वाल।
बारह बरसों बापरौ, लहै बेर लंकाल ॥

(१०)

ढोल सुणंता मंगली, मूछाँ मूँह चढंत।
चवरी ही पह चाणियौ, कंवरी मरणौ कंत ॥

(११)

सीह न बाजौ ठाकुरां दीन गुजारौ दीह।
हाथल पाडै हाथियां, सौ भड वाजै सीह ॥

(१२)

बलण अकेली किम बणै, जोवै संसय जीव।
वै दिन जो कायर बणौ, पीहर भेजो पीव ॥

(१३)

इला न देणी आपरी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई मांय ॥

(१४)

कर पुचकारे घण कहै, जाण धणीरी जैत।
नीरा जण चाचाविये, हूँ बलिहार कुमैत ॥

(१५)

यो गहणों ओ वेस अब, कीजे धारण कंत।
हूं जोगण किण कामरी, चूडा खरच मिटंत॥

(१६)

धव जीवे भव खोवियो, मो मन भरियो आज।
मोनूँ ओछे कँचुवै, हाथ दिखाताँ लाज॥

(१७)

धन धांवा धकिया घणां, हेली आवे दीठ।
मारगियो कुंकू वरण, लीलो रंग मजीठ॥

(१८)

पिउ केसरिया पट किया, हूँ केसरिया चीर।
नाहक लायो चूँदड़ी, बलती वेला वीर॥

(१९)

पंथी हेक संदेसड़ो, वावल नैं कहि याह।
जायाँ थाल न वज्जिया, टामक टह टहियाह॥

(२०)

सूर रखे तो चार रख मत रख कायर चालीस।
काम पडियाँ हो जावसी चारों रा चालीस॥

(२१)

नायण आज न मांड पग, काल सुणीजै जंग।
धारां लागीजैं घणी, तो दीजे घण रंग॥

(२२)

ऊभी गोख अवे खियो, पेलां रो दल सेर।

पडियौ धव सुणियो नहीं, लीधो घणा नालेर ॥

(२३)

विण मरियाँ विण जीतियाँ, जो धव आवै धाम ।
पग पग चूडी पाछटूँ, तो रावत री जाम ॥

(२४)

ताला हर ताली, तू केतो ताली तीका ।
सो बाला हमें बजाय एकण हाते उखड़ा ॥

(२५)

भलो भयो घरते छुट्यो, हँस्यो सीस परि खेत ।
काके काके नवत हम, आपन पटे के हेत ॥

२६)

खंड खंड ह्वै जाय बरू, देत नु पाछे पेड ।
लरत सूरमा खेत, की. मरत न छाँडतु मेड ॥

(२७)

मुँह माँगे रण सूरमा, देतु दान पर हेतु ।
सिरू दान हूँ देत पै, पीठ दान नहीं हेतु ॥

(२८)

केसरियो वागो पहिरि, कर कंकण उर माल ।
रण दूलह ! बरि लाइयौ, दुलहिन विजय सुबाल ॥

(२६)

कायर तो जीवन मरत, दिन में वार हजार ।
प्रान पेखरू वीर के, उडत एक ही बार ॥

(३०)

कह्यौ माय मुख चुमिकैं, कर गहाय करवाल।
जानि लजाइयौ दूध मों, पयो धरनु को लाल॥

(३१)

मिली हमें थर्मो पिली, ठौर ठौर चहूँ पास।
लेकिन राजस्थान में, लाखनु ल्युनी डास॥

(३२)

देख सहेली मो धणी, अज की वाग उठाय।
मद् प्याला जिम एक लौ, फौजां पीवत जाय॥

(३३)

सूर सिंह भेला हुवा चवडे मचियो जंग।
चन्दा बदनी दातली कियो कसुंबल रंग॥

(३४)

सुरा सवोरे आवजो मैं रोकों ला घाद।
के अतीता खालड़ी के सरदारों साट॥

(३५)

सोरठियो दूहो भलो भली मरवणरी बात।
जोवण छाई धण भली ताराँ छाई रात॥

(३६)

झोल पी झकोल पी, जो ढोलारो होय।
अवसर बाई काम्वडी, भेलन वाउँ कोय॥

(३७)

पाणी पीसों पावटा नर वर रे कुँआ।

मारवण बाई काम्बडी, सो विसरसो मुँवा ॥

(३८)

सहणी सबरी हूँ सखी, दो उर उलटी दाह ।
दूध लजाणे पूत सम, वलय लजाणे नाह ॥

(३९)

यह बात कराहि कराहि बहादुर शाह कही जु अमीरन सौ,
शिर जीत भयो है मरूधरराज अजीत महारन वीरनसौ।
महारावनको सबहास कियो पुनि मारयो हुसेनको तीरनसौ,
सर साँभर छीन लई सो लई न टरयो अजमेर के पीरनसौ॥

(४०)

तुम्हारे काफिले में काफिले, सालार कितने हैं ?
मगर सर देने वाले उनमें भी, सरदार कितने हैं ?

(४१)

दुरगो आस करण रो जनम्यो पूत सपूत ।
नव रंगरी मन में रही काली पीली करतूत ॥

"ऋतु वर्णन"

ग्रीष्मः— ॥ कवित्त ॥

(१)

वृख को तरनि तेज सहस किरनि तपे,
ज्वालनि के ज्वाल विकराल बरसत हैं ।
तचति धरनि जग झरत झरनि सीरी,
छाँह को पकरि पंथी पंथी विरमत हैं ॥

सेना पति, नेक दुपहरि ढरकत होत,
धमका विखम जोन पात खरकत हैं।
मेरे जान पौन सीरी ठौर को पकरि कौनौ,
घरि एक बैठि कहूं घाम वितवत है॥

(२)

बैठी रही अति सघन बन, पैठि सदन तन माँहि।
देखि दुपहरी जेठ की, छाँहौं चाहति छाँह॥

(३)

चले गुलाबी केसरी सब सीतल उपचार।
मुक्ता मंडल बाग बसि, ग्रीषम करत विहार॥

वर्षाः— (४)

दामिनि दमक, सुर चाप की चमक स्याम,
घटा कि घमक अति धुरवान धोरतें।
कोकिला, कलापि कल, कूजत है जित तित,
सीतल है ही तल समीर झक झोरतें।
सेना पति, आवन कह्यो है मन भावन, सो,
लग्यो तरसावन विरह जुर जोर तें।
आयो सखि सावन विरह सरसावन,
लग्यो है बरसावन सलिल चहुँ ओर ते॥

(५)

सुहीक सुँवा पट सकल, नीक जटित श्रंगार।
अटा घटा निरावन नवल, वर्षा करत बिहार॥

शरदः—　　　　　(६)

खंड खंड सब दिग मंडल जलद सेत,
　　सेना पति मानो श्रंग फटिक पहार के।
अंबर अडबंर सो घुमडि घुमडि घन,
　　छिछि के छछौरे छिछि अछिन उछारके॥
सलिल सहल, मानो सुधा के महल नभ,
　　तूल के पहल किधौं पवन अधारके।
पूरब को साजत हैं रजत से राजत हैं,
　　गग गग गाजत गगन घन कार के।

(७)

अम्बर जरी सुनो सनी, पनासु भूषण धार।
चन्द्रोदय जल कमल छवि, शरद सुकरत विहार॥

हेमंतः—　　　　　(८)

आयो, सखि, पूसो, भूलि कंत सोन रूसो केलि,
　　ही सो मन मूसो, जीव ज्यों सुख लिपतु है।
दिन की घटाई, रजनी की अघठाई, सीत,
　　ताई हू को, सेना पति, वरनि कहतु है॥
याही तें निदान प्रात वेगि उदै होतनहिं,
　　द्रौपदी के चीर को सो रात को महतु है।
मेरे जान सूरज पताल तप तलै मांझ,
　　सीत को सतायो कहलाइके रहतु है॥

(९)

नील निचोल सु अंबरी, माणिक भूषण सार ।
अति हि उष्ण उपचार तन, हेमंत करत विहार ॥

शिशरः— (१०)

सिसिर में ससि को सरूप पावै सविताहू,
घामहूं में चाँदनी की दुती दमकति है ।
सेना पति, होत सितलता है सहस गुनी,
रजनि की झाँई बासर में झमकति है ॥
चाहत चकोर सूर ओर दृग छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है ।
चंद के भरम होत, मोद है कुमोदिनी को,
ससि संक पंकजनी फूली न सकती है ॥

(११)

अंबर सरपि सित वसन, नील मणिसु अपार ।
दंपति प्रेम अनन्त उर, शिशिर सुकरत विहार ॥

वसंतः— (१२)

केतक, असोक, नव चंपक, बकुल कुल,
कौन धौं वियोगिन को ऐसो विकराल है ।
सेना पति, साँवरे की सूरति कि सूरति की,
सूरति कराई करि डारत विहाल है ॥
दच्छिन पवन एति ताहू की दवन जउ,
सूनो है भवन, परदेश प्यारो लाल है ।

लाल हैं प्रवाल फूले देखत विसाल जऊ,
फूले और साल पै, रसाल उर साल है ॥

(१३)

श्वेत विचित्रित तनु वसन, सकल भृंग श्रंगार ।
केसर चन्दन मृगमदा, करत बसन्त विहार ॥

भक्ति के फुटकर पद्य

॥ कवित्त व सवैये ॥

(१)

करते निवास छवि-धाम घनश्याम भृंग,
उर—कलियों में सदा व्रज नर नारी की ।
कण कण में हैं यहाँ व्याप्त दृग सुखकारी,
मंजु मनोहारी मूर्ति मंजुल मुरारी की ॥
किसको नहीं है सुध आती अनायास यहाँ,
गोवर्धन देख कर गोवर्धन धारी की ।
न्यारी तीन लोक से है प्यारी जन्म भूमि यही,
जन मन हारी वृंदा विपिन विहारी की ॥

(२)

सुखद सजीली शस्य-श्यामला यहाँ की भूमि,
श्याम के ही रंग में रंगी है प्रेम भावसे ।
रज भी पुनीत हुई उनके चरण छूके,
सीस पर चढाते उसे भक्त जन चावसे ॥

ताप पुंज नासी उर कमल विकासी हुआ,
यमुना सलिल बसा उनके प्रभाव से।
कर दिया पूरा उसे वर वृन्दावन ने ही,
जो थी कमी मेदनी में स्वर्ग के अभावसे॥

(३)

मंगल संगीत धाम धाम में पुनीत जहाँ,
नाचे वर वधू देव नारि अनुहारिका।
घंटन के नाद कहूँ, बाजन के छाय रहे,
कहुँ कीर केकी पढे सुक और सारिका॥
रतनन ठाट हाट बाटन में देखियत,
घूमे गज अश्व रथ पत्ति नर नारिका।
दशो दिशा भीर द्विज धरतन धीर मन,
उठता है पीर लखि बलवीर द्वारिका॥

(४)

द्रौपदी औ गनिका, गज गीध,
अजामिल सों कियो सोन निहारो।
गौतम गेहनी कैसी तरी,
प्रल्हाद को कैसे हरयो दुःख भारो॥
काहे को सोच करे रस खानि,
कहा करि है रविनन्द बिचारो।
कौन की संक परी है जु माखन,
चाखन हारो है राखन हारो॥

(५)

गोरज विराजे भाल लह लही वन माल,
आगे गैया पाछे ग्वाल गावे मृदु बानिरी।
जैसु धुनी बाँसुरी की मधुर मधुर,
तैसी बंक चितवनी मन्द मन्द मुसकानिरी॥
कदम विटप के निकट तटनी के तट,
अटा चढी वाहि पीत पट फहरानीरी।
रस वरषावे तन तापिनि बुझावे नैनन,
बेननि रिझावे बहु आवे रस खानिरी॥

(६)

सीसपगा न झगा तनपै, प्रभु! जानैको आहि, वसैकेहिग्रामा।
धोती फटीसी, लटी दुपटी अरू पाँय उपानहकी नहीं सामा॥
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकि सो वसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को धाम, वतावत आपनो नाम सुदामा॥

(७)

ऐसे बिहाल बिवायन सों भयो, कंटक जाल लगे पुनि जोये।
हाय महादुःख पायो सखा, तुमआये इते न कितैदिन खोये॥
देखिसुदामा की दीन दशा, करूणा करिकै करूणानिधिरोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैननन के जलसौं पगधोये॥

(८)

रामुहैं मातु, पिता गुरु, बंधुऔसंगी, सखा, सुत, स्वामिसनेही।
रामकी सौंह, भरोसोहैरामको २, रामरंग्यो रूचिराच्योनकेही॥

जीअत रामु, मुँए पुनि रामु, सदा रघुनाथहि की गति जेही।
सोई जिए जगमें 'तुलसी' नतु डोलत और मुए धरि देही ॥

(६)

जहाँ हित स्वामि, न संग सखा,
बनिता, सुत, बंधु, न बापु न मैया।
काया-गिरा-मनके जनके अपराध,
सबै छलु छाडि छमैया ॥
तुलसी ! तेही काल कृपाल बिना,
दूजो कौन है दाऊन दुःख दमैया।
जहाँ सब संकट, दुर्घट सोचु,
तहाँ मेरो साहेबु राखै रमैया ॥

(१०)

वृंदा बन धाम सो जगत और दूजो कहाँ,
चौधौं लोक ईश्वर की ऐसी प्रीति तामैं हैं।
निसिदिन नामैं तें न जामैं औ चारमैं,
गाय वृजन रखामैं देह सुधिबिस रामे हैं ॥
ब्रज बाल ग्वालनन के टूक छिनि खामैं ग्वाल,
प्रेम मैं विकल ह्वै कैं राधा २ गामैं हैं।
रज सीस लामैं लोटि जामैं सुख यामै पाई,
पाई गहि गोपिन के मुकट लगामैं हैं ॥
सुनहु सुजान विधि दैतो मन भायो तौ मैं,
वृंदावन सीमा तजि पदहू न जामतो।

निसिदिन श्रवण कथा मृतको पान करि,
रसिकन मंडली मैं आनन्द बढावतौ ॥
ज्वाल, कवि नित नयी लीला प्रभुकों निहारि,
जुगल प्रसाद भोग भक्तन पवामतौ ।
न्हाय जमुनामें सुख पाइ बैठि कुंजनमैं,
राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्ण गामतौ ॥

(११)

उधो ! तहांई चलौ लै हमें जहँ कूबरि कान्ह वसै एक ठौरी ।
देखिय दास अघाय अघाय तिहारे प्रसाद मनोहर जोरी ॥
कूबरि सों कछु पाइए मंत्र, लगाइए कान्ह सों प्रीति की डोरी
कूबरि-भक्ति बढाइए बंदि, चढाइए चंदन वंदन रोरी ॥

(१२)

मानुष हौंतौं वही 'रसखानि' बसौं व्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जोपशुहों तौ कहा बस मेरो चरों नित नन्दकी धेनुमंझारन ॥
पाहन हों तौ वही गिरी को जो धरयो कर छत्र पुरन्दर धारन ।
जोखगहौंतौ वसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंबकी डारन ॥

(१३)

गावें गुनी गनिका गंधर्व औ सारद सेस सबै गुन गावन ।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यों ब्रह्मात्रिलोचन पारन पावत ॥
जोगी जती तपसी अरु सिद्धनिरंतर जाहि समाधि लगावत ।
ताहिअहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावत ॥

(१४)

सेस गनेन महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रहैं पचि हारे तऊ पुनिपार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरिछाछपै नाच नचावत॥

(१५)

जाऊँ जहाँ तहाँ त्यागि तुम्हें,
धन धामन काम न वाम सुहावै।
नैन निहारि निहारि थके,
दिन रैनि रटें रसना सुख पावै॥
मोहन तूँ मन मंदिर में,
मुसकाय के माधुरि वेणु बजावै।
सोवत जागत देश विदेशहु,
ख्वाब नहीं तुमको बिसरावै॥

(१६)

हेनाथ अनाथको साथगहो, यदुनाथ के हाथ होमाथ हमारी।
माया के फेरन घेर लियो सुन टेर न देर करो गिरधारी॥
संसार असार से पार करो, इस वार विचार के दास मुरारी।
किशौरका सोर सुनोचित चौर इसओरजरा मुख मौरविहारी॥

(१७)

मानव ही नहीं देवता तक, यह हालत देख लजाते हैं।
है साथ पालकी अश्व वहुत पर भरत पयादे जाते हैं॥

ए दुनियाँ के लोगों देखो धन रहते धन पति निर्धन है।
यह राज पति की छवि है यह,शाही फकीर का दर्शन है॥

(१८)

नाम अजामिल से खल कोटि अपार नदी भव बूडत काढे।
जोसुमिरे गिरि मेरूसिला-कन होत,अजा खुर वारिधिवाढ़े॥
तुलसी जेहिके पद पंकज ते प्रगटो तटिनीजु हरे अघ गाढ़े।
सो प्रभु स्वै सरिता तरिबे कहँ मागत नाव करारे ह्वै ठाढे॥

(१९)

ध्यानरहे बल धाम पिता इस दीनदु:खी अति दुरबलका।
जिननयनों में छविहै तुम्हरि,उनमें नहिं बिन्दु फिरेजलका॥
बढजायन हाय कहीं दिलमें यह दर्द जो है हलका हलका।
यहजीवनजाम लबा लबहै कछुठेस लगेगी और यहझलका॥

समस्या:—ललचावत है (२०)

मोंहि गरीवसे नाहि बनी जद भेट भली जो जथावत है।
असजानके रावरो मीत प्रभो जनु शीत जुयों सकुचावत है॥
सतभाम पिये सत बाम कहौं न दुराव किये बनी आवत है।
तिहुँलोक को वैभव है जहिंपै मोहि सोन गरीब लखावत है॥

पं. विष्णु शर्मा

(२१)

या राका शशि शोभना गत घना सा यामिनी यामिनी।
या सौन्दर्य गुणान्विता पति रता सा कामिनी कामिनी॥

या गोविन्द रस प्रमोद मधुरा सा माधुरी माधुरी ।
या लोकद्वय साधनी तनुभृतां सा चातुरी चातुरी ॥

(२२)

बारा बुद्धन बावडे सोलों कला न होय ।
बीसाँ भुज भजियो नहिं तो गहली बाटन जोय ॥

(२३)

कहा भरो सों देह को विनसि जाय छिन माँहि ।
श्वास श्वास सुमिरन करो और जतन कछु नाहिं ॥

(२४)

कबिरा कहे को डरै सिर पर सिरजन हार ।
हस्ति चढ डरिये नहीं कुकर भुसे हजार ॥

(२५)

तुलसी प्रभुता सब चहै, प्रभु को चहे न कोय ।
जो तुलसी प्रभुको चहै तो प्रभुता आपहि होय ॥

(२६)

राम नाम सब ही कहे, नट नागर और गोड ।
बिना प्रेम रीजत नहीं, नागर नन्द किशोर ॥

(२७)

इतने दिन मुखसे भज्यो अब दिलमें करो निवास ।
तब उम्मेद बुध हो जायगा शुद्ध होयगा स्वास ॥

(२८)

जलन डुबोवे काठको, कहो कहाँ कि प्रीति ।
अपनो सिचयो जानके, यहि बचन की रीति ॥

(२६)

कौन भाँति रहि है विरुद, अब देखि वो मुरारि ।
बीधें मोसों आइके, गीधे गीधहिं तारी ॥

(३०)

राम नाम के जापते होत पाप को नास ।
ज्यूँ चिन गारी आग की जले पुरानी घास ॥

(३१)

राम नाम जप मानवा, कर कर मन में कोड ।
जनम सफल हो जायगा, जो तन मन लागि होड ॥

(३२)

सीता पति की कोठड़ी, चन्दण जड़ी किवांर ।
ताली लागी प्रेम की, खोलो नन्द कुमार ॥

—: फुटकर पद्य के दोहे :—

(१)

कमल कब गये हैं भ्रमरनु बुलाइबे को,
सरवन पखेरु पर बेशनु मंडरात है ।
चन्द्रमा की चिट्ठी कब गई है चकोर नुपे,
घन के गरजि बेते दादुर चिल्लात है ॥
मान सर गयो हो चलि कौन दिन हँसनुपास,
दीपक पतंग ज्योति चाहत अकुलात है ।

ऐसे ही साधु कवि, पंडित महानुभाव,
जहाँ जहाँ भाव देखे तहाँ चले जात हैं ॥

(२)

मरै बैल गरियार मरे व अड़ियल टट्टू ।
मरै करकसा नारि मरै वह खसम निखट्टू ॥
बामन सों मरि जाय हाथ लै मदिरा प्यावै ।
पूत वही मरि जाय जु कुल में दाग लगावै ॥
अरू बेनियाव राजा मरै तबै नीन्द भर सोइये ।
बैताल कहै विक्रम सुनो एते मरे न रोइये ॥

(३)

दया चट्टह्वै गई धरम धँसि गयो धरन में ।
पुराय गयो पाताल पाप भो बरन बरन में ॥
राजा करै न न्याय प्रजा की होत रखुवारी ।
घर घर में बे पीर दुःखित भे सब नर नारी ॥
अब उलटि दान गजपति मगैसील संतोष कितैगयो ।
बैताल कहै विक्रम सुनो यह कल जुग परगट भयो ॥

(४)

दया स्वर्ग उठि गई धरम धँसि गयो धरणि में ।
पुराय गयो पाताल पाप भयो बरण बरण में ॥
प्रीति रीति सब गई बैर भयो घर घर भारी ।
आप आपनी रीति रही सब जग में नर नारी ॥

कवि राज कहत साँचो सबै निपटि पलटि समय गयो।
रे नर निरंध सुनि कान दे अब प्रत्यक्ष कलयुग भयो॥

(५)

कल युग काल कराल की वरणिन जाय अनीति।
वैर बढ्यो चारों वरण आप समय भय भीति॥

(६)

टका करे कुल हूक टका मिरदंग बजावै।
टका चढे सुख पाल टका सिर छत्र धरावै॥
टका माय अरू बाप टका भैयन को भैया।
टका सास अरू ससुर टका सिर लाड लडैया॥
अब एक टके बिनु टक टका रहत लगाये रात दिन।
बैताल कहे विक्रम सुनो धिक जीवन एक टके बिन॥

(७)

पैसे विनु बाप कहे पूत तो कपूत भयो।
पैसे विनु भाई कहे जीको दुःख दाई है॥
पैसे विनु यार कहे मेरो यह यार नहीं।
पैसे विनु ससुर कहे कौन को जमाई है॥
पैसे विनु वन्दे की प्रतीत नहीं पंचन में।
पैसे विनु आई घर तेहि रोटी खाई है॥
कहे अज मसत जेब जै सहो आठों याम।
आजुके जमाने में पैसे की बढाई है॥

(८)

साईं बेटा बाप के बिगरे भयो अकाज ।
हरनाकुस अरू कंस को गयो दुहुन को राज ॥
गयो दुहुन को राज बाप बेटे के बिगरे ।
दुशमन दावागीर भए महि मंडल सिगरे ॥
कह गिरधर कविराय जुगन याही चलि आई ।
पिता पुत्र के बैर नफा कहु कौने पाई ॥

(९)

जार को विचार कहा, गनिका को लाज कहा,
गदहा को पान कहा, आँधरे को आरसी ।
निगुनी को गुन कहा दान कहा दारिद को,
सेवा कहा सूम की अरंडन की डांर सी ॥
मद्पि को सुचि कहां, साँच कहाँ लंपटको,
नीच को वचन कहा, स्यार की पुकार सी ।
टोडर सुकवि ऐसे हठी तीन टारे टरैं,
भावै कहौ सूधी बात भावै कहौ फारसी ॥

(१०)

नाहीं नाहीं करै, थोरो माँगे सब दैन कहै,
मंगते को देखि पट देत बार बार है ।
जिनके मिलत भली प्रापति की घटि होति,
सदा सुभ जनमन भावै निराधार है ॥

भोगी ह्वै रहत विलसत अवनि के मध्य,
कन कन जोरे, दान पाठ परवार है।
सेना पति वचन की रचना निहारि देखौ,
दाता और सूम दोऊ कीन्हें इकसार है ॥

(११)

जाइयो तहा ही जहाँ संगन कुसंग होय,
कायर के संग सुर भागे पर भागे हैं।
फूलन की वासना सुहाग भरे वासन पै,
कामिनि के संग काम जागे पर जागे हैं ॥
घर बसे घर पै वसो घर वैराग कहा,
काम क्रोध लोभ मोह पागे पर पागे हैं।
काजिर कि कोठरी में लाखहुँ सयानो जाय,
काजर की एक रेखा लागी ही पे लागि हैं ॥

(१२)

जगत में नारी धर्म्म महान,
नारी ने प्रल्हाद भक्त सी दी जग को सन्तान।
जगत में नारी धर्म्म महान ॥
अपने तन और मन का नारी रखनी नही है ध्यान।
पति के तन में पति के मन में होती है वलिदान ॥
जगत में नारी धर्म्म महान.
नारी दल जिस देश में होता सच्चरित्र गुणवान।

उसी देश को जगमें मिलता सबसे ऊँचा स्थान ॥
जगत में नारी धर्म्म महान ॥

(१३)

पेटमें पौढ के पौढ मही, जननी संग पौढके बाल कहायो।
पौढन लगे पिया संग में तब नारी युवा कहें पौढ़ गवायों ॥
छीर समुद्र में पौढ़न हार तिन्हेंकरिध्यान कभी नहींलायो।
पौढत पौढत पौढ गयो जबचितामें पौढन को दिन आयो॥

(१४)

मीन मारि जल धोइये खाये अधिक पियास।
बलिहारी वा चित्त की मुयें हुँ मीत की आस ॥

(१५)

दारू देतो माँस दे, दे चार भायों रो सात।
त्रिया दे हँस बोलणो, पोहर दे परवात ॥

(१६)

चकवा चकवी दोय जन, इन मन मारो कोय।
यह मारे करतार के, रेन बिछोवा होय ॥

(१७)

पग पिछाणे पगरखी, चोर पिछाणे चोर।
छिनाल पिछाणे यार ने, मेह पिछाणे मोर ॥

(१८)

देखो करनी कमल की, कीनों जलसो हेत।
प्रान तजो प्रेम न तजो, सुखो सरहि समेत ॥

(१९)

चातक सुतहिं पढावहि, आन नीर मत लेय ।
मम कुल यही स्वभाव है, स्वाति बून्द चीत देय ॥

(२०)

लाली लगन छुटै नहीं, जीभ चोंच जरि जाय ।
मीठो कहा अंगार में, जाहि चकोर चवाय ॥

(२१)

काठ काटिके घर करै, लखौ नेह की बात ।
प्रेम गंध में अंध है, मधुप कंज बँधि जात ॥

(२२)

चिनगी चुगत चकोर यों, भस्म होय यह अंग ।
लावें शिव निज भाल पर, मिलै पिय ससि संग ॥

(२३)

समजण-हार सुजान, वे नर अवसर चूके नहीं ।
अवसर रो औसाण, रहे घणा दिन राजिया ॥

(२४)

कमोदिनी जल हरि वसै, चंदा वसै अकास ।
जो जाहि का भावता, सो ताही के पास ॥

(२५)

खूंदन तो धरती सहै काट कूट वनराय ।
संत सहै दुरजन वचन और न सहान जाय ॥

(२६)

के ठाकुर बालो भलो, के आपई कर लेत ।
वा को मंत्री कहा करे, करेन करवा देत ॥

(२७)

समन पराये खेत में, मूरख करे उजाड़ ।
देखत मन भावे नहीं, किणसूं ठाने राड ॥

(२८)

गेली जोवन वाल धन, हर कोई अंटाय ।
धन्य सती सपूत की, फरूखत ही फिरिजाय ॥

(२६)

सोरठियो दूहो भलो कपड़ो भलो सपेत ।
ठाकरियो दाता भलो, घोडो भलो कुमेत ॥

(३०)

दारूरो प्यालो भलो दुपटा रो झालोहः ।
मारवण तोय तला भला, मारू मत वालोहः ॥

(३१)

वडे न हूजे गुनन बिन, त्रिरद बडाई पाय ।
कहत धतुरे सौ कनकु, गहनो गढयो न जाय ॥

(३२)

वसे बुराई जासु तन, ताही को सनमानु ।
भलौ भलौ कहि छोडिये, खोटे ग्रह जप दानु ॥

(३३)

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सो वीती वहार ।
अव अलि रही गुलाव में, अपत कँटीली डार ॥

(३४)

तरवर कदेन फल भखै, नदीन सँचै नीर।
परमारथ रे कारणे, साँधों धरयो शरीर॥

(३५)

धौला धौला सब भला, धौला भलान केश।
नारी नवेन अरि डरे, करे न मान नरेश॥

(३६)

पान झडन्ता देखने, हँसी जो कुंपलियाँ।
मो बीती तो बीतसी, धीमी रहो रे बापडि याँ॥

(३७)

दिन दस आदर पायके, करले आप बखान।
जोलो काग सराद पख, तो लो तों सन्मान॥

(३८)

तन को जोगी सब करें, मन को करे न कोय।
सब विधि सहजे पाइये, जे मन जोगी होय॥

(३९)

काची काया मन अथिर थिर थिर काम करंत।
ज्यूँ ज्यूँ नर निधडक फिरत त्यूँ त्यूँ काल हसंत॥

(४०)

संध्याकालेच संप्राप्ते, शास्त्रं चतवारि वर्जयेत्।
आहारं मैथुनं निद्रा, स्वाध्यायश्च विशेषत॥

(४१)

गकार स्त्वन्धकारे च, उकारः कथितः स्मये ।
एतद्विनाश कृतुनित्यं, गुरूरित्यभि धीपते ॥

(४२)

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद् सेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं, सख्यमात्म निवेदनम् ॥

(४३)

दृष्ट्वा जन्म शतं पापं, स्पृष्ट्वा जन्म शतद्वयम् ।
स्नात्वा पीत्वा सहस्त्राणि, हन्ति गंगा कलौयुगे ॥

(४४)

सरस्वति के भंडार की, बडी अपूरब बात ।
ज्यों खरचे त्यों त्यों बढै, बिन खरचे घटि जात ॥

(४५)

करत करत अभ्यास से, जडमति होत सुजान ।
रस्सी आवत जात ते, सिल पर पडत निशान ॥

(४६)

स्वर्ण कारने स्वर्ण को, दियो अग्नि में डाल ।
काँप उठयो पानी भयो, देख परीक्षा काल ॥

(४७)

साँची प्रीत जल कमलकी, जल सुखों कुमलाय ।
झूठी प्रीत जल हँस की, जल सुखों उड़जाय ॥

(४८)

पपीहे को प्रण देख कर, धीरज रहेन रंच।
अंत समय जल में पड्यो, तहुँन बोरी चंच॥

(४६)

प्रीत करे तो ऐसी कर जैसे लोटा डोर।
अपनो गलो फसाय के, पानी लावे चोर॥

(५०)

पातर प्रीत पतङ्ग रङ्ग, ताते सुन्दरी तार।
पाछल पोहो आउत धन, जात न लागे बार॥

(५१)

प्रीतम छबि नयनन बसी, पर छवि कहा समाय।
भरि सराय रहीम लखि, आपहि पथिक फिर जाय॥

(५२)

घरमें भूखा पड रहे, दस फाके हो जाय।
तुलसी भैया बन्धुके कबहुं न मांगन जाय॥

(५३)

तुलसी वे नर मर चुके, नित उठ मांगन जाय।
उनसे पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाय॥

(५४)

तुलसी कर पर कर करो, कर तल करन करो।
जा दिन कर तल कर करो, वा दिन मरण करो॥

(५५)

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।

सुनि अठि लैहै लोग सब, बाँटिन लैहै कोय ॥

(५६)

रहिमन देखि बड़ेन को, लघुन दीजिये डार ।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवार ॥

(५७)

जे गरीब पर हित करे, ते रहीम बड़ लोग ।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई योग ॥

(५८)

सम्पति सम्पति जानिके, सब को सब कोई देय ।
दीन बन्धु बिन दीन की, को रहीम सुधिलेय ॥

(५९)

बिगरी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय ।
रहीमन बिगरे दूधको, मथे न माखन होय ॥

(६०)

बडो पेट को भरन को, है रहीम दुःख बाढि ।
याते हाथिहि हहरि कै, दिये दाँत द्वै काढि ॥

(६१)

कहा हेमन्त सितल भयो, हरे रुंख जर जाय ।
ताते ग्रीलम ही भलो, जरे हरे हो जाय ॥

(६२)

गिरिये परवत सिखरते, गिरिजे धरती मझार ।
दुष्ट संग न कीजिये, बूडे काली धार ॥

(६३)

ज्यूँ कदली के पात में, पात पात में पात ।
त्यों चतुरन की बातमें, बात बात में बात ॥

(६४)

सर्प डसे सु नहीं कछु तालक, बिच्छु लगै सुभलौ करिमानौ
सिंहसु खाय तु नाहि कछुडर, जो गज मारत तो नही हानौ ॥
आगि जरों जलबूडि मरो, गिरि जाय गिरो कछु चैमत आनौ।
सुन्दर और भले सबही यह दुर्जन संग भलौ जिन जानौ ॥

(६५)

खड खेजड भूरट घणा, उंडों नीर अथाउँ ।
ढोलो पूछें मारवण, इतो रूप कठाउँ ॥

(६६)

जो कछु विधाता तेरे लिख्यो ललाट पाट,
ताही पर आपनो आप अमल करले ।
सोने को सुमेरू भावे, देख वार पार मांझ,
घटै वढै नाहिं यह निश्चय जिय धारले ॥
देवीदास कहे जोइ होनहार सोई हुवे हैं,
मन में विचार रैन दिन अनुसार ले ।
वापी कूप सरिता भरे हैं सात सागर पे,
तूतो तेरे वासन समान पानी भर ले ॥

ता० २६ सितम्बर सन् १९४५ — हिन्दू सन्देश सप्ताहिक

सिनेमा संसारः—

आलोचनात्मक लेख

शकुन्तला

लेखक महाराजा उम्मेसिंहजी रावटी

समय के परिवर्तन के साथ २ शिक्षा और प्रचार के साधनों में भी परिवर्तन होते रहते हैं। कई स्वतन्त्र देशों में फिल्म को सामाजिक एवं राष्ट्रिय उन्नति का बड़ा साधन बना रखा है। किन्तु परतन्त्र भारत की दशा कुछ और ही है। फिल्म निर्माताओं ने जनता को दूषित चित्र देकर पैसा बटोरने में ही अपना ध्यान रक्खा है जिस से हमारे होनहार युवकों तथा भोली भाली बहिनों पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है यह नित्य प्रति की घटने वाली घटनाओं से प्रकट होता रहता है। मेरा लिखने का अभिप्राय यह नहीं कि सिनामा सम्पूर्ण रूप से दूषित है। पर अधिक मात्रा ऐसी ही है। कुछ अच्छे चित्र भी बने हैं जैसे भरत मिलाप, नरसी भगत आदि।

शकुन्तला को ही लीजिये। कण्व ऋषि का आश्रम, पूर्ण संस्कृति का सदन; ब्रह्मचारी तपस्वियों से परि पूर्ण उस आश्रम में भारत सम्राट दुष्यन्त का आना, सखियों का निर्लज्जता पूर्वक राजा से सम्भाषण, सखियाँ एक दो नहीं तरुणियों की एक पूरी फौज, इस गन्दे वातावरण का हमारी भोली भाली जनता पर कितना बुरा प्रभाव पड़ सकता है इसे प्रत्येक विचार शील व्यक्ति भली प्रकार समझ सकता है। पर पुरुष को घूर २ कर देखना ही हमारी हिन्दू संस्कृति के विरुद्ध है।

मै जनता से कर बद्ध अपील करूंगा यदि वह ऐसे गन्दे चित्रों पर पैसा बरबाद करना छोड़ दें तो देश में शीघ्र ही एक चमत्कार हो सकता है। मैं यह उपदेश के नाते से नहीं कह रहा हूं अपितु एक सेवक की हैसियत से, यदि किसी को इस में कड़वा लगे तो मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

कुछ दिन पूर्व मैने पत्रों में पढ़ा था कि प्रयाग की एक कन्या पाठशाला में "ढोल, गंवार शूद्र, पशु, नारी ये सब ताडन के अधिकारी" चौपाई पढे जाने पर रामायण के प्रति युवतियों ने पूर्ण रूप से विद्रोह किया था। मैं तुलसी कृत राम चरित्त मानस पढ़ता हूं, इस लिये नहीं अपितु निर्पक्ष और शुद्ध भावना से कहता हूं कि स्त्रियों के लिये रामायण से बढ़ कर सम्भवतः ही कोई अन्य ग्रन्थ उपलब्ध हो सके। 'शकुन्तला' स्त्री जाति के लिये आलोचना का विषय हो सकता है। यह ठीक है कि आज सिनामा में चमक है, आकर्षण है और बहुत से लोगों का इस पर झुकाव भी है किन्तु ध्यान रहे कुछ वर्ष पश्चात् गन्दे फिल्म निर्माताओं की दूषित मनोवृत्ति वैसे ही गिरेगी जैसे हिटलर की ताना साही का सत्यानाश हुआ है।

छत्रसिंह के असामयिक मृत्यु पर की गई शोक सभा एवं उसकी यादगार में बनाये हुए कुछ फुटकर पदः—

-(शोक समावेदना)-

जोधपुर

तारीख १३-५-५०

तारीख १३ मई १९५० शनिवार को सरप्रताप हाई स्कूल में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की सामूहिक ईशविनय के बाद स्कूल

के सुविद्यार्थी श्री छत्रसिंह के तारीख ४-५-१९५० ई. को असामयिक स्वर्गवास के सम्बन्ध में शोक सभा हुई जिस में स्कूल के हैड मास्टर महोदय के द्वारा शोक-समावेदना प्रस्ताव रक्खा गया, प्रस्ताव सर्व सम्पति से स्वीकृत हुआ और दो मिनट "शान्ति" रक्खी गई।

श्री मुख्याध्यापक महोदय ने स्वर्गीय श्री छत्रसिंह की सुपात्रता का वर्णन करते हुए कहा "हमारे श्री छत्रसिंह थोड़े ही समय में अपने अच्छे स्वभाव, विद्या-प्रेम और मिलनसारी से अपनी ही नहीं वरन् दूसरी कक्षाओं के विद्यार्थियों से परिचित होगये; राज घराने के उचित गुण उनमें इस छोटी अवस्था में ही पूर्ण प्रकठ थे। स्वभाव की रलता, सहपाठियों के साथ सहज स्नेह, गुरूजनों एवम् अपने बड़ों के लिये उचित आदर, स्कूल अनुशान (Discipline) तथा स्कूल की प्रतिष्ठा का ध्यान उनके लिये स्वभाविक था। वार्षिक परीक्षा प्रारम्भ होने के कुछ दिन पहिले उनके बीमारी का सर्टीफिकेट मुझे मिला; वे परीक्षा में सम्मिलित न हो सके, परीक्षाएं अभी समाप्त होने ही न पाई थीं कि हमारे स्कूल के विद्यार्थी श्री मदनसिंह के द्वारा मुझे उनके स्वर्गवास होने की अकस्मात् सूचना मिली और साथ ही साथ में एक गीता की पुस्तक उनकी स्मृति में दान करने के लिए स्कूल से मंगावाई गई। सन्त तथा ऋषिमत के अनुसार थोड़ी परन्तु पवित्र जीवन बीता कर लोकान्तर को गई हुई श्री छत्रसिंह की जीवात्मा अपने पुण्य-प्रभाव से अवश्य सुख एवं शान्ति ही में होगी। परन्तु उनके माता पिता एवम् स्नेही, सम्बन्धी, सहपाठी, एवम् शिक्षकों के हृदय उनके शरीर से सदा के लिये वियोग के कारण अवश्य संतप्त हैं। स्वर्गीय जीवात्मा ने शरीर धारण किया और उस पञ्चभौतिक शरीर को

१५ पन्द्रह वर्ष के थोड़े ही समय के बाद त्याग दिया। इसी बीच के समय को हमारे संग में बिताने के कारण हमारे हृदय में उनके प्रति मोह व्यापना उनकी, स्नेहमयी बातों को याद करके शोक करना उनके अभाव के कारण मोह वश दुःखी होना हमारे लिये स्वभाविक है। इस समय हमारा यह कर्त्तव्य है और हम स्वर्गीय आत्मा के कल्याण के लिये परम पिता परमेश्वर समर्थधनी से विनम्र विनय करते हैं, "हे दया निधे! हमारे प्रिह श्री छत्रसिंह की आत्मा को शान्ति एवं सुख प्रदान करें और उन के माता पिता एवम् स्नेही सम्बन्धियों को इस दुस्सह्य दुःख को सहन करने की सामर्थ तथा उनके संतप्त हृदय को शान्ति प्रदान करें"।

पूज्य महाराज श्री उम्मेदसिंहजी महोदय की ओर से स्वर्गयि श्री छत्रसिंह की पुण्य-स्मृति में रु० ५१) और एक फाउन्टेन पेन स्कूल के (Student Fund) के लिये दिये गये और धन्यवाद सहित स्वीकार किये गये।

नवयुग प्रेस जोधपुर.

हिन्दु सन्देशः— जोधपुर सोमवार १९ जून १९५०

—: शोक सभा :—

जोधपुर—स्थानीय श्री प्रताप हाई स्कूल के छात्र और महाराज उम्मेद सिंहजी के रावटी के पन्द्रह वर्षीय पुत्र श्री छत्रसिंह के असमय में ही काल कवलित हो जाने के कारण मुख्याध्यापक महोदय की अध्यक्षता में शोक सभा की गई।

महाराज साहिब ने स्वर्गीय विद्यार्थी की पुण्य स्मृति में ५१) और एक फाउन्टेन पेन स्टूडेन्ट फन्ड के लिए दिए।

"श्रीश शरणम्"

(वियोगिनी वृत्तम्)

महता मनिशं त्वया धृता,
शिरसाऽऽज्ञा कठिनाऽपि वत्स ! हा।
गुणिना पितृ वल्लभेन नौ,
विलपन्तौ पितरौ किमीक्षितौ ॥ १ ॥

जननीं रुदतीं विमुच्य हा !
रुदतीं वंश जनाँश्च यद् गतः।
तद् हो ! सहसा विरक्त वाँ,
स्त्वमगा श्छत्र हरे ! हरेः पदम् ॥ २ ॥

पं. वहुरा विष्णु शर्मा सहित्या चार्य
सं. २००७ ज्येष्ट कृष्णा ३

॥ श्री ॥

* सोरठा *

मुलकतो मेलाः हलका मिलता हरस में।
सुख देवण सेलाहः छत्र विराजे छत्ररियां ॥

राव चावडदान
गांव वैराई (मारवाड़)

॥ श्री ॥

वैरी वखान करे प्रेमी जन गुण गावे,
यश जाको भूमि पर सर्वदा को छायो है।
मीठी मीठी वात कर प्रेम दर्शाने हारो,
सत्यवादि लाल जैसो धीरपन दिखायो है ॥
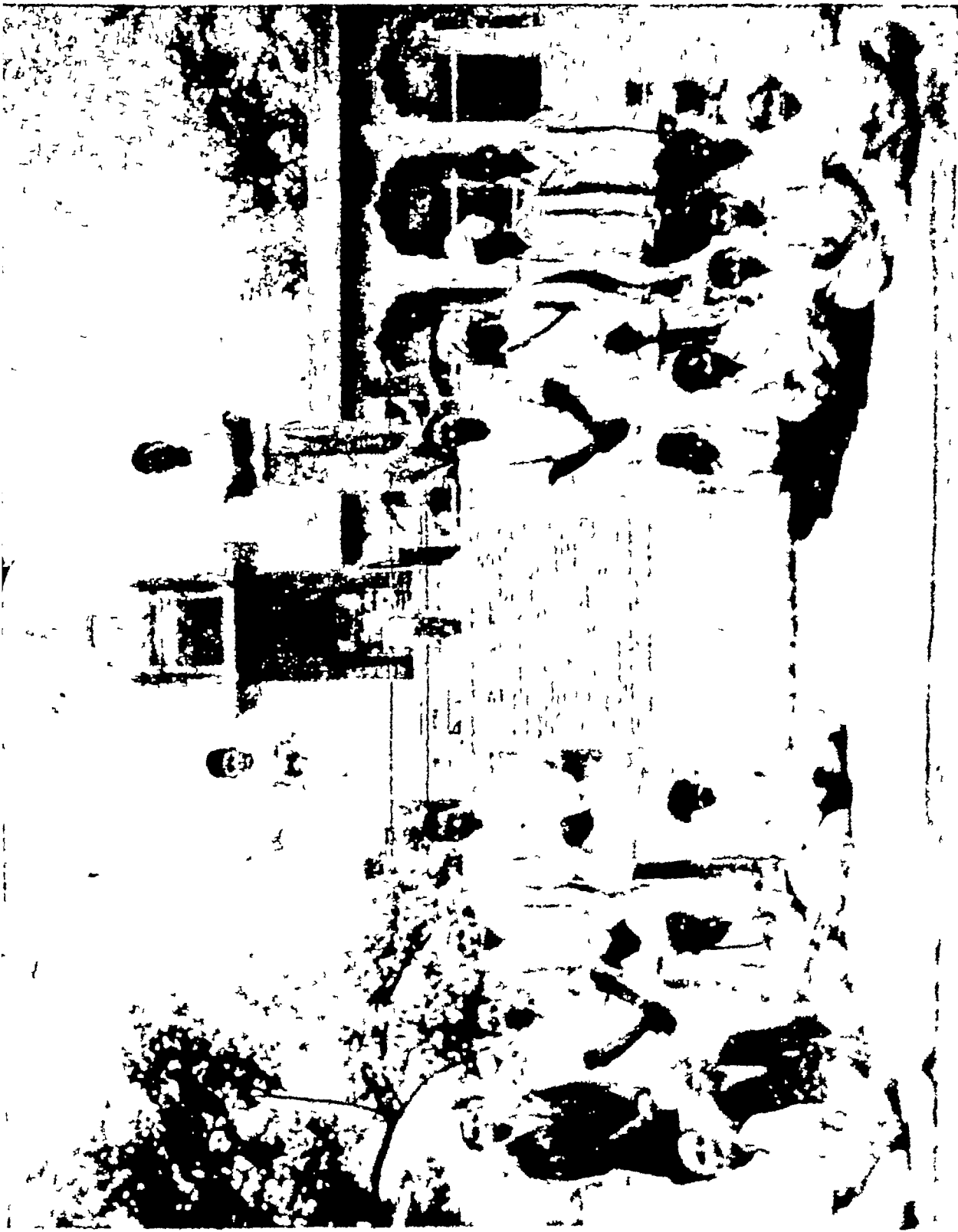
स्वर्गीय राजकुमार श्री छत्रसिंहजी की समाधी पर पुष्पांजली का दृश्य

बापहुँ को आचरण और तेज क्षत्रिनको,
आज्ञा पितु पालन में मनको लगायो है ।
देव कुँवर कोख की बलैया लीजे बार बार,
जाके बीच धीर वीर छत्र रत्न चायो है ॥

शिवचन्द्र बहुरा "साहित्य रतन"
ब्रह्मपुरी जोधपुर

छत्र शोकोक्ति

सुहावनी सुरत सुशील स्वच्छचित्त,
यही थे प्रत्यक्ष चिन्ह होन हार लाल के ।
छात्र काल ही में छत्रसिंह छिन छोह में,
छेह देके आप दिव गयो वस काल के ॥
व्याकरण की बाँतें जो वतायी मैंने वक्कासे
पीछी वो सुनाही मोको बुद्धि में मिसालके ।
आया है जहाँन में वो जायेगा जरूरही पे,
रोना है जो जाये विन, आये स्वेत बाल के ॥१॥

डंडी उमेद उम्मेद की. देव कुँवर दुःख दीन ।
लेग्यो काल लपेट कर, छत्र सिंह को छीन ॥ २ ॥

सिवदानमल थानवी
फुल्ला रोट जोधपुर

॥ श्री ॥

"छत्र शोकोक्ति"

काल है कराल अरु विकराल जब रूप धरै,
ग्रासे जग जीवन विचार उर आने हैं।
बाल वृद्ध युवा अरू गरीबन की कहा कहै,
बड़े बड़े चक्रवर्ति राव खेंच ताने हैं॥
आने अरू जाने की गति विधि जाने नहीं,
कार्य के कुफल को शोक सब माने हैं।
छत्र से कुँवर को इस काल ने ग्रास लियो,
शोक महा शोक उर धीर किम आने हैं॥

छत्र भङ्ग तूँ कर गयो, चतुर छत्र छिवि छोड़।
छिपी मार मत मारजे, छत्र कुँवर चित्त चौर॥

कवि बद्रीनाथ शर्मा
चांदपोल जोधपुर

॥ श्री ॥

* कवित्त *

विलपे उमेद ऐसे रात द्योस छत्रसिंह,
पूत हो सपूत आज कहां तूँ सिधारेगो।
चिरंजीवी रहो ऐसे आशीष अनेक वार,
दीनी गुरू, मातु हाय यह भी सँहारगो॥

कहो किहि हेतु तुम जन्मे जब वेन वदे,
'आयोहूं' आज हाय वेन वे विसरगो।
कहे 'कवि-बाल' कलि काल की कुचाल भाल,
एक ना अनेक--काल स्वयंभू भी हारगो॥१॥

'कवि किंकर' बालाराम साधु
चांदपोल जोधपुर

भक्ति के पद

(१)

बहाते थे हमेशा प्रेम में, आपके आँसू।
उनहि नयनों से झरते हैं, ये पश्चाताप के आँसू॥
पलमें प्रलय हो जायगी जो टपकि और बून्दें यह।
जहां पर आप रहते हैं, वहाँ संताप के आंसू॥

(२)

श्याम श्याम रटत राधे, अपुहि श्याम भई।
पूछति फिरि आपनी सखियन सों, प्यारी कहाँ गई॥
वृन्दावन वीथिन जमुना तट श्री राधे राधे कही।
चतुर सखि यह दशा देखिके, रही सकल मौन साधे॥
गरूई प्रीति कहा न करावै, क्यो न हो गति ऐसी।
कह भगवान हित राम राम, प्रभु लगन लगे तो ऐसी॥

(४)

तव मुख चन्द्र चकोर मेरे नैना ।
अति आरत अनुरागि लंपट, भूलिगई गति पलहु लगैना ॥
अब रात मिलिवे को निसिदिन,
मिलेरहत मानो कबहुँ मिलैना ।
भगवत रसिक रसिक की बाँतें,
विना रसिक कोउ समुझि सकैना ॥
कोउक जात प्रयाग बनारस,
कोउ गया जगन्नाथहिं धावै ।
कोउ मथुरा बदरि हरि द्वार सुं,
कोउ गंगा कुरुक्षेत्र नहावै ॥
कोउक पुष्कर हुवे पंच तीरथ,
दौरहि दौरहिं जु द्वारिका आवै ।
सुन्दर वित्त गड्यो घर माँहिसु,
बाहिर ढूढत क्यु करि पावै ॥

(५)

वैठे देखि कुशासन, जटा मुगट कृस गात ।
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जल जात ॥

छन्दः— (६)

राजिव लोचन स्रवत जल तनु,
ललित पुलका वली वनी ।

अति प्रेम हृदय लगाई अनुजहि,
मिलता प्रभु त्रिभुवन छिवी ॥
प्रभु मिलतअनुजहि सोह मो पहें,
जात नहिं उपमा कही ।
जनु प्रेम अरू श्रृंङ्गार तनु धरि,
मिलत वर सुखमा लही ॥
पूछत कृपानिधि भरत कुशलहिं,
वचन वेगिन आवई ।
सुन शिवा सो सुख वचन मनते,
भिन्न जान न पावई ॥
अब कुशल कौशल नाथ आरत, जानि जन दर्शन दियो ।
बूढत विरह वारिधि कृपानिधि, काढि मोहि करगहि लियो ॥

* दोहा एवं चौपाई *

(७)

जो चेतन कहँ जडकरै, जडहि करै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनायक हि. भजहि जीव ते धन्य ॥

(८)

कहेउ ज्ञान सिद्धान्त वुभाई,
सुनहु मणि भक्ति भवि की प्रभुताई ।
राम भक्ति चिन्तामणि सुन्दर
वसे गरूड जाके उर अन्तर ॥

परम प्रकाश रूप दिन राति,
नहिं कछु चहिय दिया घृत वाती।
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा,
लोभ पाप नहिं ताहि बुझावा॥
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई,
हारहि सकल शलभ समुदाही।

(६)

खल कामादि निकट नहिं जाही,
बसै भक्ति मणि जेहि उर माही।
गरल सुधा सम अरि हित होई,
तेहि मणि बिन सुख पावन कोई॥
व्यापहि मानस रोगन भारी,
जिनके वश सब जीव दुखारी।
राम भक्ति मणि उर बस जाके,
दुख लव लेश न सपनेहु जाके।
चतुर शिरोमणि तेइ जग माही,
जे मणि लागी सो यतन कराही॥

समाप्तम्